मानवता व्यवहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

अनुसंधान का विषय -महत्मा गाँधी जी और मानवता

शोधार्थी का नाम : सुनीता प्रयाकर राव वासुनि

पंजीयन संख्या : HR/369/74

दिनांक : 25/09/2023

शोधार्थी का पता : करीमनगर, तेलंगाना , पिन - 505001.

मार्गदर्शक : डॉ. अभिषेक कुमार जी

दिव्य प्रेरक कहानियाँ

*** मानवता अनुसंधान केन्द्र ***

DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESERCH CENTRE

An ISO 21001-2018 Certified Reserch 33 Institution

Regd - Under Indian TrustAct 1882 Government India

पंजीकृत कार्यालय : ठेकमा, जिला आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत).

शोधार्थी घोषणा पत्र :

मैं सुनीता प्रयाकर राव (शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र) घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध (महत्मा गाँधीजी और मानवता) जो व्यवहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबन्ध को मैंने डॉ. अभिषेक कुमार जी के मार्गदर्शन में पूरा किया है। मैं यह घोषणा करता हूँ कि शोध कार्य पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ किया गया है तथा इससे पहले किसी डिग्री डिप्लोमा के लिए उपयोग नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि मैंने अपना अनुसंधान कार्य 'दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र' के तत्वाधान में सभी नियम व निर्देशानुसार पूर्ण किया है।

दिनांक : 25/04/2025

शोधार्थी हस्ताक्षर

सुनीता प्रयाकर राव.

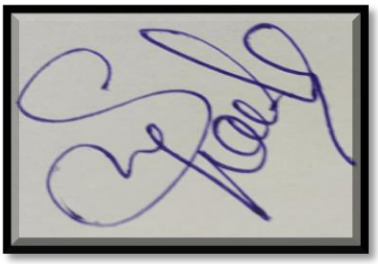

मार्गदर्शक घोषणा पत्र :

प्रमाणित किया जाता है कि 'दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र के अंतर्गत 'महत्मा गाँधी जी और मानवता विषय पर शोधार्थी सुनीता प्रयाकर राव द्वारा किया गया प्रस्तुत अनुसंधान मूल व अप्रकाशित भाग है। इनके द्वारा मेरे मार्गदर्शन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोध प्रबन्ध चोरी रहित बहुत ही उत्कृष्ठ है तथा शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह अनुसंधान कार्य समाज को सही दिशा दिखाने एवं चलने के लिए प्रेरित करेगा तथा मानसिक और बौद्धिक विकास कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा। इस तरह का अनुसंधान कार्य, अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची निष्ठा एवं मानवता के प्रति समर्पण और प्रेम को दर्शाता है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्यदिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र के तत्वाधान में नियम व निर्देशानुसार पूर्ण किया है।

दिनांक : 25/04/2025

मार्गदर्शक के हस्ताक्षर डॉ. अभिषेक कुमार

महत्मा गाँधी जी और मानवता

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र

शोध प्रबन्ध शोधार्थी- सुनीता प्रयाकर राव वासुनि

पंजीयन संख्या

HR/369/74, 25/09/2023

प्रेरक :

डॉ. नानकदास जी महाराज एवं डॉ. अभिषेक कुमार जी

दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केंद्र

विशेष :

जब भी मानवता, करुणा और अहिंसा की बात होती है तब सबसे पहले महात्मा गांँधीजी का नाम स्मरण होता है। वे न केवल भारत की स्वतंत्रता के महानायक थेबल्कि पूरी दुनिया के लिए मानवता के प्रतीक बन गए। उनका जीवन सत्य प्रेम और अहिंसा की मिसाल रहा। गांँधी जी मानते थे कि हर मनुष्य में ईश्वर का अंश होता हैऔर इसलिए हर किसी के साथ प्रेम और सम्मान से व्यवहार करना ही सच्ची मानवता है। आज के संघर्षपूर्ण समय में गांँधी जी की विचारधारा एक दीपक की तरह है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है।

उन्होंने अपने विचारों और कर्मों से यह साबित किया कि जहाँ चाहवहाँ राह होती है। गांँधी जी ने सत्य और अहिंसा को अपना अस्त्र बनाकर न केवल अंग्रेज़ों से लोहा लिया बल्कि पूरी दुनिया को यह पाठ पढ़ाया कि अकेला चना भी भाड़ फोड़ सकता है। उनका जीवन सादगी और सेवा का प्रतीक था, जिसमें न खाओ, न घपला करो जैसे मूल्यों की झलक मिलती थी। उन्होंने जात-पात, भेदभाव और हिंसा जैसे सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया। सच कहें तो वे मानवता के ऐसे पुजारी थेजिन्होंने धरती पर स्वर्ग लाने का सपना देखा और उसे अपने जीवन से साकार करने की कोशिश की।

Sunitha

आभार :

मैं अपने पाठकगणों का आभार व्यक्त करने से पहले अपने शोध विषय "महत्मा गाँधी और मानवता" में किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि इंसान गलतियों का पुतला है और मैं उन्हीं इंसानों में से एक हूंँ । ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस विषय पर लिखने का अवसर मिला है।

इसमें किसी भी त्रुटि के लिए मैं स्वयं जिम्मेदारी हूंँ । जो पाठकगण इसे जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे, मैं उन सभी पाठकगणों का सहृदय आभार प्रकट करता हूंँ ।इस शोध में आंशिक सहयोग गूगल द्वारा भी लिया गया है जैसे कि कुछ महापुरुषों के विचार एवं तर्क।

धन्यवाद l

भवदीया

सुनीता प्रयाकर राव

Sunitha

विषय सूची :

मानवता का अर्थ

मानवता का सार

करुणा की शक्ति

प्रेम का असली अर्थ

सहिष्णुता

सेवा का सच्चा अर्थ

समानता

सहानुभूति

महत्मा गाँधी जी

प्रांरभिक जीवन

कायरता मांँसहारी

कुली बैरिस्टर

जनसेवा की ओर

गांँधीजी का पहला कदम

एक वकील के रूप में महत्मा गाँधी जी

महिलाओं पर गाँधी जी

पुस्तक

गाँधी -दस्तूरी

बैरिस्टर गाँधीजी

साबरमती जेल में गाँधीजी

अहिंसा के बीज

Sunitha

स्वच्छता

ब्रम्हचर्य

भाषा अध्ययन

राजभक्ति

सत्याग्रह

भारत में बापू

चरखा

दंडी सत्याग्रह

अन्य स्वतत्रंता सेनानी -गाँधीजी

नमक -सत्याग्रह

वल्ला भाई पटेल के साथ

गाँधीजी, अम्बेडकर और अन्य नेता

मुझे आपकी मदद की जरुरत है

वल्ला भाई पटेल पर गाँधीजी का प्रभाव

भारत छोड़ो

पोट्टी श्रीरामुलु पर गाँधीजी का प्रभाव

सत्यग्रह या सत्यव्रत

जवाहर लाल नेहरू पर गाँधी जी का प्रभाव

गाँधीजी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

गाँधीजी विचारों की आलोचना एवं आधुनिक युग में चुनौतियांँ

गाँधीय चिंतन में मानव विकास

मानव विकास - वर्णाश्रम व्यवस्था

Sunitha

हरिजनोद्धार

स्त्री सुधार

पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्रो की आलोचना

व्यावहारिक आदर्श वादी लोकतंत्र

राज्य विहीन समाज

विकेंद्रित ग्राम स्वराज

अहिंसक लोकतत्रं

अधिकारों की अवधारण

बुनियादी शिक्षा

मानव का आर्थिक विकास

शारीरिक श्रम का विकास

स्वदेशी

यंत्रीकरण और विकेंद्रित अर्थ व्यवस्था

खादी व चरखा

सर्वोदय

निष्कर्ष

भाषा - शैली

स्वयं का दृष्टीकोण

गाँधीजी के प्रति मेरी भावनाएंँ

गाँधीजी से मेरी प्रेरणा

शोध -सार

सन्दर्भ सूची

Sunitha

मानवता का अर्थ :

मानवता का शाब्दिक अर्थ है – मनुष्यता या इंसानियत, अर्थात् वह भावना जो मनुष्य को दूसरों के प्रति प्रेम, सहानुभूति, करुणा और सहयोग करने के लिए प्रेरित करती है। मानवता वह गुण है जो इंसान को अन्य प्राणियों से अलग बनाता है– जैसे दूसरों की मदद करना, दुख में साथ देना, बिना भेदभाव के सभी से अच्छा व्यवहार करना।

जब कोई व्यक्ति जाति, धर्म, भाषा या वर्ग का भेद किए बिना दूसरों के लिए अच्छा सोचता है और उनकी भलाई के लिए कार्य करता है तो उसे सच्चा मानव या इंसान कहा जाता है। मानवता का मतलब केवल खुद अच्छा बनना नहीं बल्कि दूसरों की भलाई के लिए भी काम करना है।

सरल शब्दों में, मानवता वही है जो हमें बताती है कि

"दूसरों के लिए वैसा ही करो, जैसा तुम अपने लिए चाहते हो।"

परोपकार ही,

मानव को उज्वल बनाता है

मानवता ही,

मानव को महान बनाता

भूखे को रोटी देना

जीवन उज्वल करता

रोते हुए आँसू पोछना

आदर्श मानव बनाता

मानवता (Humanity) का अर्थ है मानव जाति के प्रति प्रेम, करुणा और सहानुभूति। यह वह गुण है जो मनुष्य को दूसरों की सहायता करने, उनके दुःख-दर्द को समझने और एक-दूसरे के प्रति दयालु बनने के लिए प्रेरित करता है।

मानवता का सार:

1. करुणा - दूसरों के कष्ट को समझना और उसे दूर करने का प्रयास करना।

2. सहिष्णुता - सभी को समान दृष्टि से देखना और उनके प्रति आदर रखना।

3. निःस्वार्थ सेवा - बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की सहायता करना।

4. प्रेम

5. समानता - जाति, धर्म, भाषा, रंग आदि से ऊपर उठकर सभी को एक समान मानना।

6.सहानुभूति - दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों को समझने की क्षमता।

मानवता सिर्फ एक गुण नहीं है, बल्कि यह वह आधार है जो समाज को एकजुट और शांतिपूर्ण बनाता है। जब हम एक-दूसरे की भलाई के लिए काम करते हैंतो वही सच्ची मानवता है।

करुणा का दीपक:

करुणा का दीप जलाओ, अंधियारे हर लो संसार का,
जहाँ दर्द की सिसकी गूंजे, बनो सहारा लाचार का।
जहाँ आँसू हैं बेबस होकर, वहीं प्यार का रस भर दो,
जहाँ दिल टूटे और बिखरे, वहाँ स्नेह से उन्हें जोड़ दो।
करुणा है जीवन का आभूषण, इसे मत कभी तिरस्कृत करो,
दूसरों के दुःख को समझो, अपनी आत्मा को प्रकाशित करो।
न हो भेदभाव, न हो द्वेष, हर मन में प्रेम बहाओ,
करुणा से ही सजेगा जग, इसे अपना धर्म बनाओ।
जो हाथ किसी को थामे, वही सच्चा इंसान है,
करुणा ही तो वह गहना है, जो जीवन की पहचान है।
चलो करें प्रण करुणा का, बनें दया के दूत,
जहाँ दर्द हो, वहीं पहुँचें, बनें स्नेह का सच्चा रूप।

1.करुणा की शक्ति

एक उदाहरण :

एक बार एक छोटे से गाँव में रमेश नाम का एक किसान रहता था। वह मेहनती था,लेकिन स्वभाव से गुस्सैल और स्वार्थी। वह हमेशा सोचता था कि दूसरों की मदद करने में समय और संसाधन क्यों बर्बाद किए जाएँ।

एक ठंडी सर्दियों की रात, रमेश अपने खेत से लौट रहा था। रास्ते में उसने एक कुत्ते को ठंड से कांपते देखा। पहले तो उसने अनदेखा किया, लेकिन कुत्ते की दयनीय स्थिति देखकर कुछ देर ठिठक गया।

कुत्ता भूखा और कमजोर था। रमेश ने पहले तो सोचा कि वह अपना समय क्यों बर्बाद करे, लेकिन उसके अंदर कहीं करुणा का भाव जागा। उसने अपनी चादर का एक हिस्सा कुत्ते को ओढ़ाया और उसे अपने घर ले गया।

रमेश ने कुत्ते को खाना खिलाया और उसकी देखभाल की। धीरे-धीरे कुत्ता ठीक हो गया और रमेश से जुड़ गया। कुत्ते की वफादारी और प्रेम ने रमेश के दिल को बदल दिया। वह समझ गया कि दूसरों की मदद करने से ही सच्चा सुख मिलता है।

सीख :

रमेश ने अपनी कहानी से गाँव को सिखाया कि करुणा एक ऐसा बीज है जो प्रेम,सुख, और शांति का पेड़ बनकर फलता-फूलता है।

निष्कर्ष :

करुणा केवल दूसरों के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए भी सुकून लाती है। रमेश ने महसूस किया कि करुणा का सबसे बड़ा पुरस्कार संतोष और खुशी है।

2.प्रेम का असली अर्थ :

एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव में आरव नाम का एक युवक रहता था। आरव अपने जीवन में प्रेम की तलाश में था। उसे लगता था कि प्रेम का मतलब केवल किसी विशेष व्यक्ति से जुड़ाव है, लेकिन उसने कभी इसका गहराई से अनुभव नहीं किया था।

अनोखी भेंट :

एक दिन, आरव एक पहाड़ी के पास घूमते हुए एक साधु से मिला। साधु ने उसकी बेचैनी को देखकर पूछा, "क्या तुम जानना चाहते हो कि प्रेम क्या है"

आरव ने उत्सुकता से हाँ कहा। साधु ने मुस्कुराते हुए कहा "तुम्हें इसका उत्तर जीवन से मिलेगा। बस प्रेम को महसूस करो, खोजने की कोशिश मत करो।"

जीवन में प्रेम का अनुभव :

एक दिन आरव ने एक भूखे कुत्ते को देखा। वह उसके पास गया,उसे सहलाया और खाने के लिए रोटी दी। कुत्ते की पूँछ हिलाने और आँखों में चमक देखकर आरव को एक अनोखी खुशी महसूस हुई। उसने महसूस किया कि दूसरों के लिए दया ही प्रेम का एक रूप है।

निष्कर्ष:

प्रेम केवल एक व्यक्ति से जुड़ाव नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति सहानुभूति, निःस्वार्थ सेवा और सच्चे मन से किए गए कर्मों में निहित होता है। प्रेम हर जगह है,बस इसे देखने और समझने की दृष्टि चाहिए।

Sunitha

3.सहिष्णुता :

एक समय की बात है, एक गाँव में रामू और श्यामू नाम के दो किसान रहते थे। दोनों पड़ोसी थे और उनके खेत भी एक-दूसरे के पास थे। हालाँकि वे बचपन के दोस्त थे,लेकिन अक्सर छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते रहते थे।

सहिष्णुता का उदाहरण :

कुछ दिनों बाद, एक बूढ़ा कारीगर गाँव में आया। उसने रामू और श्यामू से कहा कि वह उनके खेत के बीच एक दीवार बना सकता है, ताकि पानी का बहाव रोका जा सके और विवाद खत्म हो जाए।

दोनों सहमत हो गए। रामू ने सोचा, "अब यह दीवार मुझे श्यामू से अलग रखेगी।"

श्यामू ने भी ऐसा ही सोचा।

लेकिन कारीगर ने दीवार बनाने के बजाय एक पुल बना दिया, जो दोनों खेतों को जोड़ता था। यह देखकर रामू और श्यामू गुस्से में कारीगर के पास गए।

कारीगर ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह पुल सहिष्णुता का प्रतीक है। दीवारें केवल दूरी बढ़ाती हैं, लेकिन पुल संबंध जोड़ते हैं।"

सहिष्णुता का महत्व :

रामू और श्यामू को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने समझा कि झगड़ा केवल अहंकार और असहिष्णुता का परिणाम था। उन्होंने एक-दूसरे से माफी मांगी और फिर से दोस्त बन गए।

निष्कर्ष :

सहिष्णुता का मतलब है, दूसरों की गलतियों को समझना, उन्हें स्वीकार करना और शांति से समाधान निकालना। सहिष्णुता न केवल संबंधों को बचाती है,बल्कि समाज में मेलजोल और भाईचारे को भी बढ़ावा देती है।

Sunitha

4.सेवा का सच्चा अर्थ :

एक छोटे से गाँव में मीरा नाम की एक महिला रहती थी। वह बहुत ही सरल और दयालु थी लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। वह दिन-रात मेहनत करती थी,लेकिन उसके पास ज्यादा पैसा नहीं था। हालांकि, उसके दिल में हमेशा दूसरों की मदद करने का जज्बा था।

सेवा की शुरुआत :

एक दिन गाँव में एक बड़े व्यापारी का घर जलकर राख हो गया। व्यापारी और उसका परिवार बहुत दुखी था। जब मीरा ने यह सुना, तो उसे बड़ा दुख हुआ, लेकिन उसके पास देने के लिए कोई धन नहीं था। फिर भी उसने निर्णय लिया कि वह किसी न किसी तरीके से मदद करेगी।

वह तुरंत व्यापारी के घर पहुँची और उसकी पत्नी से कहा, "आप परेशान न हों, मैं आपको खाने के लिए कुछ रोटियाँ और दाल बना कर दूँगी।" व्यापारी की पत्नी थोड़ी चौंकी,लेकिन उसने मीरा की मदद को स्वीकार किया।

मीरा ने हर रोज़ व्यापारी के परिवार के लिए खाना भेजा। उसने न केवल भोजन दिया, बल्कि कुछ समय उनके साथ भी बिताया और उनकी समस्याओं को सुना। उसकी सेवा से व्यापारी की पत्नी को बहुत सांत्वना मिली और वह मानसिक रूप से मजबूत हो पाई।

मीरा की निःस्वार्थ सेवा का प्रभाव केवल व्यापारी के परिवार पर नहीं,बल्कि पूरे गाँव पर पड़ा। अन्य लोग भी मीरा की तरह अपनी क्षमतानुसार मदद करने लगे। गाँव में एकजुटता और भाईचारे का माहौल बना।

कुछ समय बाद व्यापारी ने मीरा से कहा, "तुम्हारी मदद से ही हमारा परिवार फिर से खड़ा हो पाया है। तुम्हारी सेवा ने हमें समझाया कि धन केवल भौतिक रूप से नहीं,बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी दिया जा सकता है।"

मीरा मुस्कुराते हुए बोली, "मैंने आपको मदद दी, लेकिन असली सेवा तो यही है कि हम अपने दिल से बिना किसी अपेक्षा के दूसरों के लिए कुछ अच्छा करें।"

निष्कर्ष :

सेवा का असली मतलब है निःस्वार्थ भाव से किसी की मदद करना,चाहे ?

5.समानता :

समानता का अर्थ है हम सभी एक जैसे,
रंग, जाति या धर्म से न कोई भेद हो वैसे।
सबकी आवाज़ हो एक जैसी, सभी को मिले समान अधिकार,
हम सभी की एक जैसी होनी चाहिए पहचान, हर दिल में हो प्यार।
ना छोटा, ना बड़ा, ना कोई ऊँचा, ना कोई नीचा,
समानता है सबके बीच, चाहे वो हो राजा या रंक।
हर इंसान का जीवन हो सुकून से भरा,
समानता की ताकत से बचे न कोई ग़म या डर।
समानता में ही शक्ति है, यही है सच्चा रूप,
जब सब मिलकर चलते हैं, तब होती है दुनिया का एक रूप।
आओ हम सब मिलकर यह संकल्प लें,
समानता का दीप जलाएँ, और प्रेम का संदेश दें।

समानता का उदाहरण :

बहुत समय पहले, एक छोटे से गाँव में एक राजा रहता था। राजा का नाम रघु था, जो बहुत न्यायप्रिय और बुद्धिमान था। गाँव में सभी लोग उसे आदर और सम्मान देते थे, लेकिन राजा के दिल में एक सवाल था—क्या उसकी प्रजा में समानता है? क्या सभी लोग एक ही तरह से जीते हैं, चाहे उनकी जाति, रंग, या स्थिति कुछ भी हो?

राजा रघु ने यह जानने के लिए एक दिन गाँव में एक योजना बनाई। उसने घोषणा की, "मैं कल गाँव के केंद्र में एक सभा आयोजित करूंगा। सभी लोग, चाहे वह अमीर हो या गरीब, ब्राह्मण हो या शूद्र, हर किसी को भाग लेना होगा।"

गाँव के लोग हैरान हो गए, लेकिन उन्हें राजा के आदेश का पालन करना पड़ा। अगले दिन, सुबह-सुबह सभी लोग राजा के दरबार में जमा हो गए।

राजा रघु ने एक कठिन परीक्षा का आयोजन किया। उसने गाँव के सभी लोगों से एक सवाल पूछा, "समानता का असली मतलब क्या है?" सभी लोग चुप थे, कोई उत्तर नहीं दे पाया। तब राजा ने सभी को एक निर्देश दिया।

"तुम्हें अब एक-दूसरे के जूते बदलने होंगे," राजा ने कहा। "देखो, तुम जो पहनते हो, वही तुमसे अलग नहीं है। जाओ, और एक-दूसरे के जूते पहनकर वापस आओ।"

लोग कुछ उलझन में थे, लेकिन उन्होंने राजा की आज्ञा मानी और एक-दूसरे के जूते बदलकर वापस आए। कुछ लोग अमीरों के जूते पहनकर खुश हुए, जबकि गरीबों के जूते पहनने वाले थोड़ा असहज हो गए। यह प्रक्रिया सभी के लिए एक चुनौती बन गई।

समानता की समझ :

जब सभी लोग वापस आए, तो राजा ने कहा, "देखो, तुम्हें महसूस हुआ कि जूते बदलने से तुम्हें असहजता हुई? यही तो समानता है। जब हम एक-दूसरे के स्थान पर खुद को नहीं देख पाते, तब हम समझते हैं कि समानता का क्या मतलब है। समानता सिर्फ बाहरी नहीं, बल्कि दिल से महसूस की जाती है।"

सभी लोग अब समझ गए कि समानता का मतलब सिर्फ समान अधिकारों में नहीं, बल्कि हर किसी को बिना किसी भेदभाव के सम्मान देने में है। राजा ने अपनी सभा समाप्त की और सभी को यह शिक्षा दी कि हमें हर व्यक्ति को सम्मान और समान अधिकार देना चाहिए, चाहे वह किसी भी स्थिति में हो।

निष्कर्ष :

इस घटना के बाद, गाँव में समानता का वास्तविक अर्थ सभी ने समझा। राजा रघु ने यह दिखाया कि समानता केवल बाहरी चीजों में नहीं, बल्कि दिल से महसूस की जाती है और सभी को एक समान सम्मान दिया जाता है।

Sunitha

6.सहानुभूति :

एक छोटे से गाँव में सुमन नाम की एक लड़की रहती थी। सुमन का दिल बहुत बड़ा थाऔर वह हमेशा दूसरों की मदद करने की कोशिश करती थी। उसका मानना था कि दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है किसी के दुःख को समझना और उसकी मदद करना।

एक दुखद घटना :

एक दिन गाँव में एक वृद्ध महिला आई जो बहुत कमजोर और थकी हुई थी। उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं था, और वह रास्ते में खो गई थी। सुमन ने देखा कि वृद्ध महिला जमीन पर बैठी थी और बहुत परेशान लग रही थी। उसका दिल भर आया।

सुमन तुरंत पास गई और महिला से पूछा, "आंटी, आप ठीक तो हैं?" महिला ने सिर झुका कर कहा, "बिलकुल नहीं, मुझे रास्ता नहीं मिल रहा है और बहुत भूख भी लग रही है।"

सुमन ने बिना किसी हिचकिचाहट के महिला को अपने घर बुलाया। उसने महिला को गर्म भोजन और पानी दिया। फिर उसने उसकी मदद की और उसे सही रास्ता बताया।

सहानुभूति का अहसास:

महिला ने सुमन से कहा, "तुमने मुझे न केवल खाना दिया, बल्कि मुझसे बात करके मुझे आराम भी दिया। मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकती कि तुमने मुझसे कितनी सहानुभूति दिखाई।"

सुमन ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो मुझे करना चाहिए था, क्योंकि हर किसी को समझने की जरूरत होती है। जब हम किसी के दुख को महसूस करते हैंतो हम उसकी मदद करने की शक्ति पा लेते हैं।"

कहानी का असर:

सुमन की सहानुभूति ने गाँव के दूसरे लोगों को भी प्रेरित किया। वे भी दूसरों के दुखों को समझने लगे और मदद करने के लिए आगे आने लगे। गाँव में एक नई भावना का जन्म हुआ जहाँ हर व्यक्ति दूसरे की समस्याओं को महसूस कर सकता था और उसकी मदद कर सकता था।

Sunitha

निष्कर्ष :

सहानुभूति सिर्फ शब्दों में नहीं, बल्कि कार्यों में होती है। जब हम किसी के दुःख दर्द या परेशानी को महसूस करते हैं और उस पर प्रतिक्रिया करते हैंतो हम सच्ची सहानुभूति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सुमन ने यह सिखाया कि सहानुभूति का सबसे बड़ा रूप है किसी के दुख को समझना और उसकी मदद के लिए आगे बढ़ना।

महात्मा गाँधी :

सच्चाई का शस्त्र लेकर अहिंसा का अस्त्र लेकर

भारत देश को बचाया अंग्रेजों को दूर भगाया

दुश्मन से प्यार किया मानव पर उपकार किया

तुमने हम सबको मार्ग दिखाया,

सत्य अंहिसा का पाठ पढ़ाया।

महात्मा का जन्म और परिवार :

जन्म :

महात्मा गांँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांँधी था। उनकी मां का नाम पुतलीबाई और पिता का नाम करमचंद गांधी था।

परिवार :

पिता : करमचंद गांँधी पोरबंदर के दीवान (प्रधान मंत्री) थे। वे सरल,कर्तव्यपरायण और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे।

मांँ : पुतलीबाई गहरी धार्मिक स्वभाव की थीं। वे वैष्णव भक्ति और जैन धर्म के सिद्धांतों का पालन करती थीं। उनका स्वभाव गांधीजी पर गहरा प्रभाव डालता था।

पत्नी:

महात्मा गांँधी का विवाह 1883 में कस्तूरबा गांँधी से हुआ, जब वे केवल 13 वर्ष के थे। कस्तूरबा एक समर्पित और दृढ़ महिला थीं, जिन्होंने गांधीजी के हर संघर्ष में साथ दिया।

संतान : गांँधीजी और कस्तूरबा के चार पुत्र थे:

1. हरिलाल गांँधी
2. मणिलाल गांँधी
3. रामदास गांँधी
4. देवदास गांँधी

प्रारंभिक जीवन :

महात्मा गांँधी का बचपन एक साधारण वातावरण में बीता। वे शांत और विनम्र स्वभाव के थे। मां की धार्मिक शिक्षा और जीवन मूल्यों ने उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला।

महात्मा गांँधी :

राष्ट्रपिता कहलाए गांधी,
सादा जीवन, विचार महान।
सत्य-अहिंसा के पथ पर चलकर
किया स्वतंत्र भारत का निर्माण।
चश्मा, लाठी, खादी का वस्त्र,
सच्चाई थी जिनकी शक्ति।
अंग्रेजों से लड़ी बिना शस्त्र,
उनकी थी अलग ही भक्ति।
दांडी यात्रा, सत्याग्रह ले,
जग में बढ़ाया भारत का मान।
त्याग, तपस्या, सेवा से,
बन गए वो बापू महान।

Smritha

उनका जीवन सिखाता हमको,

न्याय, प्रेम और मेल रखना।

गांँधी जैसे वीर पुरुष का,

हमको सदा आदर रखना।

रोपण करते समय नीम के डंठल...

जैसा कि कहा जाता है, "हम व्यापार करेंगे, कृपया हमें व्यापार करने की अनुमति दें।" अंग्रेज़ों के आने और हमारे देश में जगह बनाने के बाद वे एकजुट हुए और हमारे देश पर शासन करने का स्तर हासिल किया। अंग्रेजों ने अपनी धूर्तता और षडयंत्रों से सदियों तक भारत को आर्थिक रूप से लूटा। वे यहां की संपत्ति अपने देश ले गये। राजनीतिक रूप सेउन्होंने इसे उपनिवेश बना लिया और इसका शोषण करना शुरू कर दिया। उन्होंने सांस्कृतिक रूप से भारतीयों के विकास में बाधा डाली। अनेक प्रकार से लूटने के बाद भी वे संतुष्ट नहीं हुए और अनेक प्रकार से हमारे मूल निवासियों का अपमान किया। जिन लोगों के देश पर वे शासन कर रहे थे, उन्हें उन्होंने अपने ही देश में दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया। अंग्रेज कुलीनों ने भारतीयों पर अनगिनत अत्याचार किये।

अंग्रेजों के शोषण और द्वेष से भारतीयों का धैर्य टूट गया।

इसे सहन नहीं कर सका।उनके हृदय उबलते ज्वालामुखी की तरह जल रहे हैं। सीटी बजाना। भारत माता दास्य की मुक्ति के लिए आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। उन्होंने एंग्लो-अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ तब तक लड़ने के लिए कमर कस ली जब तक भारत एक स्वतंत्र भारत नहीं बन गया। भारत का स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ। अनेकों के बलिदान.. दूसरों के साहसिक कार्य.. लंबे समय तक संघर्ष.. जेल की सजा,गोलीबारी, बेंत की सजा.. लेकिन आजादी का फल भारतीयों के हाथों तक नहीं पहुंँचा और उस लड़ाई का निर्णय किसने किया? उस आंदोलन का नेतृत्व किसने किया? वह कौन शैतान है जिसने उस क्रांति को हमेशा ख़त्म होने से बचाया है? जो न केवल भारत के राष्ट्रपिता हैं बल्कि संपूर्ण विश्व द्वारा महात्मा कहलाए जाने वाले व्यक्ति हैं? मोहनदास करमचंद गांँधी और कौन हैं?

ये हैं महात्मा गांँधी,

ये हैं बापूजी, आइए जानते हैं उस गांँधी के बारे में...

जो हमारे देश को आजादी दिलाने वाले पहले बलिदानी है.....

राष्ट्रपिता...

बच्चे के लिए गांँधी के दादा

बापूजी..महात्मा...

वह एक स्वतंत्रता सेनानी हैं

जिन्होंने कई उपाधियों के लिए संघर्ष किया।

उनकी लड़ाई अविश्वसनीय थी. क्योंकि जिन हथियारों से उसने युद्ध किया,वे तलवार या खंजर नहीं थे। बंदूकें, क्लस्टर बम और तीर. सत्याग्रह ही उनका एकमात्र हथियार है और रक्तपात उनके लिए पर्याप्त नहीं है। अहिंसा उनका हथियार है गांँधी सत्य व्रत में लड़ने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति थे। बापूजी ही थे जिन्होंने अहिंसा से सबका दिल जीत लिया और दुनिया को दिखाया कि अहिंसा परमाणु हथियारों से भी ज्यादा ताकतवर है। वह न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श हैं। उनका जन्म एक बहुत ही साधारण परिवार में हुआ और वे हमारी तरह ही बड़े हुए। आइए देखें कि बड़े होकर विश्व प्रसिद्ध कैसे बने।

कायरता मांँसाहारी :

युवा गांँधी के लिए अंधेरा और सांँप

चोर शैतान सभी से डरते हैं1 बिच्छू डरावने हैं, यदि दीपक न होते तो डर से नींद नहीं आती। लेकिन वह शर्मीला है और अपने डर से छुटकारा पाना चाहता है। "मैं सांँपों की पूंँछ पकड़कर उनके साथ खेलता हूंँ । मैं चोरों को भगाता हूंँ । मैं राक्षसों को भगाता हूंँ। मैं पीता हूंँ और इसका कारण वह मांँस है जो मैं खाता हूंँ, मुझे जो शक्ति और साहस मिलता है। इसके अलावा, "ब्रिटिशों के राज्य पर शासन करने का कारण उनकी शारीरिक ताकत है। वे मांँस खाते हैं नर्मदाकवि जी ने लिखा हैं कि गाँधी जी अविश्वसनीय रूप से असुरक्षित है1

यदि वह मांँस खाये और अपने समान बलशाली हो जाये।यदि देश में सभी लोग मांँस खायें और बलवान बन जाये तो वह आसानी से अंग्रेजों पर विजय प्राप्त कर सकता है। सोचा लेकिन उनकी पारिवारिक परंपरा में मांँस खाना निषेध है। हालाँकि वह एक धर्मपरायण व्यक्ति था, वह जानता था कि मांँस खाने से उसके माता-पिता को दुख होगा,लेकिन अंग्रेजों पर विजय पाने की ताकत के लिए मांँस खाने वाला परन्तु उसके पेट से वह रात भेड़ के समान निकलती है। अयिंदतानी की अहिंसात्मक विशेषता के कारण।

मांँस भक्षण गुप्त रूप से करना चाहिए। इसे खाने के बाद आपको भूख नहीं लगेगी। इसलिए, जब आप रात के खाने के लिए घर आएंँ तो आपको भूखा नहीं रहना चाहिए। क्यों? पूछा तो कुछ न कुछ झूठ बोला होगा. और तो और दुर्जनु की मित्रता में मांस भक्षण भी चल रहा है। वह मनुष्य के पतन को भली प्रकार समझते थे। क्या वह पैदा होने पर भी महान और महान नहीं हुआ? बचपन में वह अधिकांश बच्चों की तरह स्वाभाविक शरारतें करते थे।

कुली बैरिस्टर:

गांँधीजी के बैरिस्टर बनने के बाद पोरबंदर से एक दुकानदार ने गांँधीजी को लिखा "दक्षिण अफ्रीका में हमारा व्यवसाय और एक बड़ी दुकान है। यदि आप मुझे वहांँ की अदालत में दावा दायर करने के लिए भेजेंगे तो यह उनके लिए भी उपयोगी होगा। हम उनकी यात्रा और वहांँ रहने का खर्च उठाएंँगे। वह एक नया देश देखेंगे और नए अनुभव प्राप्त करेंगे।"

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका छोड़ दिया। उन्होंने यह सुनकर कप्तान से शतरंज खेलना सीखा कि यह जहाज़ में बुद्धि को तेज़ करने वाला खेल है।

डरबन में, उन्होंने अब्दुल्लासेठ गांँधी को अपने दोस्तों और वकीलों से मिलवाया और उन्हें अदालत में ले गए। मजिस्ट्रेट ने गांँधीजी को अपनी पगड़ी उतारने के लिए कहा क्योंकि वहां केवल मुस्लिम रीति-रिवाज वाले लोगों को ही पगड़ी पहनने की अनुमति थी। तियानु कहते हुए गांँधीजी बाहर आ गए। उन्हें पता चला कि भारतीय विभिन्न प्रकार से विभाजित थे। यह स्थापित हो चुका है कि मजदूर भारतीय है। गांँधीजी कोकुली बैरिस्टर नाम मिला।

मुकदमे के कारण गांँधीजी को प्रिटोरिया जाना पड़ा। ट्रेन रात नौ बजे मैरिट्ज़बर्ग पहुंची. सोने के लिए गद्दा है. ट्रेन के डिब्बे में चढ़े यात्री ने गांधी को देखा और उसे उतारकर अधिकारियों को ले आया.. "अरे आपको पीछे के डिब्बे में बैठना चाहिए। यहांँ नहीं। उन्होंने कहा। "मेरे पास प्रथम श्रेणी का टिकट है गांँधीजी ने उनसे कहा कि अगर वह नहीं

जाएंॅगे तो वे पुलिस बुलायेंगे और उनका पीछा करेंगे और सामान मंच पर फेंक दिया। रेलकर्मी इसकी रखवाली करते हैं. गांधीजी तीसरी श्रेणी के डिब्बे में नहीं गिरे। वह वेटिंग रूम में बैठ गया, बहुत ठंड है l डिब्बे में एक ओवरकोट है लेकिन मुझे इस पर विश्वास है किस शर्म का सामना करना पड़ेगा l शरीर के रंग से जुड़े इस कलंक से बचने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। मामले की जानकारी देते हुए अब्दुला जी ने रेलवे के महाप्रबंधक को टेलीग्राम भेजा l मैरिट्ज़बर्ग में हिंदू देश तक इस देश में यह कोई नई बात नहीं है। चिंता न करें, पहली और दूसरी श्रेणी में यात्रा करने वाले भारतीयों को रेलवे कर्मचारियों और गोरे लोगों के हाथों समान कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने अपनी समस्याएँ बतायी l

अगले दिन घोड़ागाड़ी अधिकारी ने उसका और भी अपमान किया। जब गांधी ने जोहान्सबर्ग के ग्रैंड नेशनल होटल में एक कमरा मांॅगा, तो प्रबंधक ने नज़रें झुका लीं और झूठ बोल दिया कि कोई कमरा उपलब्ध नहीं है। दरअसल, उन होटलों में भारतीयों को एंट्री नहीं मिल पाती है l अब्दुल गनीसेथ ने कहा, "हम आपके देश में रहने में सक्षम नहीं हैं और पैसे के लिए अपमानित हो रहे हैं। अगर आप यहाँ कुछ साल रहे हैं तो आपको पता होगा। यह देश आप जैसे लोगों के लिए उपयुक्त नहीं है। वे यहांॅ हिंदुओं को एक या दो श्रेणी के टिकट भी नहीं देते हैं।"

यदि आपको सह-यात्री के साथ बैठने में कोई आपत्ति नहीं है तो क्या होगा? जाते-जाते गार्ड ने कहा, नीग्रो ने सिफ़ारिश की

महान कार्य करने के बाद, उन्होंने उन्हें देखा l

ऐसा करने के बाद यह आवश्यक समझा गया कि गांॅधीजी को हॉटाल भोजनशाला में स्वीकार किया जाए और यह सब देखने के बाद सभी भारतीयों को एक साथ इकट्ठा किया जाए और उन्हें उनकी स्थिति से अवगत कराया l

"कुली बैरिस्टर" से "महात्मा" बनने की यात्रा की शुरुआत :

ट्रेन से महात्मा तक.....

सन् अठारह सौ तिरानवे की बात,

दक्षिण अफ़्रीका की एक रात।

एक बैरिस्टर, सूट-बूट में सजा,

गांँधी नाम था, लक्ष्य न्याय का पथ था।

ट्रेन में प्रथम श्रेणी का टिकट हाथ,

पर रंगभेद की दिखी करामात।

"काला है, हटाओ इसे यहाँ से,"

स्टेशन पर फेंका गया, बिन दया के।

ठंडी ज़मीन, मन में आग,

न्याय का दिल में लगा था राग।

अपमान ने उसे जगा दिया,

सत्य और अहिंसा का दीप जला दिया।

"अब चुप न रहूँगा," उसने ठाना,

अन्याय के विरुद्ध चल पड़ा दीवाना।

कुली कहे जाने वाला वही गाँधी,

बन गया भारत का आत्मा का संधी।

जनसेवा की ओर गांँधीजी का पहला कदम :

उन्होंने जो पहला व्याख्यान दिया वह यह था कि पारसियों,मराठियों, ईसाइयों और गुजराथियों की कठिनाइयों के बारे में याचिका भेजने वाला कोई नहीं है। उन्होंने भारतीयों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का अध्ययन किया और उनमें अपनी प्रतिभा प्रकट की। इसने भविष्य में बेहतर सार्वजनिक सेवा बनाने की नींव के रूप में कार्य किया।

रभातीयों को कुछ सड़कों पर नहीं चलना चाहिए. सड़कों पर चलने के भी नियम हैं. प्रिटोरिया में जीवन गांधीजी के लिए एक प्रमुख मोड़ था। भले ही अब्दुल्ला सेठवारी का मामला खत्म हो गया हो.. "भारतीय मताधिकार" के नाम पर भारतीयों को विधान सभा में सदस्य चुनने के अधिकार के बिना सेबिल के बारे में चल रही चर्चा को जानते हुए भीयह भारतीयों की भावना है।

उन्होंने महसूस किया कि, उनके अनादर के बावजूद, यदि यह विधेयक कानून बन गया तो यह उनकी कठिनाइयों को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगा। सेठ ने कहा कि अगले दो महीने में मैं जनता का सेवक बन जाऊंँगा। इसमें कोई पैसा शामिल नहीं है।

मैं नहीं जानता कि मैं कहांँ हूंँ । इसलिए कानून की पुस्तकों की स्थापना के आंदोलन को सभी की मदद और सहयोग की आवश्यकता है। राजनेताओं को यही उत्तर की अपेक्षा करनी चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अपने सुखद भविष्य की नींव रखी। गांँधीजी नेटाल इंडियन कांग्रेस के सचिव थे, जिसका गठन 22 मई 1894 को नेटाल में शक्ति विकसित करने के लिए किया गया था। 'दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के समक्ष एक निवेदन शीर्षक से एक पुस्तिका तैयार की गई, जिसमें नेतर में भारतीयों के सामने आने वाली परिस्थितियों के बारे में बताया गया तथा भारतीयों के लिए वोट के अधिकार पर एक अन्य पुस्तिका तैयार की गई तथा उसे काफी प्रचार मिला। इससे भविष्य की गतिविधियों के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ क्योंकि गांँधीजी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और इंग्लैंड और भारत में कई दलों के साथ मित्र बन गये। भले ही श्वेत मालिक एक गिरमिटिया मजदूर हो (गिरमिटिया मजदूर गुलाम के समान ही होता है), उसे मालिक की संपत्ति माना जाता है। उन गिरमिटिया मजदूरों का एक संरक्षक (फोटोक्टर) होता है। आप या तो उसे इस बंधन से बाहर निकलने के लिए कह सकते हैं या कर्मचारी को किसी अन्य नियोक्ता के पास स्थानांतरित कर सकते हैं।

पहली कदम :

चंपारण की धरती पुकार उठी,
अन्याय की जंजीरें भारी थीं।
सत्य और अहिंसा की मशाल लेकर,
गांँधीजी वहाँ पहली बार उतरे।
न था सिंहासन, न था कोई बल,
थी बस आत्मा की निर्मल हलचल।
किसानों की पीड़ा, दुख की बात,
बना उनके जीवन का पहला साथ।
न तलवार उठी, न क्रोध उभरा,
केवल प्रेम से हर मन जुड़ा।
सत्याग्रह बना शक्ति का नाम,
बिना हिंसा के जीता काम।
यह पहला कदम था बहुत महान,
जगा गया वह पूरे हिंदुस्तान।
सेवा, करुणा, और सच्चाई से,
गांँधी चल पड़े नव राहों पे।

एक वकील के रूप में महात्मा गांँधी :

जब बालासुंदर नामक एक तमिल व्यक्ति को उसके नियोक्ता द्वारा पीट-पीटकर मार डालने के बाद खून से लथपथ, फटी हुई शर्ट और रोते हुए पाया गया, तो गांँधीजी ने डॉक्टर से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया और मजिस्ट्रेट के समक्ष एक हलफनामा दायर किया। गांँधीजी का

लक्ष्य स्वामी को दंडित करना नहीं था, बल्कि उसे उसके चंगुल से मुक्त कराना था। उन्होंने गिरमिटिया मजदूरों से संबंधित कानून का गहन अध्ययन किया। मालिक ने अपना स्वामित्व किसी और को हस्तांतरित करने पर सहमति व्यक्त की। बालासुंदर मामले से गांँधी का 'भाई-भतीजावादी रिश्ता' है इसे कहा गया, (नेताओं में पांँच साल तक काम करने का समझौता)।

गिरमिटिया मजदूरों को गिर्निटिया कहा जाता है।) जब सरकार ने प्रति व्यक्ति25 सालों का कर लगाया तो निर्विन गांँधी ने कांँग्रेस की बैठक में यह मुद्दा उठाया। सर्वसम्मत निर्णय के बाद हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया और कर के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन हुआ। जब तक सरकार की बन्दूकें नहीं चलतीं, कर कम नहीं होते थे। गांँधीजी पूरी तरह से जनसेवा में डूबे हुए थे।

युद्ध की समाप्ति के बाद, दक्षिण अफ्रीका में शांति स्थापना के नाम पर एक विशेष कानून पारित किया गया, जिसमें बिना अनुमति के ट्रांँसवाल में प्रवेश करने वालों को गिरफ्तार करने की अनुमति दी गई। उन्हें जेल में डाला जा सकता है क्योंकि वे दक्षिण अफ्रीका में बस गए हैं और क्योंकि वे उस देश के लोग हैं वे वहांँ के अधिकारियों के खिलाफ काम कर रहे हैं। यह बहुत शर्मनाक है कि एशिया से आकर उनसे हाथ मिलाने वाले तानाशाह हिंदू हैं। किसने डाला सर, आपको दक्षिण अफ्रीका में गलती से परमिट जारी कर दिया गया है। आपको निवासी नहीं माना जाता है। अपने चैंबर में नहीं जा पा रहे हैं. वापस जाओ गांँधी जी झुक गए और उन्हें बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं दी।

सामने की वकालत उसने कुत्ते जैसा व्यवहार किये जाने को एक असहनीय चीज़ के रूप में लिया, उसका अपमान बेहिसाब था। हालाँकि, वकालत के लिए उनका आवेदन स्वीकार कर लिया गया था। एक अच्छा घर मिल गया,उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एक वकील के रूप में की थी।

वकील बना जो सत्य का साथी :

काले कोट में शांत विचार,

न्याय की खातिर था उनका व्यवहार।

लंदन में सीखा क़ानून का पथ,

पर मन में बसता था सच्चाई का रथ।

दक्षिण अफ्रीका की वह भूमि बनी,

जहाँ अन्याय की आग जली।

पर गांँधी ने ना क्रोध जलाया,

सत्य और अहिंसा से मार्ग बनाया।

वकील थे पर मुकदमा अलग था,

लड़ाई इंसानियत की नग थी।

रंगभेद के विरुद्ध उठाई आवाज़,

बना हर पीड़ित का उन्हें नाज़।

कानून की किताबें हाथ में थीं,

पर आत्मा की गूंज बात में थीं।

न्याय को देखा केवल शब्दों में नहीं,

उसके व्यवहार में बसी उनकी प्यास वहीं।

वकील थे, पर नहीं सिर्फ पेशे के लिए,

सेवा, त्याग, और सच्चाई के लिए।

हर केस था एक जन चेतना का दीप,

गांँधी बने युगों तक अमिट प्रतीक।

Sunitha

महिलाओं पर गांँधी :

पुराण और इतिहास पढ़ने वाले गांँधी के मन में स्वाभाविक रूप से महिलाओं के प्रति सम्मान था। "पुरुष में बहुत से दोष और बुराइयाँ हैं। उसने नारी जाति के साथ जो अन्याय किया है, वह बहुत ही बुरा और शर्मनाक है इसलिए नारी बहुत कमजोर है। यदि उसमें त्याग, विनम्रता, बुद्धि, देखभाल, धैर्य आदि सभी गुण हों तो भी वह कुछ नहीं कहती। यदि शक्ति नैतिक शक्ति है, तो नारी कमजोर नहीं है। यदि पशु ताकतवर है तो वह कम है। उसमें नैतिक शक्ति अपार है। यदि स्त्री और पुरुष दोनों को समान अवसर मिलेंतो वे आपसी सहयोग से आगे बढ़ सकते हैं।"

देश की आजादी के लिए गांँधी जी के संघर्ष के आह्वान पर - शक्ति ने हरम से पर्दा हटा दिया और बाहर आकर स्वतंत्र हो गयी।

उन्होंने यज्ञ में अपना भाग अर्पित किया। कई अन्य देशों के विपरीत हमारे देश में महिलाओं को आजादी के साथ-साथ वोट देने का भी अधिकार मिला। गांँधी जी ने महिलाओं को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। सरोजिनी देवी सुचेताकृपलानी और राजकुमारी अमृता कौर जैसी महिलाओं ने विदेशों में प्रसिद्धि हासिल की है। कुछ महिलाओं ने गांधीजी के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए ब्रह्मचर्य अपनाया। उन्होंने अपनी पत्नी कस्तूरीबा को एक आदर्श महिला बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। वे उसे एक स्वतंत्र वातावरण प्रदान करने की पूरी कोशिश करेंगे।

"नारी: सत्य और स्वराज की प्रेरणा"

नारी है विचारों की अविरल धारा,

संघर्षों में भी रही वह निडर और प्यारा।

जहाँ गांधी ने दिखाया अहिंसा का पथ,

वहाँ नारी बनी उसकी आत्मा की रथ।

कस्तूरबा ने जब सत्य का व्रत निभाया,

नारी ने भी हर पीड़ा में दीप जलाया।

चरखा चला, धैर्य की बात की,

हर आंदोलन में अपनी बात की।

गाँधी ने कहा — "नारी अबला नहीं, शक्ति है",

उसकी चुप्पी भी एक क्रांति की भक्ति है।

वो प्रेम में दृढ़, न्याय में तेज है,

उसकी उपस्थिति से ही देश विशेष है।

वो केवल सहनशीलता की मिसाल नहीं

बल्कि परिवर्तन की पहली चाल भी वहीं।

आज भी नारी बापू के विचारों को जीती है

हर युग में वो नए स्वराज की बीज बोती है।

किताबें - गांँधी

गांँधीजी के लिए यह सत्य है कि एक अच्छी किताब एक अच्छा इंसान बनाती है। श्रवण की देशभक्ति की लीला, परायणु की देशभक्ति और हरिश्चंद्र की सत्यव्रत की लीला, दिव्य भक्त के रूप में रामायण पाठ और देशभक्ति के रूप में रामदकविपत को देखने के बाद। उन्होंने कई किताबें पढ़ीं, गाँधीजी का सबसे महान क्षण ईश्वरीय पुस्तकों के गुणों को व्यवहार में लाना था। पोषण संबंधी सहायता रोमनला ने कई किताबें पढ़ीं जैसे कि हाउ आई बिकम एडियासोफिस्ट, इक्विट, द किंगडम ऑफ गॉड रस्किन की किताब'अनटू लास्ट' और 'एनालॉजी'। वे अक्सर वद्गीता का पाठ किया करते थे।

पुस्तक:

ज्ञान बाँटने वाली पुस्तकें मानव जगत की अच्छी मित्र हैं।

वह प्रकाश जो बुराइयों को मिटाता है

और ज्ञान की ज्वाला को जलाता है।

आशा की किरणें जो बिछड़े लोगों के

जीवन में खुशियाँ लाते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में भारत माता बेड़ियों को तोड़ने वाले जन चैतन्य साधक।

जो खतरे में हैं उन्हें दिलासा दिया जाता है प्रोत्साहित के रूप सफलताओं को थामे जाते हैं।

संस्कृति, पारंपरिक नैतिक मूल्य, जगमगाती मशालें।

यदि आप बिना पंखों के किताबें पढ़ते हैं

वही सोचने की शक्ति, रचनात्मकता कौशल बढ़ती हैं।

विनम्रता से भरे ज्ञान से भरी,

आने वाली पीढ़ी के युवाओं को दी गई अक्षर निधि।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के वीर कर्मों के साक्ष्यनवीन अनुसंधान प्रयोगों के साथ निविज्ञान और प्रौद्योगिकी का मेल ।

पूरा ब्रह्मांड हमारी आँखों से नहीं देखा जाता है

दर्पण जो आपके हाथ की हथेली में देखने के लिए उपयोगी होते हैं। विज्ञान का विकास करने वाले ये मित्र,

पूरे भारतीय महाद्वीप के अमृत पात्र हैं।

गांँधी-दस्तूरी :

चाहे उसने कितनी भी कोशिश की हो, वह गोल पत्र नहीं लिख सका, और दक्षिण अफ्रीका में लोगों और वकीलों को मोतियों की तरह पत्र लिखते देखकर उसे शर्म आती थी। अच्छा लेखन शिक्षा का हिस्सा है. टेढ़े-मेढ़े अक्षर अधूरी शिक्षा की निशानी होते हैं। अक्षरों को सही करने से पहले उन्हें फूल और बटेर जैसी चीजें बनाना सिखाना बेहतर है। गुरुओं ने कहा "नीधर्मिकाभाषा संस्कृत"। उनका मानना है कि मातृभाषा के साथ-साथ हिंदीसंस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं को भी पढ़ाया जाना चाहिए।

बैरिस्टर गांँधीजी :

जब तक आपने 'कानून' के सिद्धांतों को नहीं पढ़ा है, आप यह नहीं जान पाएंगे कि 'अन्य लोगों की संपत्ति को नुकसान पहुंचाए बिना अपना पूरा उपयोग करें'पाठ को कैसे लागू किया जाए। हिंदू और मुस्लिम कानूनों को न पढ़ने और मुकदमा दायर करने का तरीका न जानने से वह चिंतित हो गए। वह सुनता था कि फिरोजजामेहता दरबार में शेर की तरह दहाड़ता है और सोचता था कि क्या वह ऐसी बुद्धिमत्ता के साथ पैदा होगा। कानूनी पेशे में उन्होंने कहा, "मैं झूठ बोलने जैसा काम नहीं करता। उनका सिद्धांत है कि अगर मामले में सच्चाई हो तो जीतना और अगर झूठ हो तो हारना।"

उन्होंने मुवक्किल के हिसाब-किताब में गलती नहीं देखी बल्कि अदालत की राय में गलती बताई जो उनके पक्ष में बनने वाली थी। आख़िरकार सत्य की जीत हुई. बुजुर्ग और पक्ष दोनों खुश थे l लंबित मामले में, यदि वह जानता है कि उसके ग्राहक ने उसे धोखा दिया है तो उसे झूठ बोलने के लिए कड़ी सजा दें। मजिस्ट्रेट से पूछने पर सभी हैरान रह गए। वह पार्टियों के सामने अपनी अज्ञानता छुपाते थे, अगर खुद से कुछ नहीं सीख पाते तो किसी और के पास चले जाते थे।

सबरमती जेल में महात्मा गांँधी :

धर्म भी महात्मा गांँधी जी :

जब मैं पहली बार बेकरी से मिला, जो एक अच्छे वकील और धार्मिक उपदेशक भी थे, तो मैं जन्म से हिंदू था लेकिन मुझे हमारे धर्म के बारे में नहीं बल्कि अन्य धर्मों के बारें में पता था। जब तक मैं अपने धर्म के बारे में पूरी तरह से नहीं जानता, मैं धर्म परिवर्तन के बारे में नहीं सोचता। उसने दृढ़ता से कहा l बचपन में गांँधीजी की राम के नाम में विशेष आस्था थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि यह भूत-प्रेत के डर से छुटकारा पाने की दवा है। गांँधी जी के अनुसार तुलसीदासूरायणम् सर्वोत्तम है l

अपने कुछ संदेहों के उत्तर के लिए उन्होंने मनुसति का भी पाठ किया।

यह संसार धर्म पर आधारित है। चूँकि धार्मिकता सत्य के साथ होती है, इसलिए सत्य की खोज की जानी चाहिए। भगवद गीता में सारा ज्ञान और ज्ञान समाहित है। वहां कुछ भी

नहीं है। गांधीजी यही कहा करते थे. जब भी उन्हें खाली समय मिलता था तो वे गीता के श्लोक पढ़ते थे। ईसाइयों का जीवन मुझे ऐसा कुछ भी नहीं देता जो गांधी की आत्मकथा या सत्य शोधन में अन्य लोग नहीं दे सकते। मुझे विश्वास है कि बलिदान देने में हिंदू ईसाइयों से कई गुना आगे निकल जाते हैं। उन्होंने ईसाइयों से दो टूक कहा।

अहिंसा: "हिंसा को पूरी तरह से त्याग देना चाहिए। एक सच्चा अंतर्राष्ट्रीय समिति का निर्माण अहिंसा की बुनियाद पर ही किया जा सकता है। सभी को जीवन में समान अवसर पाने का अधिकार है क्योंकि वे समान हैं। लेकिन चूंकि सबकी शक्ति एक समान नहीं होती इसलिए मनुष्य-मनुष्य में कुछ अंतर भी होते हैं। बुद्धिजीवियों की कमाई का उपयोग समाज के कल्याण के लिए उसी प्रकार किया जाना चाहिए जैसे एक व्यक्ति का उपयोग उसके परिवार के लिए किया जाता है। गांॅधी ने कहा कि उनका अहिंसा सिद्धांत सभी जातिवादी राजनीति से परे है।

ऐसा होता था कि यह भयानक अनुष्ठान देवी काली को बलि देने के लिए भेड़ के सामने किया जाना चाहिए। भेड़ का मुंह शांत नहीं होगा. कहते हैं भेड़ की जान इंसान की जान से कम कीमती नहीं होती.

अहिंसा के बीज:

सिगरेट और मांस का खर्च पन्द्रह बापूजी सविनय अवज्ञा कर रहे हैं।

उसने अपना कर्ज चुकाने के लिए अन्ना के सीवर से सोना चुराया। लेकिन सब कुछ करने के बाद भी मुझे निराशा हाथ लगी। पिता के सामने कहने का साहस न होने पर उसने पर्ची पर लिखकर सिर झुका लिया।

यह एक पत्र है जिसमें यह स्वीकार किया गया है कि क्या हुआ और फिर कभी चोरी न करने का वादा किया गया है। इसे पढ़ने के बाद पिता ने कुछ देर सोचा। वे चुप रहे। उनकी आँखों में आँसू उनकी पीड़ा का संकेत हैं। बिना सिर फोड़े बिना गांॅधी को मारे। अद्भुत शांति दिखाई। देशभक्ति के पीछे अहिंसा की अविश्वसनीय शक्ति समझ में आती है। तभी उनके अंदर अहिंसा के बीज पनपे।

स्वच्छता:

गांँधीजी स्वयं और दूसरों के लिए स्वच्छता का पालन करते थे।

आज्ञाकारी यह खबर सुनकर कि डरबन में प्लेग फैल रहा हैमुनिसी ने, राज-व्यवस्था की अनुमति से, घर-घर स्वच्छता फैलाई। जब भारतीय स्वच्छ रहने लगे तो महामारी भी कम हो गयी।

कलकत्ता में कांग्रेस की बैठकों के परिसर को आप जिस नजर से भी देखेंकीचड़ ही नजर आता है... शौचालय दुर्गंध से भरे हुए हैं। जब उन्होंने ऐसा कहा तो स्वयंसेवक ने कहा "पाकिस्तान का काम". गांँधीजी ने झाड़ू लाकर शौचालयों की मरम्मत की। उनकी मान्यता है कि स्वच्छता से ही परमात्मा तक पहुंँचा जा सकता है।

ब्रह्मचर्य:

पत्नी और बच्चों के होते हुए भी उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया,उनका मानना था कि ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्मा का दर्शन करना। उन्होंने धर्मग्रंथों का अध्ययन किया और ब्रह्मचर्य का पालन किया। उन्होंने महसूस किया कि उपवास शरीर,मन और आत्मा की रक्षा करेगा। ब्रह्मचर्य व्रत का सफलतापूर्वक पालन करने के लिए उन्हें सबसे पहले अपनी जीभ पर काबू पाना पड़ा और मध्यम एवं अस्वास्थ्यकर भोजन से दूर रहना पड़ा। वह बकरी का दूध पीता था क्योंकि उसका मानना था कि अन्य जानवरों का दूध कामोद्दीपक होता है। उन्हें ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना था, जो मन, वाणी और सभी इंद्रियों को संयमित करता है और मठों में भोजन के नियमों का पालन करना था। वह कहते थे कि मन को नियंत्रण में रखने वाला उपवास लाभदायक होता है।

भाषा अध्ययन:

1897 में उनकी पत्नी और बच्चे उनके साथ डरबन में थे।

वह स्वयं बच्चों को पढ़ाने जा रहे थे,लेकिन यह ठीक नहीं हुआ। बच्चों से गुजराती में बात करने से मुझे उनकी भाषा से परिचित होने में मदद मिली। वह मुसलमानों के संपर्क में आये और उर्दू और तमिल भाषाशिक्षा नामक पुस्तक के माध्यम से तमिल सीखी। भारत आने के बाद उन्होंने तेलुगु सीखने की कोशिश की। हाई स्कूल में थोड़ी सी संस्कृत उन्होंने महसूस किया कि भले ही भारतीय लोगों के दिलों तक पहुंँचने में भाषा बाधा न होलेकिन लोगों की भाषाओं को जानना बेहतर होगा।

गांँधीजी को यह विचार पसंद नहीं था कि राष्ट्रीय भाषा का अध्ययन करने से उनके अंग्रेजी ज्ञान में बाधा आएगी, और वे राष्ट्रीय भाषाओं का समर्थन नहीं करते थे।

वे कहते हैं कि जब आपके पास अपनी मातृभाषा होगी तभी आप किसी भी अन्य भाषा को अच्छी तरह सीख सकते हैं।

राजभक्ति:

गांँधीजी की राजभक्ति प्रबल थी, संभवतः सत्य के प्रति उनके सहज प्रेम के कारण। दक्षिण अफ्रीका में, वह अपने बच्चों के साथ 'गॉड सेव द किंग' गीत गाते थे। अहिंसा का विपरीत।

जब राजा ने इसे बदलकर "शत्रुओं का संहार करो" कर दिया, तो वह इसे गाने लगा। उन्होंने कैसर-ए-हिंद पदक लेने से मना कर अपनी देशभक्ति का प्रदर्शन किया, जो उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति उनकी सेवाओं के लिए 1916 में प्रदान किया जाना था।

सत्याग्रह:

एक ऐसे शब्द के लिए संघर्ष जो किसी की भावनाओं के सबसे अनुकूल हो "सदाग्रह" शब्द को पुरस्कार दिया गया और उसे "सत्याग्रह" में बदल दिया गया। सत्याग्रह की पहचान है विपक्ष की हिंसा का निहत्थे, साहस और दृढ़ता के साथ सामना करना, कष्ट सहना और अंत तक अपने विश्वास वाले सत्य के लिए अडिग रहना। उन्होंने देश के लोगों में ये भावनाएं भर दीं। बोरशाद सत्याग्रह का नेतृत्व सरदार पटेल ने किया था, जबकि गुरुकाबाद सत्याग्रह सिखों द्वारा गुरुद्वारा पर अधिकार करने के लिए किया गया था। सत्याग्रह ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमूल्य भूमिका निभाई। पूरी दुनिया सत्याग्रह की ताकत जान चुकी है।

गृहप्रवेश, लेखन कौशल:

गांँधी बचपन से ही बदमाश थे।

दस लोगों के सामने बोलना डरावना लगता है। उन्होंने राष्ट्रपति को अपना लिखा हुआ पत्र दे दिया, यहांँ तक कि उन्हें बैठक में उसे पढ़ने की चुनौती भी दी।

दक्षिण अफ्रीका जाने के बाद व्याख्यान कक्ष छोटा हो गया। वह पूरे दिल से समय की पाबंदी में विश्वास रखते थे और उसका पालन भी करते थे। वह कहते थे कि बहुत अधिक बात करने से झूठ पैदा होता है, जो एक अर्थहीन कथन है। जो लोग सत्य की खोज में हैं उनके लिए मौन आवश्यक है। मद्रास में उनका मुद्रित उपदेश. दस हजार प्रतियाँ बिक चुकी हैं। प्रिटोरिया में अपना पहला व्याख्यान देने के बाद वह एक महान वक्ता बन गये। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की स्थिति पर एक पुस्तिका लिखी, फिरोज मेहता से मुलाकात की और रात भर में एक भाषण तैयार किया, पूना और मद्रास विधानसभाओं के लिए भाषण लिखे और दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर एक छोटी सी किताब लिखी। बाद में उन्होंने अपनी आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग से शुरुआत की।

भारत में बापू :

1901 में भारत लौटने के बाद कुछ यात्राओं के बाद, वे पहली बार कलकत्ता में कांग्रेस में गए। उन्होंने फिरोज मेहता से बात की और कांग्रेस में दक्षिण अफ्रीका का मुद्दा पेश किया,जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

चरखा:

जब तक हम अपने देश में सूत नहीं कातेंगे, तब तक विदेशियों को सूत नहीं बेच सकेंगे गुलामों को। उन्होंने उन्हें एहसास दिलाया कि संघर्ष के ज़रिए,हिंदू देश की गरीबी के साथ-साथ वे स्वराज भी हासिल कर सकते हैं। इस तरह,स्वदेशी आंदोलन के ज़रिए गांॅधी मिल मालिकों के दुश्मन बन गए। राष्ट्रीय कांग्रेस में स्वराज के लक्ष्य पर चर्चा हुई। हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता उन्मूलन और गद्दाफी पर प्रस्ताव पारित किए गए।

दरअसल, गांॅधी का जीवन उस समय से पूरी तरह सार्वजनिक हो गया जब उन्हें लगा कि दक्षिण अफ्रीका में उनके साथ जो अपमान हुआ,वह राष्ट्र पर थोपा गया। वे पहले से ही लोगों के लिए अभियान चला रहे थे। एक हर्बलिस्ट,एक कंपाउंडर, एक धोबी... एक सफाईकर्मी। एक पत्रकार, एक प्रिंटिंग विशेषज्ञ, एक किसान, एक अहिंसक कार्यकर्ता। एक बुनकर, एक शिक्षक, आदि। उन्होंने कई अवतार लिए।

वे 1901 के मिंटो-मार्ले सुधारों को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक थे,जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों के लिए अलग-अलग प्रतिनिधित्व का प्रावधान था,क्योंकि अंग्रेज फूट डालो और राज करो के सिद्धांत पर भरोसा कर रहे थे। जुलाई1918 में शुरू किए गए मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और 1919 में रॉलेट एक्ट की अवहेलना करने पर जलियांवाला बाग हत्याकांड भी अंग्रेजों द्वारा भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना भरने के लिए किया गया था।

उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से एकता में योगदान दिया।

1923 में जब महात्मा गांधी साबरमती जेल में थे,तब अहिंसा के उनके मुख्य सिद्धांत की अनदेखी की गई और हिंदू-मुस्लिम तनाव भड़क उठा। सितंबर1924 में यह अपने चरम पर पहुंच गया, जब सांप्रदायिक झड़पों में156 लोग मारे गए। प्रायश्चित के तौर पर गांधीजी ने 21 दिन का उपवास रखा।

दंडी सत्याग्रह :

उस साल कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष गांधी जी थे। अध्यक्षीय भाषण खादी पहनने,हिंदू-मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता उन्मूलन के इर्द-गिर्द घूमता था।

1928 तक भारतीय लोगों में राष्ट्रवाद की भावना बहुत बढ़ चुकी थी।3 फरवरी 1928 को आए साइमन कमीशन का पूरे देश में काले झंडों और "साइमन गो बैक" के नारों के साथ तीखा विरोध हुआ।

1930 में गांधी जी ने देश का व्यापक दौरा किया। उन्होंने संकल्प लिया कि यदि भारत को 1931 के अंत तक स्वतंत्रता नहीं मिली तो वे व्यापक नागरिक अवज्ञा आंदोलन शुरू करेंगे। उन्होंने नेहरू को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया। लाहौर कांग्रेस में उन्होंने प्रस्ताव रखा कि देश के लिए पूर्ण स्वतंत्रता या पूर्ण स्वतंत्रता आवश्यक है। उन्होंने 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता की शपथ ली। "हम मानते हैं कि भारतीय राष्ट्र को स्वतंत्रता और स्वाधीनता का आनंद लेने का अधिकार है,ठीक वैसे ही जैसे हर राष्ट्र को स्वतंत्रता और स्वाधीनता का आनंद लेने का अधिकार है" यह स्वतंत्रता की घोषणा का पहला वाक्य है।

"मुझे बताओ कि तुम्हारे दोस्त कौन हैं। मैं तुम्हें बताऊंगा कि तुम कौन हो।" आइए एंग्लो-अमेरिकन सार्वजनिक व्यक्ति गांधी के दोस्तों के बारे में थोड़ा जानें,और उन लोगों के बारे में भी जिनके व्यक्तित्व पर गांधी के प्रभाव का प्रभाव पड़ा।

अन्य स्वतंत्रता सेनानी - गांँधीजी :

गांँधी, नेताजी, सुभाष चंद्र बोस: 16 जुलाई, 1921 जब सुभाष चन्द्र बोस इंग्लैण्ड से बम्बई बंदरगाह पर उतरे तो क्या हुआ?

गांँधीजी चरखे पर सुई कातते हुए वे मणि भवन में गांँधीजी से मिलने गए। गांँधीजी ने "एक साल के भीतर स्वराज कैसे प्राप्त किया जा सकता है" जैसे सवालों के माध्यम से उनमें उत्साह और जुनून जगाया था, उन्हें कलकत्ता में चित्तरंजन से मिलने और बात करने और उन्हें अपना राजनीतिक गुरु बनाने की सलाह दी।

सुभाष चन्द्र बोस के अनुरोध पर वे मोतीलाल नेहरू और अब्दुल कलाम आज़ाद पंचा के साथ कलकत्ता में बंगाल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के उद्घाटन में भी शामिल हुए। सी. आर. रॉक्स की मृत्यु के बाद बंगाल की राजनीति में नेता जी को लेकर जो उथल-पुथल मची उसमें महात्मा गांधी ने सुभाष चन्द्र बोस के स्थान पर जे. वाई. शेषगुप्ता को स्वराज्य पार्टी का नेतृत्व, प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष पद और कलकत्ता के मेयर का पद तीनों पदों पर समर्थन दिया। इसके साथ ही सुभाष ने सर्वधर्मसमभाव के लिए कांग्रेस में नरमपंथी ताकतों के नेता गांधी से संघर्ष शुरू कर दिया। 25 दिसम्बर 1928 को आयोजित एक सार्वजनिक सभा में उन्होंने गांँधीवाद की कटु आलोचना की।1929 में गांँधीजी ने अपने शिष्य नेहरू को लाहौर कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया।

नमक - सत्याग्रह:

इतने मतभेदों के बावजूद 12 मार्च 1930 को जब महात्मा गांँधी ने दांडी सत्याग्रह शुरू किया, तो बोस ने इसे नेपोलियन की पेरिस की ओर कूच के रूप में सराहा। बोस ने कहा 'गांँधी इरविन समझौते के अंधे व्यक्ति थे और गाँधी की इटली यात्रा बेहद सराहनीय थी, लेकिन यह निराशाजनक था कि वे इटली में लंबे समय तक नहीं रहे और सरकार के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित नहीं कर पाए। 1931 में महात्मा खाली हाथ भारत लौट आए।

जब सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया, तो बोस उनसे मिलने गए। उनके राजनीतिक विचारों की आलोचना करने के बावजूद बोस गांँधी के प्रति बहुत सम्मान रखते थे। गांधी हमेशा उन्हें आशीर्वाद देते थे। उन्होंने कहा कि महात्मा सुभाष का सम्मान करने का मतलब उनका अंधानुकरण करना नहीं है।

वल्लभभाई पटेल के साथ :

1931 में वल्लभ इंग्लैंड से लौटे और अहमदाबाद में वकालत शुरू की। मोहनदास करमचंद गांधी पहले से ही अहमदाबाद में बैरिस्टर के तौर पर वकालत कर रहे थे। वे वल्लभ से छह साल बड़े थे। वे अभी-अभी दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे। वे दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ लड़ाई लड़ने के बाद भारत आए थे और ब्रिटिश शासन से भारत की मुक्ति के लिए संघर्ष शुरू किया था।

अगर गांँधी जी को उनके मित्र मावलंकर क्लब ग्राउंड में मिलते तो वे क्या करते वे उनसे कहते कि गेहूं से पत्थर उठाओ और शौचालय साफ करो। उनका इरादा था कि हम आजादी हासिल करेंगे। वल्लभ गांँधी ने उनका मजाक उड़ाया। लेकिन गांधी जी के इर्द-गिर्द बुद्धिमान युवक थे जो गूंगे और मूर्ख थे।

जब उन्होंने उन योग्य व्यक्तियों को देखा तो उनके मन में गांधीजी के प्रति सम्मान की लहर उठी।

बिहार के चंपारण में नील की खेती करने वाले मजदूरों के साथ उनके मालिकों द्वारा बहुत बुरा व्यवहार किया जा रहा था। गांँधी जी ने उनके साथ हो रहे अत्याचारों और अत्याचारों के बारे में सुना। अंग्रेज जिला मजिस्ट्रेट ने गांधी जी को जिला छोड़ने के लिए कहा, यह कहते हुए कि जिले में रहना उनका कर्तव्य है। गांधी जी ने गर्व से कहा कि उन्हें अपनी अंतरात्मा की आवाज सुननी चाहिए और आपके आदेशों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। गांँधी जी द्वारा दिए गए धन से पटेल जी के मन में उनके प्रति बहुत अधिक सम्मान और आदर भाव बढ़ गया। इस घटना ने उन पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि वे तुरंत गांधी जी की ओर आकर्षित हो गए और जीवन भर उनसे जुड़े रहे। यह मुलाकात 1917 में गोधरा में गुजरात सभा की बैठक की अध्यक्षता करते हुए गांधीजी ने "स्वराज हो या न हो। भारतीयों द्वारा स्वशासन (होमो)" का आह्वान किया। तुरंत उन्होंने अपने सामने की मेज से कागज का एक टुकड़ा निकाला और कहा "यह एक आदेश है जिसमें भारतीयों को इंग्लैंड की महारानी को श्रद्धांजलि देने का निर्देश दिया गया है चाहे वे कोई भी सभा आयोजित करें। मैं इसे बेकार मानता हूँ। इसलिए मैं इसे फाड़ रहा हूँ।"

गांँधी, अम्बेडकर और अन्य नेता :

उन्होंने आदेश पत्र को फाड़कर फेंक दिया। इसे देखकर पटेल गांधी की बहुत प्रशंसा करने लगे। उन्हें पूरा विश्वास था कि गांँधी देश को आजादी जरूर दिलाएंगे और उन्होंने गांधी की मदद करने और स्वराज के संघर्ष में भाग लेने की अपील छोड़ दी। महात्मा गांँधी का आकर्षक व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि कई सालों बाद गांँधी ने पटेल से कहा"पहले तो मुझे आपके बारे में संदेह था। लेकिन जैसे-जैसे मैं धीरे-धीरे आपको जानने लगा,मुझे समझ में आया कि आप सिर्फ हमारे आदमी नहीं हैं बल्कि काम करने वाले आदमी हैं।"

पाटिल जिले में 1918 में जब फसलें बर्बाद हो गईं और किसान संकट में थे,तो ब्रिटिश सरकार ने सहानुभूति और सहयोग देने के बजाय किसानों पर भूमि कर चुकाने का दबाव डाला। किसानों ने आंदोलन शुरू कर दिया और कहा कि वे कर नहीं देंगे। गांधी ने इसका समर्थन किया और उन्हें सलाह दी कि वे डरें नहीं। दुखी न हों। आप सभी को कर देने से इनकार कर देना चाहिए और अंग्रेजों के प्रति अपनी अवज्ञा दिखानी चाहिए। उन्होंने उन्हें सलाह दी। लंबे और भीषण संघर्ष के बाद आखिरकार किसानों की जीत हुई। उस जीत के साथ गांधी ने पाटिल को स्वतंत्रता सेनानियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया।

मुझे आपकी मदद की जरूरत है :

रौलेट बिल की घोषणा की गई। इसके अनुसार,ब्रिटिश सरकार। जो लोग रिन्च के खिलाफ लड़े, उन्हें बिना मुकदमा चलाए ही गिरफ्तार किया जा सकता था। गांँधी ने रौलेट बिल का विरोध किया। अत्यधिक गुस्से में उन्होंने पटेल से कहा,"= यह बिल बेहद क्रूर है। इससे यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों को किस तरह से नीची नजर से देखती है। मुझे इस बारे में कुछ करना चाहिए। इसके लिए मुझे आपकी मदद चाहिए।"

आपके मन में क्या है? पाटिल ने पूछा, "सत्याग्रह! कुछ लोग इसका पालन करते हैं। लेकिन हम सविनय अवज्ञाकारी हैं।"

गांँधीजी ने कहा, "इसे प्रदर्शित किया जाना चाहिए।"

नियत दिन पर हजारों हिंदू और मुसलमानों ने उपवास और प्रार्थना की और काम से दूर रहे। जब अहमदाबाद और उसके आस-पास यह खबर फैली कि गांधी एक सार्वजनिक सभा को संबोधित करने वाले हैं और उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है,तो दंगे भड़क उठे। पटेल ने पूछताछ की और कहा, "मैं जो कुछ हुआ उससे शर्मिंदा हूं। सत्याग्रह के नाम पर आपने

इमारतें गिरा दीं। घर जला दिए गए। दुकानें तोड़ दी गईं। ट्रेनें रोक दी गईं। निर्दोष लोगों को मार दिया गया। सत्याग्रह या सत्याग्रह का मतलब सत्य की शक्ति है और यह अहिंसक होना चाहिए। आपको यह जानना चाहिए।" उन्होंने एक सार्वजनिक सभा में कहाऔर बाद में गांँधी को रिहा कर दिया गया।

हम शिक्षकों को अपने बच्चों को विदेशी-अनुकूल तरीके से पढ़ाने की अनुमति नहीं देंगे। ऐसा करने के लिए हमें गांधी के असहयोग के मार्ग पर चलना होगा। अगर स्कूल ब्रिटिश राज के अधीन हैं तो आपको पढ़ाने से मना कर देना चाहिए। पटेल ने उन्हें गांँधीवादी तरीका सिखाया।

गांँधीजी अक्सर गुजरात आते थे। वे पटेल के साथ गांवों में जाते थे।

गांँधीजी मंदिर जा रहे थे तभी नाथूराम गोड ने उन्हें बंदूक से गोली मार दी।

वह वहाँ के लोगों से मिलेंगे और उनकी परिस्थितियों के बारे में जानेंगे।

पटेल को रेलवे प्लेटफॉर्म पर सोने में असहजता महसूस होती,लेकिन गांँधी को ऐसी कोई परेशानी नहीं थी। वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जो अपनी नज़र में एक तपस्वी साधु की तरह थे। मुझे नहीं लगता कि मुझे ट्रेन में गांँधी के साथ सोना चाहिए। पटेल मज़ाक करते,लेकिन गांधी पहले से ही गहरी नींद में थे! गांँधी के पास उनकी नींद में खलल डालने का कोई तरीका नहीं था। पटेल और गांँधी। वे बहुत मिलनसार,मज़ेदार थे और एक-दूसरे के साथ खेलते थे। पटेल ने गांँधी की हास्य भावना को अच्छी तरह से समझा।1922 में, उन्होंने एक साथ कई जगहों का दौरा किया।

बरौली जिला उनमें से एक है। गांधी जी ने किसानों से कहा,"आप अंग्रेजों को और अधिक कर क्यों दें? दृढ़ रहें और कहें कि नहीं और उनका विरोध करें। अधिकारियों से दंड के लिए तैयार रहें। एक बात न भूलें। हिंसा नहीं होनी चाहिए। आपको शांतिपूर्वक लड़ना चाहिए। यदि आप साहस के लिए तैयार हैं तो आप न केवल अपनी समस्या का समाधान करेंगे, बल्कि पूरे देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने में भी तेजी लाएंगे। यह मेरा वादा है।" चौरी चौरा नामक एक छोटी सी जगह में कुछ लोग समूह में चल रहे थे और ब्रिटिश शासन के खिलाफ नारे लगा रहे थे, जब पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की। कुछ पुलिसकर्मियों ने उन्हें लाठियों से पीटने की कोशिश की। इससे क्रोधित होकर कार्यकर्ताओं ने अहिंसा और शांति के सिद्धांतों को नजरअंदाज कर दिया और पुलिस को मार डाला। यह सुनकर गांधी जी डर गए और लोगों से असहयोग आंदोलन बंद करने का आह्वान किया। "हमारा विद्रोह

रुकना चाहिए। मैं भारतीयों को अतीत के रास्ते पर नहीं ले जाना चाहता। गांँधीजी ने कहा। इसके कुछ समय बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया,जिससे स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हो गया। इसके साथ ही बारडोली आंदोलन भी पीछे हट गया।1928 में ही इसे फिर से शुरू किया गया। इसमें सफलता मिली। सरदार,जिन्होंने उन किसानों को सफल सत्याग्रह के रास्ते पर आगे बढ़ाया और एक नेता के रूप में सम्मानित हुए

वल्लभभाई पटेल ने दुनिया को दिखाया कि महात्मा की शिक्षाएंँ वास्तव में कितनी उपयोगी हो सकती हैं।

वल्ला भाई पटेल पर गांँधी का प्रभाव :

पटेल की बेटी मणि बेन जानती थी कि उसके पिता उससे और उसके भाई से बहुत प्यार करते थे। लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह गांधी से मिल चुके थे और समय बीत रहा था।

ताज़ा लड़ाई:

कांग्रेस छह साल से कुछ नहीं कर रही महात्मा गांँधी के1930 में जेल से रिहा होने के बाद हम भारतीयों के स्वतंत्रता के अधिकार और अपने देश के फलों का आनंद लेने के अधिकार में पूरी तरह से विश्वास करते हैं। अगर सरकार यह अधिकार छीन लेती हैतो हमारे पास उस सरकार को बदलने या हटाने का अतिरिक्त अधिकार है। उन्होंने यह शपथ ली और फिर पूरे देश में सभाओं में कहा। तब गांधी जी ने नमक कर अधिनियम को समाप्त करने की कार्ययोजना के बारे में सोचा। हमें समुद्र और जमीन से निकाले गए नमक पर कर क्यों देना चाहिए? उन्होंने सोचा। अगले दिन।

दांडी तक एक लंबी यात्रा शुरू हुई जो नमक के खेतों वाला समुद्र तटीय गांँव था। अगले वर्ष, कांग्रेस को नष्ट करने के लिए दृढ़ संकल्पित ब्रिटिश सरकार ने गांँधी और पटेल के खिलाफ अभियान शुरू किया।

वैद्य में प्रसिद्ध लोगों को रखा जाता था। जेल से बाहर आने के बाद गांँधी ने जो पहली बात कही, वह यह थी कि मेरे जीवन की सबसे शानदार बात सरदार के साथ जेल में रहना था। मैं उनके अजेय साहस और देश के प्रति उनके उत्कट प्रेम को जानता था। लेकिन मेरे प्रति उनका प्रेम सब कुछ पर भारी था।

भारत छोड़ो:

1942 में महात्मा गांँधी ने अंग्रेजों से भारत छोड़ने को कहा। यह हमारे देश से विदेशी शासकों को बाहर निकालने के अंतिम आंदोलन का पहला कदम था।

अंग्रेज़ अपना सामान समेटकर भारत छोड़ने पर आमादा थे लेकिन... उससे पहले आपको बारह मंत्री चुन लेने चाहिए। आज़ादी के बाद वे सरकार बनाएँगे। अंग्रेज़ों ने कहा। कांग्रेस के नेताओं ने भले ही पटेल को वोट दिया हो लेकिन गांँधी ने जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री चुना, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे अपने छोटे कद के कारण लंबे समय तक सेवा कर पाएँगे और विदेशों में ज़्यादा लोगों को जानते हैं। हालाँकि पटेल का दिल इस बात से आहत हुआ, लेकिन गांधी और देश के प्रति अपने प्यार के कारण उन्होंने चुपचाप सहमति दे दी।

30 जनवरी 1948 को गांँधी जी ने चरखा चलाते हुए सरदार से बात की। सरदार के घर पहुंँचने से एक मिनट पहले ही बापू की मृत्यु हो गई।

कुछ ही मिनटों में किसी ने उन्हें गोली मार दी। भयानक खबर। डर से कांपते हुए पटेल किसी तरह बिड़ला हाउस गए और देखा कि गांँधी जमीन पर बेजान पड़े हैं। उस समय रेडियो पर कहा गया कि आज भारत के लिए एक दुखद शर्मनाक और बहुत दर्दनाक दिन है। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से हमें गुस्सा नहीं आना चाहिए। आत्मनिरीक्षण। क्या हम इसलिए गुस्सा हुए क्योंकि नेता के मरते ही हम उनके शब्दों को भूल गए। पटेल ने जो खोया उसका उन पर असर हुआ। गांँधी की हत्या के कुछ सप्ताह बाद उन्हें दिल का दौरा पड़ा और मुझे बापू के साथ जाना पड़ा। लेकिन वे अकेले चले गए। उन्होंने कहा कि वे गांँधी के साथ बिताए दिनों को याद करके रो पड़े और गांँधी अक्सर कहते थे "मेरा जीवन आपके हाथों में है, भगवान!" हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि गांधी ने उन्हें कितना प्रभावित किया। अगर गांधी महान नहीं होते, तो क्या उनका इतने लोगों पर इतना प्रभाव हो सकता था?

पोट्टी श्रीरामुलु पर गांँधी का प्रभाव :

पोट्टि श्रीरामुलु ने पहली बार 1 अप्रैल 1930 को गांँधीजी से संपर्क किया और मानव सेवा में अपना शेष जीवन बिताने की अनुमति और अवसर के लिए प्रार्थना की। गांँधीजी ने उन्हें अनुमति दे दी।

पोट्टी श्रीराम गांँधी के अहिंसा, सत्य और अस्पृश्यता के विरोध के सिद्धांतों से आकर्षित थे। देश के लोगों की पीड़ा और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, उनके द्वारा झेली जा रही कठिनाइयाँ, उनके द्वारा जीया जा रहा कठिन जीवन और उनके द्वारा किए जा रहे बलिदानों ने उन्हें प्रेरित किया। महात्मा गांँधी के व्यक्तित्व का उन पर गहरा प्रभाव रहा। साबरमती आश्रम के सख्त और अनुशासित नियमों का पालन करके, वे गांधी के शिष्यों के बीच एक विशेष स्थान प्राप्त करने में सक्षम थे। वे उनके अनुयायी बनने में सक्षम थे।

1928 से 1930 के बीच का समय गांधी की नीतियों और प्रक्रियाओं के लिए एक परीक्षा की अवधि थी। रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महान बुद्धिजीवियों ने भी गांँधी की नीतियों की कड़ी आलोचना की। हालांकि, सुभाष चंद्र बोस ने गांँधी को तानाशाह कहा। मोतीलाल नेहरू जैसे प्रमुख लोगों ने गांधी की नीतियों का इतना विरोध किया कि उन्होंने स्वराज नामक एक अलग पार्टी बना ली।

सत्याग्रह या सत्यव्रत :

महात्मा गांँधी द्वारा उपनिवेशवादियों के खिलाफ़ प्रस्तावित संघर्ष की विधि को सत्याग्रह कहा गया। यही सत्य व्रत मन्त्र है। सत्याग्रह अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ़ सविनय अवज्ञा है। न केवल अहिंसक असहयोग बल्कि कई व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं और विशेष अधिकारों का स्वैच्छिक त्याग भी। गांँधी के अनुयायियों को सत्याग्रही कहा जाता था। सत्याग्रहियों को ब्रिटिश प्रशासन और अदालतों में अपनी नौकरियाँ और पद छोड़ने पड़ते थे। उन्हें ब्रिटिश स्कूल छोड़ने पड़ते थे। उनका एक और कर्तव्य स्वदेशी आंदोलन था, यानी ब्रिटिश सामानों का बहिष्कार। यह पहले ही शुरू हो चुका था। इसीलिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झंडे पर रत्नम का प्रतीक दिखाई दिया। खादी की टोपी। गांँधी की टोपी सत्याग्रहियों का प्रतीक बन गई।

जब गांँधी श्रीरामुलु जैसे किसी व्यक्ति ने कहा "स्वराज बहुत आसानी से और शीघ्रता से आएगा," तो यह स्पष्ट है कि उनके अवलोकन के साथ-साथ उनमें एक व्यापक हृदय भी था जो दूसरों की क्षमता की प्रशंसा करता था महात्मा गांधी श्री राम का मंदिर कांग्रेस द्वारा बनाया जा रहा है और प्रस्ताव पारित किए जा रहे हैं।

संस्कृति के लिए आंध्र पीने गांँधीजी का शराब-विरोध बुद्धि की हानि है।

उन्होंने यह भी कहा कि दिहाड़ी मजदूरों की जेबें भी भरी गईं। पहले मध्यम वर्गीय समाज अभी भी इसकी जरूरत को पहचान रहा है। यह किया भी गया है और राष्ट्रीय सरकार ने इस

पर ध्यान दिया है। श्रीरामुलु को अस्पृश्यता उन्मूलन और सभी के लिए शिक्षा जैसे आंदोलन करने के लिए गांँधी से प्रेरणा मिली। इसी तरह हरिजनों को भी श्रीवलय प्रचारम के लिए गांधी से प्रेरणा मिली। श्रीरामुलु गांधी के प्रिय शिष्य थे।

9-10-1945 को पोट्टी श्रीरामुलु ने 298 सदस्यों के साथ हिंदू सुधार समिति की स्थापना की, जिसका उद्देश्य अस्पृश्यता उन्मूलन, हरिजनों के आदि आंँध्र और अरुंधतिय दोनों वर्गों का एकीकरण और जाति और धर्म से परे सांप्रदायिक भोजन का आयोजन करना था। श्रीरामुलु का अपने गुरु गांँधी के आदर्शों और सिद्धांतों में अटूट विश्वास था,गांँधी की मृत्यु के बाद भी श्रीरामुलु ने उनके आदर्शों और उनके द्वारा बताए गए कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं की। उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें और अधिक मेहनत करनी होगी। गांँधी ने उन पर बहुत प्रभाव डाला।

जवाहरलाल नेहरू पर गांँधीजी का प्रभाव :

1912 में जब जवाहरलाल नेहरू लंदन से बैरिस्टर की पढ़ाई पूरी करके भारत लौटेतो भारतीय राजनीति अपेक्षाकृत गुमनामी की स्थिति में थी। इसी समय उन्होंने गांधी के बारे में सुना, जो एक महान व्यक्ति थे और दक्षिण अफ्रीका में उत्पीड़ित भारतीयों के लिए काम कर रहे थे। उनसे मिलने से पहले ही नेहरू गांँधी केगांँधी सत्याग्रह से मोहित हो गए थे। नेहरू पहली बार गांँधी से1916 में लखनऊ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक आम अधिवेशन में मिले थे। गांँधी ने उत्तर बिहार के नील के बागानों में काम करने वाले मजदूरों के अधिकारों के लिए लड़कर जो जीत हासिल की, उसे सविनय अवज्ञा का पहला कदम बताया। उन्होंने गांधी की तरह लोगों के लिए योद्धा बनने का फैसला किया। धीरे-धीरे वे गांँधी के प्रभाव में आ गए।

सत्यसंधु के हृदयपुत्र साम्ब, अर्जुन के 300वें जन्मदिन के समान हैं।

सितम्बर 1920 में कलकत्ता में आयोजित राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में अहिंसा और असहयोग के माध्यम से एक वर्ष के भीतर स्वतंत्रता प्राप्त करने के गांँधीजी के वादे से जवाहरलाल नेहरू बहुत प्रोत्साहित हुए।1924 में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में गांँधीजी के स्पष्ट मार्ग के अभाव और उनके संक्षिप्त भाषण ने उन्हें निराश कर दिया।

वे चुप रहे और गांधीजी में अपनी आस्था व्यक्त की।1929 में उन्होंने कहा कि भले ही वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद के लिए चुने गए हों,लेकिन मैं जिस

Sunitha

उम्मीदवार का नाम प्रस्तावित करता हूँ नेहरू, वह विनम्र और खुश हैं। उनके हाथों में राष्ट्र सुरक्षित रहेगा।

गांँधी ने विनम्रता से कहा। गांँधीजी का नमक सत्याग्रह शहीद होने की हद तक प्रभावशाली था। मोतीलाल, जो मृत्यु के कगार पर थे, ने अपना जवाहरलाल गांँधी को सौंप दिया। गांँधी इरविन की लॉर्ड नेहरू से बातचीत करने की इच्छा और उनके दुख और तुष्टिकरण के प्रति गांँधी की सहानुभूति से हैरान थे जिससे उनके बीच का रिश्ता स्पष्ट होता है। जब गांधी अगस्त 1931 में स्थिति समझाने के लिए शिमला गए तो नेहरू भी उनके साथ थे। 1932 में, जब उन्होंने 'सांप्रदायिक पुरस्कार' से असहमति जताई और कहा कि "परिस्थितियां ऐसी थीं कि उन्हें मृत्यु तक भूख हड़ताल पर नहीं जाना पड़ेगा,"नेहरू इस बात से क्रोधित हुए कि निर्णय अनुचित था। वह उनसे नाराज हो गए क्योंकि वह उनके बारे में चिंतित थे।

किसी भी खतरे के डर से उन्होंने हरिजन नेता अंबेडकर से समझौता करके दीक्षा तोड़ दी। चाहे कुछ भी हो, मेरा प्यार और विचार आपके साथ रहेंगे। उन्होंने एक टेलीग्राम भेजा। नेहरू। गांधी को अपने लोगों से बहुत प्यार मिलता था।

महात्मा गांँधी ने 'हरिजन' समाचार पत्र के माध्यम से भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की।

ब्रिटिश सरकार ने गांधी की 21 दिन की भूख हड़ताल की घोषणा को राजनीतिक धमकी के रूप में खारिज कर दिया, और हड़ताल ने नेहरू और उनके साथी कैदियों के लिए भ्रम पैदा कर दिया। गांधी के राजनीतिक मामलों के प्रति इस तरह के रवैये को अपनाने के कारणों जिसमें उनका अद्वितीय व्यक्तित्व भी शामिल था, को दूसरों के लिए विचार करने के लिए छोड़ दिया गया था। गांँधी इस कठिन परीक्षा से बाहर आने के बाद ठीक हो गए। आज सुबह, हमारे नेता और गुरु महात्मा गांँधी दिल्ली के लिए रवाना हुए। मैं कुछ समय के लिए उनके बगल में बैठा। मैं आश्चर्यचकित था कि हम उनके द्वारा दिए गए उच्च आदर्शों से कितने दूर हो गए हैं। नेहरू के शब्द गांधी के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

गांँधीजी ने 15 जनवरी 1935 को आए बिहार भूकंप को छुआछूत के महापाप के लिए ईश्वरीय दंड बताया था। ब्रिटिश सरकार द्वारा1935 में बनाए गए भारत सरकार अधिनियम के अनुसार, देश को 1 अप्रैल 1937 से पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी थी। वास्तव में, राज्य की प्रशासनिक शक्ति मुख्यमंत्री के हाथ में नहीं, बल्कि ब्रिटिश सम्राट द्वारा नियुक्त राज्यपाल के हाथ में थी।

कांग्रेस का नेतृत्व करते हुए महात्मा गांधी ने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में हरिजन समाचार पत्र में लिखते हुए अंग्रेजों से भारत से चले जाने का आह्वान किया था।

यह भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत थी।1943 तक, जब लोकप्रिय विद्रोह को दबा दिया गया, गांधी ने 21 दिन के उपवास पर जाने का फैसला किया।

उनके पदभार ग्रहण करते ही सभी भारतीयों ने गहरी सांस ली।21 अप्रैल, 1945 को केंद्रीय और राज्य विधानसभाओं के चुनावों की घोषणा की गई।19 फरवरी, 1946 को लोगों ने हिंसक कार्रवाइयों के माध्यम से अपना असंतोष व्यक्त किया। भारत छोड़ो और जय हिंद के नारे गूंजे। जिन्ना, जिन्हें लोगों का रक्षक (कायदे-आजम) कहा जाता था,ने कई तख्तापलट किए, हिंदू-मुस्लिम सद्भाव को बाधित किया और सरकारी तंत्र को ठप कर दिया। गांधी ने जिन्ना द्वारा देश के विभाजन को पूरी तरह से खारिज कर दिया। पंजाब में हुई हत्याएं भी जिन्ना की गलती थीं।

ब्रिटिश सरकार ने भारत और पाकिस्तान दोनों को सत्ता हस्तांतरित करने की तिथि15 अगस्त 1947 तय की।

राष्ट्रीय संघर्ष में कई वर्षों तक काम करने वाले गांधीजी ने जो उम्मीद की थी और जो हो रहा था, उसमें कितना अंतर है! सत्याग्रह खत्म हो चुका था। जब आजादी आईतब गांँधी दिल्ली में नहीं, बल्कि नवखली में धार्मिक सद्भावना कायम करने की कोशिश कर रहे थे।

महात्मा गांँधी पिछले तीस सालों से हमारे मार्गदर्शक,मार्गदर्शक और दार्शनिक रहे हैं। नेहरू और राजेंद्र प्रसाद ने गांधीजी की बहुत प्रशंसा की।78 साल की उम्र में गांँधीजी धार्मिक सद्भाव के लिए काम करने बंगाल गए। दिल्ली लौटने पर उन्होंने वहां हिंसा देखी और लोगों से हिंसा से दूर रहने की अपील की।

गांँधीजी उसी धार्मिक विचारधारा का शिकार हो गए,जिसे उन्होंने रोकने की कोशिश की थी। 30 जनवरी 1948 को एक हिंदू ने इस बात से नाराज होकर कि आजादी के छह महीने बाद भी हिंदुओं को उचित अधिकार नहीं दिए गए,राष्ट्रपिता को गोली मार दी। जैसा कि उस सुबह भविष्यवाणी की गई थी,सभी पत्र लाओ। आपको जवाब लिखना होगा। हो सकता है कि मैं कल यहांँ न रहूंँ...गांँधी ने कहा।

देश की आजादी में बराबर का योगदान देने वाले महात्मा को खोने के बाद भारतीय राष्ट्र शोक के सागर में डूबा हुआ है। हमारे जीवन से रोशनी गायब हो गई है। नेहरू ने शोक व्यक्त किया। गांधी के बेटे ने लाखों शोकसभाओं के सामने यमुना नदी के तट पर अपने पिता की

चिता को अग्नि दी। 12 फरवरी को देश की पवित्र नदियों में अस्थियों का विसर्जन किया गया।

गांँधी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता :

1. समकालीन समाज में हिंसा और असहिष्णुता

महात्मा गांँधी का जीवन और उनके विचार अहिंसा (non-violence) और सत्य (truth) के सिद्धांतों पर आधारित थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से लेकर भारत तक हर संघर्ष में शांतिपूर्ण मार्ग चुना। आज के समय में जब समाज हिंसा, आतंकवाद, और असहिष्णुता से जूझ रहा है, गांँधीजी के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

वर्तमान स्थिति :

सामाजिक मीडिया पर घृणा फैलाने वाले संदेश

जातीय, धार्मिक और भाषायी टकराव

राजनीतिक विरोध में हिंसक प्रदर्शन

वैश्विक स्तर पर युद्ध और आतंकवाद की बढ़ती घटनाएँ

गांँधी का समाधान :

अहिंसा का मार्ग अपनाकर संवाद को प्राथमिकता देना

विरोध और मतभेद के समय सत्याग्रह जैसी शांतिपूर्ण तकनीकों का प्रयोग

सर्वधर्म समभाव और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा

आज के युवाओं को गांधीजी की यह शिक्षा आत्मसात करनी चाहिए कि स्थायी समाधान केवल शांति और संवाद से ही निकल सकते हैं न कि हथियारों या नफरत से।

Suvitha

2.पर्यावरण और सरल जीवनशैली

गांँधीजी का जीवन अत्यंत सादा और प्रकृति के अनुकूल था। उन्होंने कहा था:

"पृथ्वी सबकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है लेकिन किसी एक के लालच को नहीं।"

वर्तमान स्थिति:

अंधाधुंध औद्योगिकीकरण

जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग

प्लास्टिक प्रदूषण, वनों की कटाई

उपभोक्तावाद और जीवनशैली की फिजूलखर्ची

गांँधी का समाधान:

सरल जीवन, उच्च विचार का आदर्श

स्थानीय संसाधनों और कुटीर उद्योगों का उपयोग

आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ सामंजस्य

विलासिता की बजाय आवश्यकताओं की पूर्ति को प्राथमिकता

यदि आज हम गांधीजी की मितव्ययिता, साधारणता, और प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाएँ, तो पर्यावरणीय संकट को काफी हद तक रोका जा सकता है।

Sunitha

3. सामाजिक न्याय और मानव अधिकार

गांँधीजी का सपना एक ऐसे भारत का था जहाँ हर व्यक्ति को समान अधिकार मिलेचाहे वो किसी भी जाति, धर्म या वर्ग से संबंध रखता हो। उन्होंने दलितों को'हरिजन' कहकर सम्मान देने की कोशिश की और छुआछूत के खिलाफ जीवनभर संघर्ष किया।

वर्तमान स्थिति:

जातिगत भेदभाव आज भी मौजूद है

महिलाओं, अल्पसंख्यकों और गरीबों को समान अवसर नहीं

मानव अधिकारों का उल्लंघन (जैसे बाल श्रम, मानव तस्करी)

सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ

Sunitha

गांँधी का समाधान:

सर्वोदय: सबका कल्याण और सबकी उन्नति

विनोबा भावे के भूदान आंदोलन जैसे प्रयास, जो गांँधीवादी विचारों से प्रेरित थे

ग्राम स्वराज – गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना, जिससे सबसे कमजोर व्यक्ति सशक्त हो सके

शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं में समान अवसर

गांँधीजी का सामाजिक दृष्टिकोण हमें आज यह सिखाता है कि सच्चा लोकतंत्र केवल वोट देने तक सीमित नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाना भी उसका उद्देश्य है।

4. आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्वदेशी आंदोलन

महात्मा गांधी का स्वदेशी विचार न केवल विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार था,बल्कि यह एक व्यापक आर्थिक दर्शन था, जो भारत को आत्मनिर्भर बनाना चाहता था।

वर्तमान संदर्भ:

भारत आज 'मेक इन इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल', और आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं को बढ़ावा दे रहा है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर अत्यधिक निर्भरता

बेरोजगारी, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में

गांँधी का समाधान:

कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करना (जैसे चरखा, खादी)

स्थानीय उत्पादों का उपयोग करके स्थानीय अर्थव्यवस्था को मज़बूत करना

न्यायसंगत वितरण और 'ट्रस्टीशिप' (धन का उपयोग समाज की भलाई के लिए)

गांँधीजी का मानना था कि जब तक हर हाथ को काम और हर व्यक्ति को गरिमा नहीं मिलती, तब तक देश सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो सकता।

5. शिक्षा का गांँधीवादी दृष्टिकोण

गांँधीजी ने केवल शारीरिक और मानसिक विकास की नहीं,बल्कि नैतिक विकास की शिक्षा की बात की। उन्होंने 'बुनियादी शिक्षा' (Nai Talim) का सिद्धांत दिया।

आज की चुनौतियाँ:

रोजगारोन्मुख शिक्षा का अभाव

नैतिक मूल्यों का गिरता स्तर

परीक्षा और अंकों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था

गांँधी का समाधान:

शिक्षा को व्यावहारिक और श्रमशील बनाना

मूल्यों पर आधारित शिक्षा, जिससे व्यक्ति समाज का ज़िम्मेदार नागरिक बने

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण भी होना चाहिए

आज जब शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन बन गई है गांँधीजी का शिक्षा-दर्शन हमें संपूर्ण मानव निर्माण की ओर ले जाता है।

6. वैश्विक संदर्भ में गांँधी का प्रभाव

गांँधीजी के विचार सिर्फ भारत तक सीमित नहीं थे। आज भी दुनिया भर में आदर्श माना जाता है l

6.वैश्विक संदर्भ में गांधी का प्रभाव :

गांँधीजी के विचार सिर्फ भारत तक सीमित नहीं थे। आज भी दुनिया भर में अनेक आंदोलन गांँधीवादी विचारों से प्रेरित हैं।

उदाहरण:

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में अहिंसक आंदोलन चलाया

नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ गांँधीवाद का प्रयोग किया

जलवायु परिवर्तन और न्याय के लिए वैश्विक आंदोलन (Greta Thunberg आदि) भी अब शांति और सत्य की ओर लौटने की बात करते हैं

गांँधीजी का विचार था – "My life is my message"। यह विचार आज एक वैश्विक नैतिक नेतृत्व की ज़रूरत को दर्शाता है।

Sunitha

समापन विचार :

महात्मा गांँधी के विचार आज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का एक गहन समाधान प्रस्तुत करते हैं।

वे केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक युगद्रष्टा थे।

उनके आदर्श आज के समय में संविधान, लोकतंत्र, और मानवता के रक्षक बन सकते हैं।

आज का युवा, यदि गांँधीजी के विचारों को समझे और अपनाए, तो एक न्यायसंगत, शांतिपूर्ण और सतत विकासशील समाज की स्थापना संभव है।

आलोचना और सीमाएँ –

गांँधी विचारों की आलोचना एवं आधुनिक युग में चुनौतियाँ

1. गांँधी विचारों की आलोचना

महात्मा गांँधी एक युगद्रष्टा और नैतिक चेतना के प्रतीक थे, परंतु उनके विचारों और आंदोलनों की आलोचना भी समय-समय पर होती रही है। इन आलोचनाओं का उद्देश्य नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण मूल्यांकन रहा है। कुछ प्रमुख आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं।

(i) आधुनिकता का विरोध

गांँधीजी आधुनिक पश्चिमी सभ्यता को "शैतानी सभ्यता" कहते थे। उन्होंने विज्ञान, तकनीकी प्रगति और औद्योगिक विकास की तीव्र आलोचना की। आलोचकों का मानना है कि गांधीजी का यह दृष्टिकोण व्यावहारिक नहीं था।21वीं सदी की वैश्विक दुनिया में विज्ञान और तकनीक ही विकास के प्रमुख उपकरण बन चुके हैं।

(ii) ग्रामस्वराज की अवधारणा की सीमाएँ

गांँधीजी का आदर्श समाज 'ग्रामस्वराज' था – आत्मनिर्भर गांव, न्यूनतम आवश्यकताओं और सरल जीवन पर आधारित। आलोचक यह मानते हैं कि यह अवधारणा यूटोपियन (काल्पनिक) है और तेजी से शहरीकरण, वैश्वीकरण और बढ़ती जनसंख्या के दौर में यह मॉडल लागू करना कठिन है।

(iii) वर्ण व्यवस्था पर दृष्टिकोण

गांँधीजी ने छुआछूत का विरोध तो किया, परंतु प्रारंभिक काल में उन्होंने वर्ण व्यवस्था को सामाजिक कार्य विभाजन के रूप में उचित ठहराया। यद्यपि बाद में उन्होंने हरिजन आंदोलन के माध्यम से सुधार का प्रयास किया, परंतु इस विषय पर उनका दृष्टिकोण अस्पष्ट और आलोचना का विषय रहा।

(iv) अहिंसा की व्यावहारिकता

गांँधीजी का अहिंसा पर अडिग विश्वास महान था, परंतु द्वितीय विश्व युद्ध, आतंकवाद और सीमा संघर्षों के संदर्भ में इसकी सीमाएँ स्पष्ट होती हैं। कुछ विचारक मानते हैं कि पूर्ण अहिंसा की नीति अत्याचारी शक्तियों के विरुद्ध कारगर नहीं होती।

2. आधुनिक युग में गांधी विचारों की चुनौतियाँ

(i) वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद

आज का युग वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति का है। लोगों की आवश्यकताएँ व आकांक्षाएँ बढ़ी हैं। गांँधीजी का 'स्वदेशी' और 'मितव्ययिता' का सिद्धांत इस नई मानसिकता से मेल नहीं खाता। बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सोशल मीडिया, और उपभोक्ता आधारित अर्थव्यवस्था में गांँधीवादी आदर्श सीमित होते जा रहे हैं।

(ii) राजनीतिक भ्रष्टाचार और नैतिक गिरावट

गांँधीजी राजनीति में नैतिकता और पारदर्शिता के पक्षधर थे। परंतु आज की राजनीति सत्ता, जातिवाद, और भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। गांँधीजी के 'सत्य' और 'नीतिवाद' के आदर्श इस परिप्रेक्ष्य में अप्रासंगिक प्रतीत होते हैं, यद्यपि उनकी आवश्यकता और भी बढ़ गई है।

(iii) जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट

गांँधीजी की सादगी और प्रकृति के साथ संतुलन की विचारधारा आज के पर्यावरण संकट के समाधान के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, परंतु व्यावसायिक लालच और जीवनशैली में बदलाव न होने से उनकी नीतियाँ मात्र बौद्धिक विमर्श तक सीमित रह गई हैं।

Punitha

(iv) युवा पीढ़ी और मूल्य शिक्षा की कमी

गांँधी विचारों की स्थायित्वता का मुख्य आधार नैतिक शिक्षा था। आज की शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा को गौण महत्व दिया जाता है। परिणामस्वरूप युवा वर्ग गांधी के आदर्शों से दूर होता जा रहा है।

गांँधीजी के विचारों की आलोचना और सीमाओं के बावजूद वे आज भी मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ हैं। आलोचना आवश्यक है परंतु उसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि हम गांँधीजी के मूल्यों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुनः व्याख्यायित करें। आवश्यकता इस बात की है कि हम उनकी शिक्षाओं को आधुनिक संदर्भ में व्यावहारिक रूप दें जैसे – पर्यावरणीय संतुलन, आर्थिक न्याय, और सत्य के आधार पर संवाद।

गांँधीय चिन्तन में मानव विकास :

स्थाई परिवर्तन स्वेति पीडा और यरिवर्तनमावि का रास्ता प्रशस्त होता है। स्थाई परिवर्तन में बदलाव की प्रबल इच्छा होती है। स्वैच्छिक पीडा में मनुष्य की इच्छाशक्ति होती है। परिवर्तन से विकास की भावना का विकास होता है। विकास का विचार एक सकि भावना है जो ऊर्जावान प्रेम उत्पन्न करती है जो सम्पूर्ण जनसमुदाय समर्पित सेवा की ओर ले जाता है। गांधीजी के अनुसार मानवजी विकास और परिवर्तन का आधार अहिंसा है। गांधी के सम्पूर्ण विचार अहिंसा में समाहित है। उनकी अहिंसा मानव विकास को पहचानने वाली व उसे गति देने वाली है। उनका उद्देश्य शोषण विहीन च असमानता विहीन समाज का निर्माण करना था। ऐसे समाज में ही सबके लिए विकास के बराबरको अवसर प्राप्त होते हैं। विकास की प्रक्रिया कमिक रूप से सीखने व प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने की कला है. जिसे सदाचार, नैतिक गुण व उन्नत जीवन जीने की भावना से प्रोत्साहित किया जा सकता है। मानव विकास व्यक्ति के धैर्य, प्रशिक्षण और दृढ़ता से जुड़ा हुआ है। कोई भी विचार यदि वह मानव विकास के विपरीत है तो उसे छोड देना चाहिये। गांधीजी का अध्ययन, जीवन व विज्ञान, मानव विकास के अनुकूल था। गांधीजी का मानव विकास, नैतिकता, धर्म व अध्यात्म का विकास था, मानवतावादी विकास था व सम्पूर्ण समाज का विकास था। उनकी विकास की प्रक्रिया से कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं है। वे व्यक्ति विशेष की चर्चा नहीं करते थे बल्कि सम्पूर्ण समाज की चिन्ता करते थे। गांधीजी विकास की प्रक्रिया को स्वयं अनुभव से सिखाने पर जोर देते थे। व्यावहारिक जीवन जी कर ही मानव विकास का रास्ता तय किया जा सकता है। मानव विकास के आवश्यक गुणों को सिखने के लिए गांँधीजी ने आश्रम को सर्वाधिक उपयुक्त जगह मानी। आश्रममें रहकर मानव जीवन में कान्तिकारी बदलाव लाया

जा सकता है। अहिंसक तरीके से लाया गया कांतिकारी बदलाव ही गांधीजी के अनुसार वास्तविक मानव विकास है।

हजारो वर्षों से मानव इस पृथ्वी पर रह रहा है। वह सदा एक सा नहीं रहा है। मानव के जीवन में कई तरह के परिवर्तन आते रहे है। देश काल परिस्थितियों,धर्म, नैतिकता आदि से मनुष्य के जीवन का निर्धारण होता रहा है और आवश्यकता के अनुसार उसमें बदलाव भी आये हैं। मानव जीवन में संतुलन आवश्यक है। विकास का रास्ता विभिन्न कठिनाईयों से मुक्ति पाने को ध्यान में रखते हुए निर्धारित होता है। मनुष्य सदा परिश्रमी व प्रयत्नशील रहा है। लौकिक जगत में मानव द्वारा कुछ ना कुछ किया जाता रहा है। निरन्तर प्रयासों से सफलता मिलती रही है। पुराने व नये में संतुलन स्थापित करने का कार्य होता रहा है। एक सुस्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करके उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत रहने वालों लोगों का एक निश्चित दृष्टिकोण अपना कर मानव उन्नति में अपना सक्रिय योगदान देना मानव की नियति रही है। परिवर्तन की आवश्यकता हमेशा महसूस की गयी। परिवर्तन के लिए विभिन्न परिस्थितियाँ समय के अनुसार उत्पन्न हुयी। उनके अनुसार मानव ने अपना लक्ष्य निर्धारित किया। कुछ परिवर्तन सुनियोजित ढंग से नीतियाँ अपनाने के कारण आये जिन पर मानव समुदाय का नियन्त्रण रहा है। कुछ परिवर्तन स्वतः ही आते है जिन पर मानव का कोई नियन्त्रण नहीं होता बल्कि उन परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को बदलना पडता है। मानव समुदाय विभिन्नताओं व विविधताओं से भरपूर है। इन विविधताओं का सपयोग कर जो समाज संतुलन बनाकर चलता है वहां सकारात्मक परिवर्तन आते है और सम्पूर्ण समाज उन्नति की राह पर प्रशस्त होता है। विविधताओं को समझे बिना जहाँ वर्गो व समुदायों में विभेद किया जाता है। कुछ वर्गों के लिए तुतृष्टिकरण की नीति अपनायी जाती है। वहाँ समाज की प्रतिमा कंठित होती है व परिवर्तन का रास्ता नकारात्मक दिशा की तरफ हो जाता है उस समाज के पतन को बनावटी उपायों से नहीं रोका जा सकता। मानव समाज में विकास की प्रक्रिया सभ्यताओं के उद्भव से चल रही है। मानव विकास की विस्तृत जानकारी के लिए सर्वप्रथम मानव विकास का अर्थ जानना आवश्यक है।

मानव विकास का अर्थ :

जीवन हमेशा एक सा नहीं होता. उसमें किसी न किसी प्रकार के

बदलाव आते रहते है। समयान्तर्गत आये बदलावों में उचित तालमेलसंतुलन बिठाकर चलना ही मानव विकास की गति है। मानव विकास की गति को जारी रखते हुए उसे तेज भी किया जा सकता है व विकास की प्रक्रिया को अवरुद्ध भी किया जा सकता है। पूर्व की अवस्था को

त्यागकर जनसमुदाय के हित में नई अवस्था ग्रहण कर लेना विकास है। नई अवस्था सबके हितों की पूर्ति व सबके कल्याण के लिए होती है। इसमें मनुष्यों को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता। यह सतत प्रक्रिया है इसमें कभी कोई रुकावट या ठहराव नहीं आता है। जनसमुदाय के चाहने या न चाहने से भी इसमें कोई व्यवधान या बाधा नहीं आती है। गति को धीरे या तेज करने के लिए बाहरी उपायों का सहारा लिया जाता है. लेकिन बाहरी उपाय सदा प्रभावी नहीं होते है। बदलावों को रोका नहीं जा सकता,बल्कि सम्पूर्ण समाज को उनके साथ चलना पडता है। समाज यदि बदलावों के साथ नहीं चलता तो इस प्रकार के बदलाव सदा सार्थक नहीं होते है। ओ.पी. गाबा ने लिखा है कि "विकास वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कोई प्रणाली या संस्था अधिक सुदृढ़ विशाल व्यवस्थित कार्य कुशल प्रभावशाली तथा सन्तोषजनक रूप धारण कर लेती है। इनमें से कुछ लक्षण या उनसे मिलते जुलते लक्षण भी विकास का संकेत दे सकते है।"" विकास व्यक्तियों से शुरू होकर समाज व राज्य तक बदलाव लाता है। स्थिति में लाभदायक परिवर्तन होता है। विकास नये दृष्टिकोण व नये जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास है। उद्देश्य के अनुसार जीवन मूल्यों को आत्मसात कर लेने से विकास की उपयोगिता साबित हो जाती है।

विकास को जब मानव जीवन के साथ जोडा जाता है तो वह मानव विकास का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। मानव विकास, व्यक्तियों की इच्छाओं को विस्तृत करने वाला, अच्छा स्वस्थ व दीर्घायु देने वाला, शिक्षा व ज्ञान में अभिवद्धि करने वाला अच्छा व खुशहाल जीवन देने वाला है। इसमें व्यक्तियों के रोजगार और आय के स्त्रोत बढते है. सामाजिक सेवाओं में वशद्धि होती है और जनसमुदाय की भागीदारी बढती है। यह आर्थिक विकास की एक श्रेष्ठ रणनीति है। पाल स्ट्रीटीन तर्क देते है कि "मानव विकास श्रेष्ठ शिक्षा पर्याप्त पोषण स्वस्थ जीवन श्रमिकों की उत्पादक क्षमता बढ़ाने, व्यक्तियों की परिवर्तन के प्रति अपार क्षमता व स्वीकार्यता व स्थाई सरकार के लिए उपयुक्त सामाजिक व राजनीतिक पर्यावरण की स्थापना का प्रयास है। स्वतः स्फूर्तित विकास के प्रयास ही पर्याप्त नहीं हैजब तक बाहरी पर्यावरणइसको उचितसहायता नहीं करता है। मानव विकास व परिवर्तन के गरीबी की सभा की जानी चाहिये। गरीबी की समाप्ति के लिए किये गये प्रकाशमानविकास की गति का निर्धारण करते है। मनुष्य को सम्मानपूर्वक जीवन जीने की सुविधाएँ हो। स्वच्छता स्वास्थ्य सफाई शौचालय आदि की उचित व्यवस्था हो। प्रति व्यक्ति आय बढ़े व सभी को आवश्यक कैलोरी मिले और कोई भी कुपोषण से ग्रसित न हो। मानव विकास एक बहुपक्षीय अवधारणा है। इसमें भोजन स्वास्थ्य उचित पोषण साफ पानी सेनीटेशन आदि जीवन की भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक है। आर्थिक व भौतिक उन्नति के लिए शिक्षा व स्वास्थ्य की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। अमर्त्य सेन का मानना है कि उदारीकरण से भूमि सुधारों ने गति पकड़ी है और शिक्षा तथा स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हो रहा है। मानव विकास

रिपोर्ट 2003 का मानना है कि "गरीबी समाप्त हो घातक बीमारियों को खत्म किया जाय व आर्थिक साधन सभी को उपलब्ध कराये जाय तमी मानव उन्नति होगी।"*

विकास मानव समुदाय की एक बुनियादी आवश्यकता है।UNO ने दिसम्बर 1986 में विकास के अधिकार को स्वीकार किया। विकास का केन्द्रीय विषय मानव है जो विकास की प्रक्रिया का सक्रिय सहभागी और उसके लाभों का उपभोक्ता है। भावी पीढियों के हितों को विकास प्रक्रिया में शामिल करना होगा। विकास के नाम पर किसी को अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। किसी जाति या वर्ग को विशेषाधिकार (आरक्षण आदि) देकर तुष्टिकरण की नीति अपनाना भी विकास नहीं है। विकास तो सम्पूर्ण मानव समुदाय को साथ लेकर चलना है।

विकास की प्रक्रिया मानव समुदाय के हित के लिए चलायी जाती है। विकास की कुछ कीमत भी देनी होती है। एक वर्ग या जाति के लिए दूसरा वर्ग या जातिकीमत चुकाती है, तो ऐसी स्थिति में विकास के नाम पर किया गया कार्य झूठा है और विश्वसनीय नहीं है विकास की प्रक्रिया में उचित संतुलन आवश्यक है। किसी

उपेक्षा से उसमें अलगाव पनपता संगत अधिकार देने से विकास में संतुलन स्थापित होता है परन्तु 5 अधिकारों की मांॅग में अहंकार और झूठा दंभ प्रकट होता है। या जाति द्वारा संगठित होकर सरकार से अनुचित मांॅगों को माज को विकास की तरफ न ले जाकर पतन की तरफ ले कास में मानव समुदाय के सभी वर्गो जातियों व सम्प्रदायों कायोगदान रहे तो इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाना आसान रहेगा। स्थानी की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। वर्तमान समय विकास बदल गयी है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद या सकल राष्ट्रीय आय के बजाय सकरन राष्ट्रीय कल्याण को विकास की कसौटी माना जाने लगा है।RS

प्रकृति स्वयं गतिशील व विकासशील है। प्रकृति पर नहीं है: मनुष्य जाति अपनी गति से अधुरापन दूर करके पूर्णता की और बढ़ती है। युष्य के विचार परिष्कृत होते है। अपरिष्कृत विचारों में विभिन्न प्रकार की बुराईयों पायी जाती है। परिष्कृत विचारों में बराईयों पर विजय प्राप्त कर उन्हें समाप्त कर दिया जाता है।

मानव समुदाय समूहगत होकर विकास के बारे में ज्यादा प्रयास करता है। वंश जाति क्षेत्र हितों में एक रूपता व वैचारिक समानता के आधार पर संगठित होकर तीव्र विकास को सुगम बनाया जा सकता है। संकुचित सीमाओं को लांघकर व्यापक दायरे में विकास की

संकल्पनाएंँ तैयार करने के लिए विचारो तौर-तरीको व संस्कृति में भी व्यापकता व उदारता लाना आवश्यक है।

व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन व प्रकृति के बीच उचित तालमेल सुगम विकास का रास्ता है। व्यक्ति के विचारों व समाज के विचारों में अन्तर्समाज में संकट को आमंत्रित करता है। आदिम मानव मौलिक था। उसकी मौलिकता का हरण होते ही स्वाभाविक विकास अवरूद्ध हो गया। बनावटी उपायों से विकास को निर्धारित किया जाने लगा,इससे उपायों की विविधता व बहुलता बढ़ने लगी। प्रकृति द्वारा सजित व्यवस्था में आत्मसंतुलन है। प्रकृति की मौलिक व्यवस्था से छेड़छाड़ विकास के चक्र को उलट देती है। मौलिक, नैतिक व सृजनकर्ता मानव आत्मसंतुष्ट, अहिंसक, प्रकृति प्रेमी व व्यवस्था समर्थक था। वह अपने विकास को पहचानता था और उसके अनुसार ही अपना आचरण करता था।

मौलिक व्यवस्था और मौलिक मानव में स्वतः विकास का चक्र है जो सृष्टि के संचालन के साथ-साथ चलता रहता है।

ऐसा मानव हृदय से पवित्र व निर्मल, पाप, अधर्म व बराईयों से दूर होता है। इसमें श्रेष्ठ विकास संभव है परन्तु इस मौलिक व्यवस्था में परिवर्तन के कारण मूल विकास अवरुद्ध हो जाता है। जब विकास के लिए नये सिरे से सोचना पड़ता है। हृदय की पवित्रता,भौतिकवाद के हावी होने से मैली हो जाती है अतः भौतिकवाद को कम करने या उसे नियंत्रित रखने पर ही विकास के बारे मेंसोचा जा सकता है। हृदय की पवित्रता विचारों की शुद्धता व का अनुकूलता पर निर्भर करती है। कर्म की शुद्धता से हृदय पवित्र होता है। हनीपतिता से मानव विकास सीधा जुड़ा हुआ है। हृदय की पवित्रता में बहुत सी अवधारणाएँ व बहत से पक्ष शामिल है जिनका उचित संचालन करके समयको पवित्र रखकर मानव विकास में गति लायी जा सकती है। मनुष्य की सारी गतिविधियाँ मानव हृदय से जुड़ी हुई है। अतः हृदय यो श्रेष्ठ कर्मों से पवित्र व निर्मल बनाया जा सकता है। पाप-पुण्य,धर्म-अधर्म आदि नैतिकता से जुडे हये है। नैतिक मनुष्य श्रेष्ठ है तथा अनैतिक मनुष्य में सारी बराईयाँ पायी जाती है। नैतिकता में पतन ही मानव विकास में पतन है। इस पतन को रोकने के लिए नैतिकता का स्वःप्रेरणा से पालन की आदर्श समाज की स्थापना है। बुरे विचारों से विहित होने पर नैतिकता का पालन संभव है। मनुष्य में जैसे ही बरे विचार आते है. उसकी नैतिकता सो समाप्त हो ही जाती है. इसके साथ जसे बहुत से अन्य उपाय भी करने पडते है। इन उपायों की पर्ति में मनुष्य अपनी मौलिकता खो देता है तथा वह इन उपायों के कुचक्र में फसकर स्वयं व समाज के पतन में लग जाता है। एक कमी व बुराई को न्यायसंगत ठहराने के लिए

अन्य कई बुराईयों व अवगुणों का सहारा लेता है. अन्ततः व्यवस्था विरोधी और विकास विरोधी बन जाता है।

समकालीन व्यवस्था में मानव विकास एक सरल उपाय नहीं है। जिस समाज में विविधता और जटिलता हो l वहाँ मानव विकास की सरल अवधारणा को सुगम नहीं माना जा सकता। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व प्रकृति में उचित तालमेल बिठाकर समाज को अशान्ति,संघर्ष, विरोध व अव्यवस्था से मुक्ति दिलाई जा सकती है। शान्त समाज,मानव विकास की पूर्व पृष्ठभूमि है। अन्य उपाय व अन्य तरीके बाद में काम करते है। शान्त व व्यवस्थित समाज में समद्धि उन्नति, समन्वय, संतुलन व विकसित तथा वैज्ञानिक मानसिकता पायी जाती है,विकास की पृष्ठभूमि तैयार होती है।

मानव विकास की अवधारणा का स्वरूप :

मानव विकास की अवधारणा पुरानी है। इसमें मानव को प्रत्येक गतिविधि का केन्द्र माना गया है। प्राचीन यूनान से यह मान्यता चली आ रहीं है। ईसा मसीह ने माना कि सृष्टि की सभी चीजों का निर्माण मनुष्य के प्रयोजन के लिए किया गया है। यहूदी परम्परा में भी यह माना जाता है कि सर्वोच्च शक्ति ने सृष्टि को मनुष्य के लिए निर्मित किया है। मनुष्य ने सबको नाम देकर उन पर अपना अधिपत्य जमाया। सारे धर्म ईश्वर या सर्वोच्य शक्ति को केन्द्र माने हुऐ है। विभिन्न संस्कृतियाँ मानव केन्द्रित है। चर्म की व्याख्याओं में मानव का आरोहण होने पर सम्पूर्ण गतिविधियों का केन्द्र ईश्वर की जगह मानव को बना दिया गया। पुनः जागरण धर्मसुधार आन्दोलन व छायावाद इसके श्रेष्ठ उदाहरण है। तब से अलौकिक जगत कमजोर व लौकिक जगत शक्तिशाली बनता चला गया है। वैसे तो मानव हर युग में महत्वपूर्ण रहा है। परन्तु आधुनिक युग में यह अधिक महत्वपूर्ण हुआ है। मानव के बढ़ते महत्व ने विकास को प्रासंगिक बना दिया है। विकास एक अनन्त प्रक्रिया है जो आदिकाल से चली आ रही है। अब भी विकास की प्रक्रिया जारी है तथा भविष्य में भी यह चलती रहेगी। विकास की दिशा क्या है यह महत्वपूर्ण है।

मानव विकास का विचार सदा से चर्चित रहा है। किस प्रकार के विकास को मानव विकास माना जाये. हमेशा इस पर विचार होता रहा है। समाज में विभिन्न तरह के लोग रहते हे। उनकी आवश्यकता, हित, स्वार्थ व संघर्ष भी विभिन्न प्रकार के होते है। उनमें एकरूपता का अभाव होता है।

Sunitha

इस कारण विभिन्न तरह के लोग अपने-अपने हितों का प्रतिनिधित्व करते है।

सर्वप्रथम मानव विकास सामाजिक स्वरूप में प्रकट होता है। सामाजिक संरचना से मानव जीवन की शुरूआत होती है। मूल मानव स्वाभाविक व दोषों से रहित है। सामाजिक स्वरूप की जटिलता से विकास प्रक्रिया में भी जटिलता आती जाती है। सामाजिक जीवन समय के साथ वर्गों, सम्प्रदायों, समूहों व जातियों में विभाजित होता जाता है। मानव अपनी पहचान इन विभिन्न समूहों में खोजता है। मानव की एकता खण्डित होने लगती है। स्वाथों के वशीभूत होकर समाज के लोग मानव के विकास को भूलकर जोर देना और स्वयं के स्वार्थों की पूर्ति करना कोई बुरी बात नहीं है परन्तु सम्पूर्ण समाज के हितों पर व्यक्तिगत स्वार्थों और हितों को प्राथमिकता देना, सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया को नकारना है। व्यक्तिगत स्वार्थों और कार्यों के स्थान पर सामूहिक कार्यों को महत्व देना विकास की प्रथम सीढी है। इसके साथ सामाजिक प्रक्रिया में गतिशीलता भी आवश्यक है। एम.एन. श्रीनिवास ने कहा है कि "यह निश्चित ही सही है कि सामूहिक गतिशीलता आधुनिक

की अपरिहार्यता पर कई प्रश्न चिन्ह उत्पन्न हुऐ। अब निर्विवाद रूप से राजनीतिक प्रक्रिया की आवश्यकता सुस्थापित हो चुकी है। राजनीतिक संगठनों में सबके हित के लिए काम किया जाता है। सर्वहित से ही सर्व कल्याण होता है तथा सर्व कल्याण ही मानव विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। राज्य अनिवार्य संस्था होने के कारण सभी को राज्य में रहना अनिवार्य है।

के अनिवार्य रूप से राजा रहने के कारण सदस सहयोग को बढ़ाती है। इससे मानव विकासमा ti राजनीतिक व्यवस्था ही विकास के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार है। समानता व स्वतंत्रता का वातावरण राजनीतिक व्यवस्था में हीऔ मानव विकास के लिए दोनों आवश्यक है। इनकी प्राप्ति पूरा मानव समुदाय लाभान्वित होता है। कानूनसम्प्रभुता, विधि आदि राज्य के अधीन रहते हुए मानव विकास के कार्य में लगे रहते है। राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास भी राजनीतिक व्यवस्था में अधिक कुशलता से होता है। राजनीतिक व्यवस्था सम्पूर्ण व्यवस्था के केन्द्र में स्थित है। इसका कुशल संचालन ही मानव विकास का निर्धारण करता है।

भौतिक विकास का एक पक्ष आर्थिक विकास भी है। कई बार आर्थिक विकास को ही वास्तविक विकास मान लिया जाता है। परन्तु आर्थिक विकास वास्तविक विकास नहीं है। यह विकास का एक पक्ष है। अर्थव्यवस्था का दायरा व्यापक है। इसमें आर्थिक जीवन के विभिन्न पक्ष शामिल है। अर्थ व्यवस्था में सर्वप्रथम राष्ट्रीय संसाधनों को महत्व दिया जाता है। इसमें नदी, पहाड़, खेत, प्राकृतिक व खनिज पदार्थ आदि सभी शामिल है। इन संसाधनों

पर जिसका नियंत्रण होगा, वह पूरे समाज को नियंत्रित करेगा। नियंत्रण संसाधनों से समाज की तरफ रूपान्तरण होता है। प्राकृतिक संसाधन अत्यधिक महंगे होते हैं उन पर नियंत्रण करके अत्यधिक कमाई की जा सकती है। इससे विकास के लिए रास्ता तैयार किया जा सकता है। प्रतिव्यक्ति आय और कुल राष्ट्रीय आय की गणना करके भी विकोस की दिशा निर्धारित की जा सकती है। आधुनिक युग में जो देश प्राकृतिक संसाधनों में जितना समृद्ध है विकास की संभावनाएँ उस देश में उतनी ही अधिक है। उत्पादन के साधन व उत्पादन के संबंध भी वास्तविक अर्थव्यवस्था का निर्धारण कर है। यह पहले अर्थव्यवस्था को गति देते है फिर राजनीतिक व्यवस्थाक नियंत्रित करते हैं। आधुनिक युग में राजनीतिक व्यवस्था स्वयं स्वतंत्र नहीं है। उस पर अन्य पक्षों के नियंत्रण के अलावा अर्थव्यवस्था का सर्वोच्य निर्देश होता है। जब भी अर्थव्यवस्था के स्वरूप को बदलने का प्रयास किया जाता है राजनीतिक स्वरूप और मानव विकास का स्वरूप भी बदलने लगता है। मानव विकास कोई स्वतंत्र गतिविधि नहीं है बल्कि इसका निर्धारण विभिन्न पक्षों से होता है।

धर्म आदिकाल से ही मानव की गतिविधियों का प्रमुख क्षेत्र रहा है।

समय के साथ धार्मिक विचारों में परिवर्तन आया है। शुरू में मनुष्य सारा जीवन प्रधान था। धर्म के इर्द-गिर्द ही सारी गि थी। मनुष्य के जीवन का कोई भी पक्ष धर्म से अछूता नहीं था। धर्म के आधार पर ही निर्धारित होता था।अतः धर्म में जो विकास यही मानव विकास मान लिया जाता था। जीवन में धर्म की प्रधानता के बाद मानव विकास अवरुद्ध होने लगा। धर्म का उददेश्य सामूहिक कल्याण होकर व्यक्तिगत हितों की पूर्ति करना हो गया। सैकड़ो वर्षों तक स्थिति चलती रही। मानव विकास गौण विषय हो गया। आधुनिक युग की सुरुमा के बाद धर्म की वास्तविक स्थिति को समझकर जीवन के मूल्यो की नई शुरुआत की गयी। बदली हयी परिस्थितियों में धर्म के साथ जीवन के अन्य पक्षों को भी महत्व दिया गया। आधनिक युग में ही मानव समुदाय का संतुलित जीवन आरम्भ हुआ है। अब धर्म वर्चस्व की स्थिति में नहीं है। अन्य पक्षों के समान ही इसकी भूमिका है। धर्म मनुष्य को अपने कर्तव्यों बोध करता है। धर्म मनुष्य के जीवन का अहम पक्ष है। यह मन शुद्ध करत सी भी प्रकार के भय से बाहर निकालता है। धर्म जीवन में है। किसी शान्ति व सम्पन्नता लाता है धर्म के माध्यम से लौकिक और अलौकिक का ज्ञान होता है। एक सर्वोच्च शक्ति के बारे में चिन्तन मनन किया जाता है। धर्म के माध्यम से मानव स्वयं को ईश्वर या सर्वोच्च शक्ति से जोढता है और मानव कल्याण के बारे में सोचता है। धर्म मनुष्य को प्रेरित करता है। प्रेरणा प्राप्त करके मनुष्य, मानव विकास के कार्य में लग जाता है। मानद विकास के लिए धर्म प्रेरणा का स्त्रोत है, इस प्रेरणा से नवीन सृजन होता है।

नैतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र भी मानव विकास का एक पहलू है। नैतिकता में शुभ-अशुभ पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा आदि शामिल है। नैतिकता परम्पराओं व रीति-रिवाजों पर आधारित होती है। धर्मशास्त्र नैतिकता के निर्धारण के लिए प्रमुख भूमिका निभाते हैं। नैतिकता का कानूनी आधार नहीं है।, लेकिन इसकी स्वयं की अलग से सत्ता है। नैतिकता से समाज का सकारात्मक वातावरण बनता है। नैतिकता के पालन से मन में नई ऊर्जा आती है। बुरे कार्यों को करने से डर लगता है। नैतिकता की भावना विद्यमान होने से मनुष्य सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा ग्रहण करता हैं मनुष्य अतीत, वर्तमान व भविष्य का ध्यान रखता है। नैतिकता से कर्त्तव्यों की शुद्धि परबल दिया जाता है। बरे कर्मों से मनुष्य पहले ही जरने लग जाता है। नैतिकता बरे कर्मों के बंॅधनों से मुक्ति है। बरे कर्मों से मुक्त होकर मानव विकास की ही सोचता है।

आध्यात्म मनुष्य के हृदय को पवित्र करता है। इसमें ईश्वर पृथ्वी वायु ध्यान,साधना, तपस्या आदि पर चिन्तन किया जाता है। ये सब पहलू किसी ना किसी रूप में मनुष्य से जुड़े हुऐ है। आध्यात्म के विभिन्न पहलुओं से मनुष्य को ऊर्जा मिलती है जिसका वह सकारात्मक प्रयोग मानव विकास में करता है।

आधुनिक युग में धर्म ओर आध्यात्म को इतना अधिक महत्व नहीं दिया जाता। केवल भौतिक विकास को ही मानव विकास माना जाता है. परन्तु वास्तविक मानव विकास नैतिकता व आध्यात्म के क्षेत्र में ही है इससे मनुष्य के मन में व्याप्त दर्गण बाहर निकलते है। मन पवित्र होता है। सदाचार और सरलता को बहतायत से अपनाया जाता है। नैतिकता और आध्यात्म से राजनीति व्यवस्था में निरन्तरता सक्रियता और शुद्धता आती है। ऐसी स्थिति में मानव विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ मिलती है।

महात्मा गांॅधी के अनुसार मानव विकास :

भारत में चिन्तन, मनन, भक्ति, कर्म आदि की पुरानी परम्परा रहीं है। महान कर्मयोगियों का यह देश रहा है। इसमें चिन्तन के साथ कर्म की भी बराबर पूजा की जाती रहीं है। आध्यात्म और भौतिक विकास साथ-साथ चलते रहे है। "अन्न,वस्त्र व जीवन की अन्य अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रचुर साधन भारत में उपलब्ध होते रहे है। भारत के लोग वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता पुराण, त्रिपिटिक, अर्थशास्त्र, कामन्दकीय नीतिसार, शुक्रनीति, चाणक्य नीति, विदुर नीति व सम्पूर्ण भक्ति साहित्य से प्रेरणा लेते रहे है।" भारत में विचारों, मान्यताओं, संस्कारों और आदर्श मूल्यों का निरंतर चलन रहा है जिनका पालन करके भारत के लोग श्रेष्ठ जीवन बिताते रहे है और अभावों तथा अभियोगों से मुकाबला करते रहे है। आधुनिक युग में महत्मा गाँधी जी के भारतीय राजनीती में पदार्पण के बाद नये

समीकरणबने है। महात्मा गांँधी सच्चे मानवतावादी थे। मानव के वे श्रेष्ठ अध्ययनकर्ता थे। वी.पी. वर्मा के अनुसार "गांँधी मानव मात्र की आध्यात्मिक एकता तथा व्यक्ति की नैतिक इच्छा की अवधारणाओं में आस्था रखते थे।" गोपीनाथ धवन के अनुसार "गांँधीजी मानव की धार्मिक प्रकृति को मूलतः अच्छी मानते थे।" मनुष्य के ज्ञान को अल्प मानते थे। उन्होंने कहा कि "परमात्मा की सम्पूर्णता का वर्णन मानव मात्र के लिए असंभव ही है।"" गांधीजी सत्य से बड़ा कोई लक्ष्य नहीं मानते थे क्योंकि अन्त में जीत सत्य की ही होती है। गांँधी जी का विश्वास था कि इस सम्पूर्ण स मनुष्य ने केवल अपने आंशिक सत्य का अनुसरण करके तथा प्रार्थना और श्रद्धा के मार्ग पर चल कर ही प्राप्त कर सकता है बल्कि उसे इस केलिए एक कर्मयोगी की तरह, मानव सेवा का मार्ग भी अपनाना पडेगा। अन्त में सत्य रूपी परमात्मा की प्राप्ति के चरम आदर्श तक की सेवा के द्वारा ही पहुंँच सकता है।

मानव प्रकृति :

महात्मा गांधी ने मानव विकास से पहले मानव प्रकृति किया। गांधी की मानव प्रकृति की अवधारणा उनके सम्पूर्ण दर्शन है। वे शारीरिक और सांस्कृतिक दो पहलूओं में सांस्कृतिक पहलू को देते है। शारीरिक पहलू के बारे में गांधीजी मानते थे कि मनुष्य उसके पिछले जन्म के पापों का फल है, इसलिए उसकी शारीरिक नश्वर है पाश्विक है, राक्षसी है। यदि मनुष्य के शरीर का विश्लेषण जाय, तो उसमें केवल मांस, हडिडयों और खून के गंदे व बदबूदार दे सिवा कुछ भी नहीं निकलेगा।" मानव शरीर को आत्मा जीवित छ। जो सत्यरूपी निराकार परमात्मा का अंश है और जो मनुष्य के इदा रहकर उसके जीवन को वैसे ही संचालित करती है जैसे परमात्मा सो ब्रह्मण्ड को संचालित करता है। यह पवित्र आत्मा मनुष्य के अपवित्र में वास करती हैं मनुष्य अपने शरीर को भीतर और बाहर से स्वच्छ रा तथा अपने सूविचारों एवं कर्मों से ही उसे प्राप्त कर सकता है। इस प्रका यह सत्यरूपी परमात्मा,जो सारे ब्रह्मण्ड का संचालन करता है एक ब्रह्म शक्ति हैं उसका अंश जो आत्मा के रूप में हमारे अंदर बसता है. हमारे आन्तरिक देवी शक्ति है। प्रो. विद्या जैन के अनुसार "गांँधी विश्वास करते थे कि जीवन की एकता समानता सभी क्षेत्रों में विस्तृत है जीवन को सामाजिक राजीनीतिक, आर्थिक, नैतिक, अथवा आध्यात्मिक क्षेत्रों में नहीं बांँटा जा सकता।यदिसमाज का एक पक्ष पीडा में होता है तो सम्पूर्ण समाज पीडा महसूस करेगा। यह आपसी सहयोग व समझ की बता है। गांँधी ने कहा कि ईश्वर ने मनुष्य की रचना एक शाकाहारी प्राणी के रूप में की है। अतः उसे अहिंसक रहना चाहिये। भारतीय विचारधारा के अनुसार उन्होंने जीव दया का सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया। प्रकृति ने पशुओं को शरीर हिंसा करने वाला और मानव को शरीर हिंसा न करने वाला बनाया है। गांधीजी ने कहा कि मानव में बहुत सारे गुण पाये जाते है जैसे जीवदया, निकटतम तथा प्रियतम की सेवा, विश्व सेवा, मनुष्य का फलाहारी

होना आदि। उन्होंने लोगों को अपनी आत्मा की आवाज सुनने और उसका अनुसरण करने के लिए भी प्रेरित किया।

गांँधी जी ने मानव की सांस्कृतिक प्रकृति को प्राथमिकता दी। उनके अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जो न केवल अपनी दैविकता के प्रति जागरूक हैबल्कि वह एक विवेकशील और सामाजिक प्राणी भी है। गांँधीजी की यह मान्यता थी कि इस दुनिया में जो कुछ भी है वह सब परमात्मा का दिया हुआ है और परमात्मा ही वह चरम शक्ति है जो सारे ब्रह्मण्ड का संचालन करता है। मनुष्य को भी परमात्मा ने ही जन्म दिया है और वही उसके जीवन का संचालन भी करता है। गांधीजी मानते थे कि "मनुष्य को दैवी शक्ति का ज्ञान है। इसलिए यदि वे चाहे तो अपनी आत्मा की आवाज को सुन सकते है और उसके अनुसार अपने और अपने समाज तथा राज्य का संचालन कर सकते है जिससे वे न केवल खुद अच्छे से अच्छे बन सके बल्कि अपने समाज व राज्य को भी अच्छा से अच्छा बना सके।" गांँधी जी ने "परमात्मा रूपी आत्मा को परमात्मा की आवाज 'सत्य की आवाज', 'परमार्थ की आवाज',, 'दया की आवाज', 'बंँधुता की आवाज', प्रेम की आवाज', और आन्तरिक आवाज' के विभिन्न नामों से पुकारा है।""आत्मा को परमात्मा का अंश बताते हुए उन्होंने मनुष्य को परमत्मा तो नहीं माना,

परन्तु परमात्मा से दूर भी नहीं माना। वे अक्सर इस्लाम दर्शन की इस कहावत को दोहराते थे। "आदम खुदा नहीं लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।" गांधीजी ने आत्मा में वे सभी गुण देखे जो उन्हें परमात्मा में दिखाई दिये। वे कहते थे जैसा परमात्मा वैसी आत्मा। वे मानते थे कि परमात्मा निराकार है। परन्तु अजर अमर है। परमात्मा रूपी शक्ति का अंश हमारी आत्मा है। आत्मा मनुष्य का जीव है। गांँधी ने परमात्मा को सच्चिदानंद प्रेम, सुन्दरता, भौतिकता, कानून, न्याय, भलाई, परमार्थ व दया का रूप ही नहीं बताया, बल्कि एक ऐसी शक्ति के रूप में भी उसका चित्रण किया जिसकी लोकतंत्र में आस्था है. और जो हर एक को अच्छा काम करने के लिए और बुराई से बचने के लिए प्रोत्साहित करती है. प्रेरित करती है। गांधीजी ने माना कि सत्य ही ईश्वर है तथा इसी सत्य रूपी परमात्मा का अंश हमारी आत्मा है. अतः आत्मा में वे सब गुण है जो परमात्मा में है। मनुष्य जब अपनी शारीरिक क्षमताओं का सहारा लेता है तो पाशविक होता है. हिंसा करता है. और जब वह अपनी आत्मा का अनुसरण करता है तो हिंसा से दूर ही रहता है क्योंकि परमात्मा एक अहिंसक शक्ति है। अत आत्मा भी मनुष्य को अहिंसा के लिए प्रेरित करती है।

वे मनुष्य को एक विवेकशील. तार्किक व राजनीतिक प्राणी मानते थे। वे कहते थे कि मनुष्य में विवेक, तर्क, मनन व चिन्तन की क्षमता है और इसी क्षमता के आधार पर मनुष्य सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय भलाई और बराई तथा सही और गलत में विभेद कर सकता है।

रामरतन के अनुसार 'मनुष्य की प्रकृति में तीन शक्तियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है ये है ईश्वर इच्छा, मानव प्रयत्न, और परिस्थितियाँ।"

गांँधी जी चाहते थे कि हर मनुष्य अपनी शारीरिक,मानसिक व आत्मिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपने निकटतम या प्रियतम के कल्याण में लग जाये तो कल्याण करने वालों की एक कभी न समाप्त होने वाली विश्वव्यापी श्रृंखला बन जायेगी,जिसमें हर व्यक्ति, हर परिवार, गाँव, कस्बा, जिला प्रान्त व राज्य सभी अपने निकटतम तथा प्रियतम के कल्याण में लगे रहेंगे।

हर युग में, प्रत्येक विचारक के विचारों का केन्द्र बिन्दु मानव रहा है। जर्मन विद्धान मैनहीम का विश्वास है कि "केवल मात्र व्यक्ति की पुनः रचना द्वारा ही समाज का पुनः निर्माण संभव है। गांँधीजी का उद्देश्य समाज के किसी विशेष अंग का पुनर्गठन न होकर मानव के समस्त अस्तित्व ।का पुननिर्माण था। "गांँधीजी एक सुधारक नहीं थे।" अन्य सामाजिक क्रांतिकारी चिन्तकों की भाँति जीवन की समस्याओं के प्रति उनका भी एक विशिष्ट उपागम था। जे.बी. कश्पलानी के अनुसार "उनकी योजनाओं और परिकल्पनाओं में व्याप्त संश्लीष्टता गांँधी कार्यक्रम को एकक समग्र बनाती है। यह अपने विशिष्ट सिद्धान्त के साथ ही अपने में पूर्णांग दर्शन का रूप धारण करता है। 20 गांँधीजी मानते थे कि "जीवन एक प्रेरणा है. इसका लक्ष्य पूर्णता के लिए प्रयत्नशील रहना है जो आत्मोपलब्धि ही है। " सत्यके साथ प्रयोग में गांँधीजी ने लिखा है कि "जो मैं उपलब्ध करना चाहता है,जिसकी उपलब्धि के लिए मैं इन तीस वर्षों से प्रयत्नशील और लालायित हूँ वह आत्मोपलब्धि है,ईश्वर का साक्षात्कार है, मोक्ष की प्राप्ति है। गांधीजी मानव जाति की परिपूर्ण एकता में विश्वास करते थे। अतः वे मानव जाति से अपना पूर्ण तादात्म्य मानते थे। उनकी दृष्टि से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनुष्य की विविध, प्रचेष्टाएँ एक दूसरे से सर्वथा कटी हुयी न होकर परस्पर संबंद्ध है और वे मिलकर संहत, अन्वित समग्र की रचना करती है।

मानव विकास :

गांधीजी मानते थे कि न तो बैलेट से तथा न ही बुलट से परिवर्तन तथा मानव विकास होगा बल्कि मस्तिष्क और आत्मा में क्या हो रहा है इससे ही परिवर्तन व मानव विकास होगा। महात्मा गांधी मानव विकास के समुद्र थे। मानव विकास के लिए वे आन्तरिक जागश्शत के पक्ष में थे। वे गीता के द्वितीय अध्याय से प्रेरणा लेकर कर्म में विश्वास करते थे। वे स्वयं की गतिविधियों और स्वयं पर निर्भरता को अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। चरखा,मानव विकास और आन्तरिक जागश्ति का प्रतीक है। स्वराज की शिक्षा,चरखे की शिक्षा है। गांधी के

विचार केवल भारत के लिए नहीं थे, बल्कि पूरी मानव जाति के लिए थे। उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज में व स्वयं में बहुत सारे परिवर्तन आये या और विकास हुआ। उनकी मान्यता थी कि जीवन में मानवीय मूल्यों की सर्वोच्चता हो, बाजार की ताकत मनुष्यों को नियंत्रित न करें। दरिद्रनारायण की सेवा ही सर्वोच्च सेवा है। गांधी जी के अनुसार मानव विकास में नैतिक विकास, शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का विकास, सामाजिक न्याय, अधिकारों और

स्वतंत्रता का विकास, आत्मनिर्भरता व ग्रामीण विकास, रोजगार और अतिरिक्त आय से गरीबी की समाप्ति आदि शामिल है। गांॅधी जी मानव विकास में शरीर,मस्तिष्क और आत्मा का संतुलित विकास चाहते थे। गांॅधीजी के अनुसार मानव विकास केवल मौतिक और आर्थिक विकास ही नहीं है, यह नैतिक विकास भी है। इसमें स्वतंत्रता, समानता और मानवीय मूल्य निहित है। यह अन्याय से लड़ने का साहस पैदा करता है। मानव विकास का विकेन्द्रीकरण, सामुदायिक अर्थव्यवस्था, आत्म निर्भरता, लघु उद्योग, ग्रामीण विकास, वैज्ञानिक तकनीक का उचित प्रयोग और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था से अधिक संबंध है। गांॅधीजी के अनुसार मानव विकास बहुत सारे पक्षों से स्पष्ट किया जा सकता हैंहै आत्मा को बोध हो हो जाता है कि शरीर आत्मा से पूर्णतया भिन्न है तो व्यक्ति आत्मा को यथार्थकी सभी बाधाओं को पार कर लेगा और आप पर हो जायेगा आत्मा मनुष्य का जीव है। आमाह मनुष्य को जीवित रखती है भले-बुरे का निर्णय करती है। यही मनुष्य के विचारी कार्यों का संचालन करती है। आत्मा में परमात्मा बसते है। आरा के कण-कण से मिलकर परमात्मा बनते है। नैतिकता पर निर्ण सरीर नहीं आना करती है। आत्मा के निर्णय शुद्ध होते है। इसमें रामदेवैरभाव विद्वेष नहीं होता है। आत्मा स्वयं के स्वार्थ की पूर्तिक सीमित नहीं रहती है आत्मा परी मानवता का हित सोचती है। आत्मा की आवाज सत्य की आवाज होती है। आत्मा से सत्य ही निकलता है। आत्मा की आवाज वास्तविक आवाज, मानवता की आवाज दरिद्रनारायण के हितों। की आवाज होती है। आत्मा में व्यापकता, विशालता, विविधता, कोमलता संवेदनशीलता, सत्यता, दूरदर्शिता और विनम्रता है। जिसने आत्मा को पहचान लिया. उसने सबको पहचान लिया. परमात्मा को पहचान लिया. सारे संसार को पहचान लिया. सारी मानवता को पहचान लिया। ऐसी आत्मा मानव के विकास का मूल आधार है। मानव के विकास की नींव है। ऐसी आत्मा सम्पूर्ण मानवता का सार है। सारा संसार उस आत्मा में निहित है. वह आत्मा मी सारे संसार में समाही हई है। शरीर क्षणिक हैआत्मा स्थाई है. शाश्वत है सार्वभौमिक है तथा वह आत्मा ही परमात्मा है। आत्मा परमात्मा का अंश है। आत्मा में परमात्मा छिपा हुआ है। गांधी जी के अनुसार आत्मा का बड़ा रूप परमात्मा है जो निरपेक्ष निराकार, शाश्वत, सार्वभौमिक व सच्चिदानंद है, जिसमें प्रेम, सुन्दरता, भौतिकता. कानून, न्याय, भलाई. परमार्थ और दया के गुण निहित है तथा जिसकी

लोकतंत्र व मानव विकास में निष्ठा है। गांधीजी के अनुसार परमात्मा को कही भी तलाशने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह तो सर्वत्र विराजमान है. सबमें है. सब जगह व्याप्त है। वह दुनिया का निर्माता है। सब व्यक्ति यदि अपनी आत्मा का अनुसरण करे तो सबका एक दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार होगा, हिंसा का त्याग करके शान्ति का मार्ग अपनायेंगे। परमात्मा स्वयं अहिसंक है। आत्मा के अनुसार चलने से गरीब मानव की पहचान होगी। बेसहारा व असहाय व्यक्ति के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होगी। समाज के दीन,हीन, अपाहिज, बेबस, लाचार, बाध्य, उत्पीडित, शोषित, दुःखी और कमजोर व्यक्ति की आत्मा के द्वारा पहचान कर ली जाये और शरीर आत्मा के अनुसार चलने लगे, तो इन सबका विकास होने लगेगा।सच्ची मानवता की पहचान होगी तभी मानव विकास के लिए पृष्ठभुमिवार होगी। इस प्रकार मानव विकास, आत्मा से शुरू होकर परमात्मा (ईश्वर) को आत्मसात करते हुऐ सम्पूर्ण सृष्टि में नये विकास की मंजिल तैय करेगा। ऐसा मानव विकास सर्वव्यापक व सर्वगुण सम्पन्न होगा, जिसमें कोई कमी और बुराई नही होगी, बल्कि अच्छाई और सुन्दरता ही होगी। वह स्वयं आत्मा व परमात्मा का विकास भी होगा। सामाजिक विकास

गांॅधीजी की सामाजिक व्यवस्था सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सामाजिक व्यवस्था में समानता और न्याय हो सत्य व अहिंसा का पालन हो तथा लोग सेवाभावी और आत्म निर्भर हो, अन्याय और शोषण न हो. समाज की संरचना विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त परे हो तथा लोगों में त्याग और बलिदान की भावना पायी जाये। मानव के सामाजिक विकास के लिए गांधीजी सुधार सुझाने के बजाय अपनी नई व्यवस्था के सुजन की बात करते है।

वर्णाश्रम व्यवस्था :

गांॅधीजी ने नये समाज की रचना की बात कही। वैदिक वर्ण व्यवस्था से समाज का सूजन हो । वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर हो, जन्म के आधार पर नहीं हो। इसमें श्रेष्ठता ऊँचता, नीचता, छुआछूत आदि नहीं हो। गांॅधीजी की वर्ण व्यवस्था लोगों को बाँटती नहीं है. जोडती है। इस वर्ण व आश्रम व्यवस्था में जाति का कोई स्थान नहीं है। जातियाँ समाज के निम्न सोच का परिणाम है। शुद्ध वर्ण के साथ असमान व दमनपूर्ण व्यवहार की उन्होंने निन्दा की। उन्होंने सारे वर्णों को समान माना। कर्म के अनुसार वर्ण व वर्ण के अनुसार व्यवसाय पर गांॅधीजी ने जोर दिया। यहीं समाज के संतुलित विकास का मंत्र है। गांधीजी ने कहा कि "अपने-अपने व्यवसाय से जुड़े हुऐ किसी भी व्यक्ति को स्वयं के निर्वाह के लिए आवश्यक साधनों से अधिक पर नैतिक अधिकार नहीं होगा। मेरी वर्ण व्यवस्था का सार यही है। गांधीजी ने माना कि "वर्ण और आश्रम व्यवस्था आपस में जुड़कर अधिक सार्थक होती है। ये एक दूसरे पर निर्भर और पूरक है।""

हरिजनोद्धार :

गांॅधीजी ने हरिजनों के उद्धार के लिए सर्वाधिक रचनात्मक कार्य किया। यह मानव विकास और समाज के पुनः निर्माण के लिए महत्वपूर्णसीढी थी। गांॅधीजी ने अस्पृश्यता को सामाजिक कलंक माना। गांधीजी ने हरिजनों के उद्दार के लिए सर्वाधिक रचनात्मक कार्य किया। यह मानव विकास व समाज के पुनः निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सीढ़ी थी। उन्होंने माना कि "अस्पृश्यता मिथ्या अभिमान और स्वार्थवश्ति का ही सामाजिक रूप है और आत्मा का हनन करने वाला घोरतम पाप है। 28 अस्पृश्यता अनैतिक है समाज पर बदनुमा दाग है और मानवता के विरूद्ध क्रूरतम अपराध है। इससे समाज में असमानता,अनैतिकता और क्रूरता बढती है तथा मानव का विकास अवरूद्ध होता है यह शास्त्र सम्मत नहीं है। यह हिन्दू धर्म की परम्परा नहीं है, यह तो सामाजिक विकृति है जो अब स्थाई हो गयी है। मानव समाज के विकास के लिए जाति प्रथा व अस्पृश्यता को तुरन्त बंद कर देना चाहिये। गांधीजी ने हरिजनों को मंदिर प्रवेश दिलाया इससे उनमें हीनता की भावना दूर हुयी और समानता आयी। उनके प्रति घृणा की भावना, हीन भावना, दासता की भावना समाप्त हुयी।

स्त्री सुधार :

गांॅधीजी ने माना कि स्त्री और पुरुषों को समान माना जाय। स्त्रियों को पुरुषों के समान शैक्षणिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति के अवसर प्राप्त हो। स्त्रियाँ अहिंसा,धैर्य, त्याग, सहिष्णुता तथा हृदय की पवित्रता आदि गुणों से सम्पन्न है। स्त्रियों को पुरुषों के समान समस्त सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार प्राप्त होने चाहिये। परिवार में स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त हो। गांधीजी ने सती प्रथा,बाल विवाह, बहु विवाह, आदि का विरोध किया और विधवा पुनः विवाह का समर्थन किया। पर्दा प्रथा,घुंघट प्रथा का भी विरोध किया और स्त्री समानता पर बल दिया। गांधी ने अन्तः जातीय विवाह का समर्थन किया। मातृभाषा का समर्थन किया, मद्य निषेध को लागू करने पर जोर दिया, सामन्तवादी राजशाही का विरोध किया।

मानव विकास का विचार तभी सार्थक होगा जब मानव जाति की आधी जनसंख्या स्त्रियों का भी पूर्ण विकास हो। स्त्रियों की उपेक्षा से समाज में समानता स्थापित नहीं होगी। मानव समाज को जोडने का प्रथम और अन्तिम रूप सामाजिकता ही है। समाज का स्वरूप बहुरूपता से एक रूपता उत्पन्न करने वाला हो, लोगों की मानसिकता उन्नति करने वाली हो, वैज्ञानिक सोच के साथ, सार्थक परिवर्तन के लिए समाज के लोग तत्पर रहे,तभी मानव विकास के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि बनायी जा सकती है।राजनीतिक विकास

राज्य का विरोध गांँधीजी राज्य को नैतिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाला नहीं बल्कि संगठित हिंसा का प्रतीक माना है। राज्य दमनकारी शक्ति से मनुष्य की आत्मा का हनन करता है। उन्होने राज्य को बराई और अनावश्यक माना है। राज्य की सम्प्रभुशक्ति हिंसा और पशुबल पर आधारित है। राज्य मानव सभ्यता के नैतिक आधार पर खुला आक्रमण है।

पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्रों की आलोचना :

पश्चिमी उदारवादी लोकतन्त्र, समानता, स्वतन्त्रता और सादगी के विपरीत है। यह केन्द्रीकश्त व्यवस्था और जनता की अनदेखी करने पर आधारित है। यह वास्तव में जनमत का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यह हृदय की आवाज नही है। इससे धन का अपव्यय होता है। इस पर जनता का कोई प्रभावी नियन्त्रण नहीं रहता है। लोकतन्त्र विवेक के बजाय संख्या बल पर आधारित होने से विवकपूर्ण नहीं है।

व्यावहारिक आदर्शवादी लोकतंत्र :

गाँधीजी राज्य को तुरन्त समाप्त करने के पक्ष में नहीं थे। वे वास्तविक मानव विकास के लिए 'राज्यविहीन समाज' के स्वरूप को उपयुक्त मानते थे, परन्तु यह आदर्श व्यवस्था पूर्णतः व्यावहारिक नहीं है। उन्होने मानव विकास के लिए सुधारवादी अहिंसक लोकतन्त्र की कल्पना की है।

राज्य विहीन समाज :

ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें व्यक्ति को बाध्य आचरण,बाहरी नियन्त्रण का पूर्ण अभाव होगा। गाँधीजी ने इसे 'रामराज्य' कहा, परन्तु यह बिन्दु राज्य का पर्यायवाची नही है। "यह एक ऐसी पवित्र व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति की अन्तरात्मा पर,बाह्य नियंत्रण पूर्णतः समाप्त कर दिया जाता है।" इस व्यवस्था में व्यक्ति अपनी पूर्णता अर्जित कर लेगा व बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता नहीं रहेगी, यह पूर्णतआत्मनियंत्रित व्यवस्था होगी। व्यक्ति अपना शासक स्वयं होगा। व्यक्ति आत्मनिर्भर और स्वशासी होगा। इसमें हिंसा का निषेध रहेगा व व्यक्ति धीरे-धीरे इस व्यवस्था की तरफ बढ़ेगा।

विकेन्द्रित ग्राम स्वराज :

केंद्रीकृत व्यवस्था हिंसक होती है, विकेन्द्रित व्यवस्था अहिंसक होतीहै। गांँधीजी ने ग्राम को राजनीतिक व्यवस्था को स्वायत व आत्मनिर्भर इकाई माना। इसमें एक ग्राम अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को अपने साधनों से ही पूरा करेगा व बाहरी सहायता पर निर्भर नहीं रहेगा।

आवश्यकता पड़ने पर दूसरे ग्राम समूहों से सहायता ली जा सकती है। देश ऐसे स्वतंत्र ग्राम गणराज्यों का संघ होगा। गांॅधीजी ने कहा कि "ग्राम जिला प्रशासन के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे इस चुनाव में प्रत्येक ग्राम का वोट होगा। जिलों के प्रतिनिधि प्रान्तीय प्रशासन का निर्वाहन करेंगे और प्रान्तीय प्रतिनिधि राष्ट्रीय प्रशासन का निर्वाहन करेंगे जो कि राष्ट्र का मुख्य कार्यकारी होगा।* सारी शक्तियाँ जनता में ही निहित होगी। प्रत्येक व्यक्ति नैतिकता पर चलते हुए अपने सामाजिक दायित्वों को महत्व देगा। हिंसा का नहीसमुदाय की सुझावकारी नैतिक शक्ति का प्रयोग किया जायेगा। आर्थिक असमानता नहीं रहेगी और साम्प्रदायिक वैमनस्य का कोई स्थान नहीं होगा।

अहिंसक लोकतंत्र :

हिंसक बल से कमजोरो की रक्षा नहीं की जा सकती। अतः इस व्यवस्था में हिंसक बल को न्यूनतम किया जा सकेगा। सेना को अहिंसक युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जायेगा। इसमें नैतिक प्रभाव का प्रयोग किया जायेगा। अहिंसक लोकतंत्र गांधीजी के अनुसार बहुमत या अल्पमत का शासन नहीं अपितु न्याय का शासन होगा। धर्म इस शासन का आधार होगा। शासन का उददेश्य जनता का सर्वांगीण विकास करना होगा। जनता जागरूक रहकर शासन की हिंसक और तानाशाही नीतियों का विरोध करें। प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा का आदर किया जायेगा। वयस्क मताधिकार हो, परन्तु वह श्रम की शर्त और चरखे पर आधारित मताधिकार हो। साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली का विरोध किया। प्रतिनिधि जनता के लिया जाये। व्यवस्थापिका वयस्क मताधिकार से चुनी जाये, द्वितीय सदन न हो और प्रतिनिधि जनता के प्रति उत्तरदाई हो। गांॅधीजी पश्चिमी उदारवाही लोकतंत्र की जगह अहिंसक लोकतंत्र अपनाने के पक्ष में थे।

अधिकारों की अवधारण :

"गांॅधीजी के अनुसार अधिकार वे आवश्यक परिस्थितियाँ है जो मनुष्य को जीवन जीने और विकास करने की आवश्यक क्षमता प्रदान करती है तथा जो कर्त्तव्यों के पालन से सहज ही प्राप्त होते है।" गांॅधीजी ने अधिकारों की तुलना में कर्त्तव्यों पर अधिक बल दिया। गांॅधीजी अधिकारों और कर्त्तव्यों में राज्य के मनमाने आचरण को प्रतिबंधित करते है और

व्यक्ति के आचरण में अधिकारों और कर्त्तव्यों के बीच संतुलनस्थापित करते है। भारत के संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों की गांधीजी ने पैरवी की थी। गांँधीजी ने व्यक्ति की स्वतंत्रता पर किसी भी प्रकार के नियंत्रण का विरोध किया और नियंत्रण की मर्यादित व्यवस्था का समर्थन किया था।

बुनियादी शिक्षा :

गांँधीजी की शिक्षा व्यवस्था आदर्श सामाजिक प्रणाली की नींव है। शिक्षा की धारणा व्यापक है और आधार आध्यात्मिक है। गांँधीजी की शिक्षा मानव के मानसिक,शारीरिक और आर्थिक विकास का रास्ता है। यह व्यक्ति में आत्मज्ञान की क्षमता विकसित करती है। शिक्षा का उद्देश्य अच्छे व्यक्तियों का निर्माण करना और समाज सेवा के लिए प्रेरणा देना है। गांँधीजी की शिक्षा बुनियादी शिक्षा और उच्च शिक्षा दो भागों में विभक्त है। नई तालीम या बुनियादी शिक्षा में प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्तरों की शिक्षा शामिल है। इसे ग्रामोन्मुखी बनाने का सुझाव दिया गया। इसमें कताई,सिलाई, कढ़ाई, इतिहास, भूगोल और गणित का अध्ययन कराया जाये। किसी दस्तकारी या उद्योग की शिक्षा की जाये। आत्मनिर्भरता बढ़ाने वाली शिक्षा दी जाये। शिक्षा मातृभाषा में दी जाये और सांप्रदायिक प्रकार की धार्मिक शिक्षा न दी जाये। गांँधीजी ने कहा कि मेरी शिक्षा योजना,एक शान्त सामाजिक क्रांति का माध्यम बनेगी। सच्ची शिक्षा जीवन पर्यन्त चलती है। उच्च शिक्षा व्यावहारिक और सकारात्मक है। निजी और सरकारी भागीदारी से कॉलेज चलाये जाये। उच्च शिक्षा भी मातृभाषा में ही दी जाये। हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित हो। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये। गांँधीजी ने शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए उसे मानव के सर्वांगीण विकास का साधन बताया।

मानव का आर्थिक विकास :

मानव विकास का एक पक्ष आर्थिक विकास है। गांँधीजी ने आर्थिक समानता लाने के लिए अहिंसक तरीके में सत्याग्रह और असहयोग को प्रमुख

माना। ट्रस्टीशिप से भी आर्थिक विषमता दूर की जा सकती है। गांँधीजी की मूल आर्थिक व्यवस्था थी-विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था। इसमें समाज का प्रत्येक

व्यक्ति उत्पादक और उपभोक्ता है। समाज के सबसे गरीब और अन्तिम व्यक्ति के विकास के लिए गांँधीजी ने सर्वोदय (अन्त्योदय) को उपयोगी बताया। दरिद्रता,अभाव, गंदगी आदि

को दूर किया जाये। गांँधीजी ने भौतिकवादी हिंसा को आध्यात्मिक,नैतिक और अहिंसा का रूप प्रदान किया।अस्तेय व अपरिग्रह का सिद्धान्त :

आर्थिक क्षेत्र में अहिंसा, सह उत्पादन, सम वितरण, सह उपभोग और सह जीवन के रूप में प्रकट होती है। दूसरे की किसी भी वस्तु की आकांक्षा न की जाय,बिना आज्ञा के दूसरे की कोई भी वस्तु न ली जाय, अस्तेय का पालन किया जाय। जरूरत से ज्यादा वस्तुओं को इकट्ठा न किया जाय अर्थात अपरिग्रह का पालन किया जाय। इस प्रकार गांँधीजी ने उपभोग की मर्यादा में रहकर, मानव विकास व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

शारीरिक श्रम का महत्व :

गांँधीजी की मान्यता थी कि आज का समाज श्रम निष्ठ हो,सभी व्यक्ति शारीरिक श्रम करके ही रोटी खाये, श्रम से दूर नहीं भागे, समाज के सारे लोग श्रम करे, तभी वास्तविक और पूर्ण मानव विकास होगा। रोटी के लिए हर आदमी का मेहनत करना और हाथ पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है। श्रम के नियम का पालन करने से संसार में सुख,शान्ति और आरोग्य फैलेगा। खेती के साथ कताई-बुनाई,बढ़ईगीरी, लुहारी आदि भी श्रम में ही आते है। अपनी सफाई हम स्वयं करे। सभी उत्पादक होगे तो उत्पादन में वृद्धि होगी। गांँधीजी ने कहा कि शरीर की आवश्यकताएँ शरीर द्वारा ही पूरी होनी चाहिये। शारीरिक श्रम के धर्म का पालन करने से सामाजिक रचना में एक शान्त क्रांति हो जाएगी। श्रम प्रधान समाज में कभी कोई समस्या नहीं आती और सभी का संतुलित विकास होता है।

स्वदेशी :

गांँधीजी के स्वदेशी व्रत के पीछे बडी ही गुढ़ क्रांति का बीज छपा हुआ है आर्थिक,राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक उद्धार का रहस्य भी इसमें है। स्वयं के विचार और वस्तुओं का प्रयोग करना स्वेदशी है। इसमें विदेशी का स्वतः ही बहिष्कार होता है। स्वदेशी भी व्यापक अवधारणा है। इसमें स्वयं के विचार,स्वशिक्षा, स्वन्याय, स्वशासन व स्वावलम्बन शामिल है। गांँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर भारत में स्वदेशी को बड़े पैमाने पर अपनाया। गांँधीजी ने ही इसे अत्यधिक लोकप्रिय बनाया। गांँधीजी ने कहा कि 'भारत स्वदेशी की भावना के द्वारा स्वतंत्र हुआ है और अब उसका आर्थिक विकास भी इसी भावना के द्वारा हो सकता है। स्वदेशी विचार,स्वावलम्बन और स्वराज्य का पयार्यवाची सिद्धान्त है। स्वदेशी काअर्थ है - विदेशी वस्तुओं का परित्याग और गृह-निर्मित वस्तुओं का प्रयोग ताकि गृह उद्योग का संरक्षण हो तथा स्थानीय धनबाहर जारी गाँधीजी ने कहा कि "स्वदेशी व्रतधारी अपनी परिस्थितियों को पूर्ण समझकर स्थानी उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं, चाहे कम एवं अधिक कीमत की ही क्यों न हो. का प्रयोग करेगा। अन्य

स्थानों की निर्मित वस्तुओं पर अपने आसपास की वस्तुओं को वरीयता देगा और अपने पड़ौसी की सहायता करेगा। यही स्वदेशी धर्म है. इसी से हम पूर्ण समर्थ और स्वावलम्बी होंगे। स्वदेशी भावना में किसी प्रकार के स्वार्थ की गंध नहीं है। स्वदेशी से देश के अन्दर की सारी शक्तियाँ- मानवीय, प्राकृतिक, भौतिक आदि विकसित और समृद्ध होती है। स्वदेशी में हम किसी प्रकार दूसरे देश का अहित नहीं करते अपितु हम स्वयं समृद्धिशाली होते है।

ट्रस्टीशिप राज्य की हिंसा, व्यक्ति की हिंसा से ज्यादा खतरनाक है। टस्टीशिप इस बात पर आधारित है कि जिसके पास घन है, वह उसे अपना समझकर व्यर्थ व्यय न करे. ट्रस्टी समझकर रखे और लोक कल्याण में खर्च करे। इसमें सम्पत्तिवान व्यक्ति स्वेच्छा से अपना धन त्यागकर, उसे जनता की अमानत समझता है। सम्पत्तिवान व्यक्ति जनसाधारण की तरह रहते है और धन कम खर्च करते है तो वे जनता के ट्रस्टी कहे जाते है। ट्रस्टी लोगों को धमकाकर, उनका शोषण करके, धन जमा नहीं करेगा। सम्पत्ति को जबरदस्ती नहीं छिनना चाहिये। अमीर धन को जनता की धरोहर समझकर खर्च करे। अहिंसक मार्ग यह हुआ कि अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के बाद जो धन बाकी बचे उसका वह प्रजा की ओर से ट्रस्टी बन जाय। धन की मात्रा परिस्थितियों पर निर्भर करती है। ट्रस्टीशिप हृदय परिवर्तन और समाज परिवर्तन का एक आर्थिक विचार हैं सम्पत्ति का संग्रह वस्तुतः एक चोरी है। गांधीजी ने यह भी कहा कि जो उत्पादक बिना शरीर-श्रम किए खाता है वह चोर है जिसके पास सम्पत्ति है. वह सदैव दुष्ट नहीं होता। टस्टीशिप की मूल रचना के आर्थिक आधार अस्तेय और अपरिग्रह है। सत्ता लोक मूलक है तो निजी सम्पत्ति भी अहिंसक तरीके से लोक मूलक हो, यह ट्रस्टीशिप है। राज्य के हाथों में आर्थिक शक्ति का अत्यधिक केन्द्रीकरण नहीं हो। ट्रस्टीशिप विकेन्द्रीकरण को बढ़ाता है। इसमें परिश्रम की प्रधानता है। मनुष्य यह ध्यान रखे कि अर्जित सम्पत्ति उसकी नहीं सारे समाज की है। इसमें समाज में मानव का अहिंसा से बदलाव होता है। इसमें व्यक्तिगत सम्पत्ति के स्वामित्व की मान्यता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति कामनचाहे उसे उपयोग करने को स्वतंत्र नहीं है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए कार्य करना अनिवार्य माना गया है। उत्पादन व्यक्तिगत लाभ के लिए कार्य करना अनिवार्य माना गया है। उत्पादन व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं होगा। इसमें प्रत्येक व्यक्ति का जीवन मर्यादित होगा। प्रत्येक व्यक्ति समाज प्रकृति के प्रति उत्तरदायी होगा। समाज भी व्यक्ति की जगह ट्रस्टी बन सकता है। ट्रस्टीशिप का कोई कानूनी आधार नहीं है परन्तु लोग उसे आचरण में उतारने का प्रयास करे तो मानव के प्रति प्रेम जितना दिखता है उससे कई गुना व्यवहार में आयेगा। ट्रस्टीशिप अहिंसक तरीके से मानव को बदलने का तरीका है। इससे मानव विकास का रास्ता तैयार होता है।

यंत्रीकरण और विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था :

विकास के साथ-साथ यंत्रों का प्रयोग भी मानव जीवन में बढ़ता जा रहा है। मनुष्य में वैभव और संग्रह की आकांक्षा बढ़ती जा रहीं है। गांधीजी मानते थे कि यंत्र मनुष्य के लिए आवश्यक तो है परन्तु उनकी मर्यादा भी है। मनुष्य यदि रूतबा बढ़ाने के लिए यंत्र लाता है तो वह उसके व्यक्तित्व को क्षीण करता है उत्पादन कार्य केवल आर्थिक कार्य हीं नहीं है। इसमें मानवता और संस्कृति का भी समावेश है। श्रम को उत्पादन से अलग करना कुसंस्कार है। गांधीजी ने कहा कि "मेरा विरोध यंत्रों के संबंध में फैले हुऐ दीवानेपन से है, यंत्रों से नहीं।" यंत्रों के अंधाधुंध प्रयोग में जन कल्याण की भावना नहीं है। सहायक यंत्रों जैसे हथियार, बंदूक, बम को अर्थशास्त्र में कोई मान्यता नहीं है। द्रुतगामी यंत्रों जैसे रेल, मोटर, हवाई जहाज रेड़ियों टेलीविजन को मान्यता है। व्यक्ति दूसरों (मशीनों) पर निर्भर है तो वह उसकी अधूरी स्वतंत्रता है। गांॅधीजी की मान्यता थी कि "प्रत्येक व्यक्तिपरिवार, गाँव और राष्ट्र स्वावलम्बी बने और हर व्यक्ति के जीवन में असमर्थता और मजबूरी समाप्त हो l " भारतीय अर्थव्यवस्था कश्शष और ग्राम प्रधान है जहाँ जीवन का आधार स्वावलम्बन है। परम्परागत उत्पादन प्रणाली, ग्राम्य जीवन में मानव विकास का रास्ता तैयार करती है। विकेन्द्रत अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत आत्म निर्भरता बढ़ाने वाली जीवन प्रणाली को मजबूत किया जाय। स्थानीय स्तर पर कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने से समाज में बेराजगारी समाप्त होगी और अधिकांश व्यक्ति रोजगार में लगेंगे। बाजार, मूल्य नियंत्रण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, शोषण आदि की समस्या नहीं होगी और प्रत्येक व्यक्ति विकास के रास्ते पर आगे बढ़ेगा।

विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था में खादी और ग्रामोद्योग का प्रमुख स्थान है।आर्थिक संगठन इस तरीके का हो कि अधिक से अधिक वस्तुएँ गांॅव में उत्पादित हो । प्रत्येक गांव अपनी मूलभूत आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन स्वयं ही कर ले। जो वस्तुएँ गांव में उत्पादित होती है. उनका पक्का माल भी गांॅव में बने। यदि किसी देश के साथ युद्ध होता है तो युद्ध में बड़े-बड़े कारखाने समाप्त होने का डर रहता है। लघु कुटीर उद्योगों को कोई डर नहीं है। लघु कुटीर उद्योग भारतीय ग्रामीण उत्पादन प्रणाली को कुशल प्रबन्ध है जहाँ कोई समस्या नहीं आती और मानव का अनवरत विकास जारी रहता है।

खादी व चरखा :

चरखा चलाकर, सूत कातकर खादी बनाना भी आर्थिक स्वावलम्बन का ही एक तरीका है। गांधीजी ने कपड़ा या खादी को तैयार करने को प्रतिदिन का यज्ञ माना शिक्षण का माध्यम माना तथा जीवन को सुरक्षा व श्रम की प्रतिष्ठा माना। स्वदेशी के पालन का यह अर्थ नहीं है कि हम विदेशी चीजों से घृणा करें। गांँधीजी तो मानव मात्र की सेवा की बात करते थे। जो वस्तुएँ अपने देश में नहीं है उन्हें आयात करने में कोई हर्ज नहीं है। गांधीजी के मन में 1908 में खादी और चरखा का विचार आया था, तब से जीवन पर्यन्त वे इसके प्रचार में लगे रहे। गांँधीजी ने कहा कि "खादी का मूल उद्देश्य प्रत्येक गाँव को अपने भोजन और कपड़े में स्वावलम्बी बनाना है।"" स्वावलम्बन से रहित जीवन स्वाभिमान रहित होता है जो पशुवत और गुलाम से भी निकश्भट जीवन होता है। औद्योगिक संस्कृति में मानव अपना स्वाभाविक जीवन और आनन्द खो देता है। खादी का अर्थशास्त्र हमारे लिए बहुत ही सस्ता, स्वास्थ्यवर्धक और उपयोगी है। गांँधीजी ने कहा कि "मेरा तो एक ही संदेश हैवह है खादी। तुम मेरे हाथ में खादी दो और मैं तुम्हारे हाथ में स्वराज रख दूंगा। खादी मुझे सबसे प्रिय है। यह पवित्र वस्तु है।"

गांँधीजी ने चरखे को सर्वोदय की अर्थव्यवस्था का आधार मानाभूखेदरिद्रनारायण और गरीब को चरखा रोटी देता है। अतः चरखा भगवान से कम नहीं है। गांँधीजी ने कहा कि "मुझे अपने चरखे से काते गऐ हर सूत में भगवान के दर्शन होते है। "चरखा स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और भारत के ग्राम जीवन का प्रतीक था। गांँधीजी मानते थे कि चरखे का संदेश है सादगी, मानव की सेवा, दूसरों को कष्ट न देना, और निर्धन, पूंँजी और श्रम राजा तथा रंक के बीच अमिट सम्बन्धों की स्थापना। इतना व्यापकसंदेश तो स्वभावतः सभी के लिए हुआ।" चरखा विपत्ति में मित्र है निर्मात को समृद्धि देता है। चरखे में संगीत जैसा आनन्द है यह अहिंसा का प्रतीक है। चरखा दया और प्रेम के जागृत सागर से जुड़ा है। चरखे से बनी खादी भारतवासियों की एकता सदभावना, स्वावलम्बन आर्थिक स्वाधीनता और समानता का प्रतीक है। चरखे का हर चक्कर शांति, सद्भावना और प्रेम बुनता है। यह कश्षि का पूरक है। यह अमेरिका के अलावा दूसरी दुनिया का प्रतीक है। चरखा नई स्फूर्ति और प्रेरणा लाता है मन में और विचारों में जैसी नई तरंग उठती है वैसी तरंग चरखे में दिखती है। संसार का चक्र चरखे की तरह घूमता है। चरखे से प्रेरणा लेने पर नई स्फूर्ति आती है जो मानद विकास के लिए नवीन संकल्प को प्रकट करती है।

सर्वोदय :

सर्वोदय का अर्थ है - सबका उदय, सबका उत्कर्ष सबका विकास और सबका सुख ।यही वास्तविक मानव विकास है। गांॅधीजी ने सर्वोदय को ही अपने आर्थिक दर्शन का आधार बनाया। सर्वोदय में आध्यात्मिक उन्नति एवं जीवन शुद्धि पर जोर दिया जाता है। मानव विकास तभी माना जाता है जब समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति का भी विकास हो जाय। सर्वोदय में समाज के सबसे अन्तिम व्यक्ति का भी विकास होता है अतः सर्वोदय वास्तविक मानव विकास है। गांॅधीजी के अनुसार समाज का सबसे अन्तिमजन वह है जो "समाज में आर्थिक दृष्टि से सबसे विपन्न हो, ऐसा व्यक्ति जो सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित न हो, जिसका राजनीतिक सम्मान न हो, जो धार्मिक रूप से सबसे निम्न कोटि का हो, जिसका सांस्कृतिक जीवन अविकसित हो, जो सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से सबसे पिछडा हो, जिसके मन के भाव विचार शिक्षा की कमी के कारण पूर्ण नहीं हो पाते हो।" इस प्रकार आर्थिक,सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक रूप से जो निम्न कोटि का हो, कही समाज का अन्तिम व्यक्ति है। गांॅधीजी ने समाज के सबसे दीन, हर प्रकार से दीन व्यक्ति के विकास को लक्ष्य

बनाकर विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम आरंभ किन सर्वाधिक आबादी वाले गांवों के गरीब के उत्थान की बात कही, यही सर्वोब अर्थशास्त्र है। सर्वोदय में अन्तिम जन के साथ समर्थ और धनी व्यक्ति भी उदय है। गांॅधीजी ने मानव विकास के लिए हृदय परिवर्तन,स्वचिन्ट स्वशासन, अहिंसा सत्याग्रह, असहयोग अस्तेय और अपरिग्रह को आवश्न माना। सर्वोदय की व्यवस्था में श्रम से उत्पादन होगा, उत्पादन के साथ पर समान अधिकार होगा। व्यवसाय के अनुसार पंचायते होगी जो उद्योगोंको संचालित करेगी। विनिमय का माध्यम श्रम होगा। प्रत्येक मनुष्य अपनी श्रम, शक्ति, बुद्धिशक्ति, साधन शक्ति और सम्पत्ति का प्रयोग पूर्ण निष्ठा और योग्यता से करेगा। वह उत्पादित वस्तुओं का आवश्यकतानुसार उपभोग करेगा और शेष समाज के लिए छोड देगा। सर्वोदय के अनुसार मानव के सारे कार्य अहिंसा और सत्य पर आधारित हो। सर्वोदय में जीवन समग्र है। मनुष्य का जीवन भौतिक,सांस्कृतिक सामाजिक, नैतिक और धार्मिक परिस्थितियों से ओत प्रोत है। सभी शक्तियों का लोकतान्त्रिक तरीके से विकेन्द्रीकरण कर समान रूप से विभाजन किया जाय। सर्वोदय में शारीरिक श्रम की प्रधानता है। सर्वोदय श्रमदान और श्रम निष्ठ समाज की कल्पना करता है। रोजाना कम से कम चार घन्टे शारीरिक श्रम करे और उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ समता और निष्ठा का भी विकास हो। इससे स्वावलम्बी समाज बनेगा। व्यापार का आधार समाज सेवा होगा।

व्यापार का उद्देश्य वस्तुओं को आवश्यकता के स्थान पर पहचानना होगा। इससे सम्पत्ति और साधनों के प्रयोग का अधिकार सबको समान रूप. से होगा इसमें लाभ और ईर्ष्या समाप्त होगी तथा प्रेम और सहयोग बढ़ेगा। सर्वोदय की अर्थव्यवस्था की बुनियाद और मानव

विकास का आधार ग्रामीण अर्थव्यवस्था है। अतः ग्रामीण जीवन के पहलुओं आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक का संवर्द्धन और संरक्षण बहुत आवश्यक है। व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा बाह्य सामाजिक बंधनों या राजकीय कानून या किसी प्रकार की पद्धति से मनुष्य के उपर थोपी नहीं जायेगी, बल्कि मनुष्य के अन्दर की अनुभूति और शक्ति को जागृत किया जाएगा। सर्वोदय से समता का भाव है। इसमें उपभोग उत्पादन, वितरण, विनिमय सभी क्षेत्रों का समग्र विकास होगा।

सर्वोदय में क्रांति का अर्थ आमूल व समग्र परिवर्तन से है इससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मानस में परिवर्तन होगा। विचार में परिवर्तन का अर्थ है उसके व्यवहार में परिवर्तन। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में उन सब गुणात्मक शक्तियों की प्राप्ति का अभ्यास करे, जो नए समाज को बनाने के लिए आवश्यक है। सर्वोदय में क्रांति की प्रक्रिया में मनुष्य के आन्तरिक गुणों को जगाया जाता है। बदलाव अहिंसात्मक होगें। इसमें साधनों की शुद्धता अतिआवश्यक है। गांॅधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में सम्पूर्ण समाज निर्माण की प्रक्रिया है। गांधीजी के प्रमुख रचनात्मक कार्यक्रम है- खादी, ग्रामोद्योग, नशाबन्दी जाति भेद, अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिक एकता, ग्रामसफाई, नई तालीम, स्त्री-पुरुष समानता आरोग्य के नियम, देश की भाषाओं का विकास संकीर्णता का निवारण आर्थिक समानता खेती की उन्नति, मजदूर संगठन आदिम जाति सेवा विद्यार्थी संगठन, कुण्ठ सेवा संकट निवारण दुविले की सेवा मानव का सम्पूर्ण विकास तभी होगा जब वह छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठे। प्रत्येक व्यक्ति में त्याग और समर्पण की भावना आयेगी और समानता कायम होगी।

महात्मा गांॅधी मानवता के लिए चिन्तित रहते थे और मानव हित तथा मानव विकास के लिए उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। मानव विकास के लिए गांधीजी सम्पूर्ण तथा संतुलित विकास को आवश्यक मानते थे। इसके लिए गांॅधीजी ने केवल विचार ही नहीं दिये, बल्कि कर्मयोगी भी बन कर दिखाया। भौतिक और राजनीतिक विकास की तुलना में गांॅधीजी ने नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास पर अधिक बल दिया। मनुष्य पहले मानव बने उसमें पशुतत्व और हिंसा समाप्त हो तथा पवित्र, कोमल हृदय से युक्त नैतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से ओतप्रोत होकर मानवता को सरजित तथा संरक्षित करे और भावी पीढियों को मानवता के मूल्य उपहार के रूप में भेट करे। मानव का विकास ही सच्ची मानवता की सेवा होगी तथा भावी पीढ़ियों की जिम्मेदारी विकास की गति को बनाये रखने की होगी।

अब तक मानव विकास की बात सैद्धान्तिक रूप से ही की जाती थी महात्मा गांॅधी ने सर्वप्रथम व्यावहारिक रूप से मानव विकास की बात की। उन्होंने पुरानी व्यवस्था में जी कर देखा, जिसे उपयुक्त न पाते हुए नई व्यवस्था के निर्माण के लिए कमर कसी तथा मानव को

वास्तव में मानव बनाने का प्रयास किया। गांॅधीजी का स्वयं का जीवन सादगीपूर्ण था तथा उनहोंने भोतिक जीवन की चमक दमक को छोड़कर सीधा सरल व प्रभावी जीवन जीने का प्रयास किया। वे भौतिक विकास को वास्तविक विकास नहीं मानत थे बल्कि नैतिक आध्यात्मिक, मानसिक व आत्मीय विकासप को मानव विकास कानते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुश्य में इन गुणों का विकास होने नये समाज का सृजन होगा। गांधीजी सर्वप्रथम मानव को मानव मानते थे व उसके विकास में जीवन भर लगे रहे। भौतिक विकास की तुलना आध्यात्मिक विकास से नहीं की जा सकती। भौतिक विकास दिखावटी व श्रम के महत्व को कम करने वाला है परंतु दूसरा विकास अपने आप में त्याग़तपस्या व सहयोग का विकास है जिसमें सभी लोग परस्पर विचारों

का आदान प्रदान कर आध्यात्मिक या नैतिक विचारों को मजबूत बनाते हैं। गांधी की मानव विकास की अवधारणा स्वच्छ, तटस्थ, विश्वसनीय व समकालीन है। गांधी का आध्यात्मिक विकास इतना अधिक प्रबल, सर्वोच्च व शक्तिशाली है कि इसे गुमराह नहीं किया जा सकता है। गांधी का मानव विकास तभी सफल हो सकता है जब इसे बिना भेदभाव के समाज के सभी लोग अपनाये। यह नया प्रयोग था।निष्कर्ष :

निष्कर्ष :

मानव विकास को निर्धारित करने के लिए विभिन्न विचारधाराएँ अलग-अलग मत रखती है परतु सामान्यतया मानव की दशा में सकारातमक परिववन ही मानव विकास है। महात्मा गांॅधी जिस संदर्भ में मानव विकास की बात कर रहे थे वह मूल्य युक्त मानव विकास है जो भारत को विश्व से अलग करता है।

मानव विकास की कोई सर्वमान्य परिभाषा तो नहीं है परंतु मानव के हित में चेष्टापूर्वक किया गया प्रयास ही मानव विकास की श्रेणी में आता है। मानव के हितों की अवधारणा भी समय विशेष के साथ बदलती रहती है। मूल्य भी सदा एक से नहीं रहतेउनमें भी बदलाव आता रहता है। उन मूल्यों के अनुरूप बदलाव या परिवर्तन ही मानव विकास है। अलग-अलग देशों के लोग उनमें अपने अनुरूप बदलाव लाते रहते हैं। गांधीजी मानव विकास को सम्पूर्ण व्यवस्था में बदलाव पर जोर देते हैं। वैश्विक स्तर पर मानव विकास के विचार में सम्पूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन पर जोर न देकर, देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार बदलाव करके मानव विकास किया जा सकता है।

विश्व के महान विद्वानों, विचारकों, कान्तिकारियों व कर्मयोगियों ने मानव जीवन में परिवव्रन पर जोर देकर मानव विकास का अथक प्रयास किया है। कुछ ने गांधीजी के तरीकों को अपनाया, कुछ ने भिन्न तरीकों को अपना कर विकास का रास्ता तय किया है। मानव विकास एक सतत् प्रक्रिया है जिसमें निरंतर कुछ ना कुछ जुड़ता रहता है। इसे मानव की आवश्यकताओं के साथ बदलावों से भी जोड़ा जा सकता है। मानव विकास एक अमूर्त अवधारणा है जिसे कर्म से ही साकार किया जा सकता है। कर्मजीवन मूल्यों के साथ जुड़कर परिवर्तन की दिशा तय करता है जिसे मानवविकास की पूर्व प्रक्रिया कहा जा सकता है। परिवर्तन की साकरात्मक सोच ही वास्तविक मानव विकास है।

मनुष्य में चेतना संवेदना और आत्म विवेचना की शक्ति होती हैजिसके आधार पर यह विकास प्रक्रिया का नियन्त्रक व निर्धारक है। मानव अपनी राजनात्मक शक्ति से श्रेष्ठ परिस्थितियों का निर्माण करता है। वह निरन्तर उन्नति की राह को आसान बनाता है। मानव संस्कृति रूपी महावृक्ष निश्तर विकसित हो रहा हैकई तरह के झंझावातों, सूखों और अतिवृष्टियों के बावजूद उसमें नित नई कोपल फूट रही है। विश्व के कोने कोने में आदिकाल से ही मानव संस्कृतियों का विकास व अपनी दुर्बलताओं को निकालकर निर्मल मन को सत्त रूप से उन्नति की राह पर प्रशस्त करने का प्रयास होता रहा है। मानव द्वारा समुदाय का रूप ग्रहण कर लेने के बाद विभिन्न विचारों का उदय हुआ। मानव के उद्भव से हीहिंसा करना उसकी मूल प्रवृति रही है। सामुदायिक जीवन आरम्भ करने पर सभ्यताओं और संस्कृतियों का उत्थान हुआ। सभ्य जीवन की संस्कृति में हिंसा के साथ अहिंसा का भी चलन आरम्भ हुआ। विवेक, तर्क, व तथ्यों की जानकारी से मानव अपनी सुरक्षा के बारे में सोचने लगा व सम्पूर्ण मानव समुदाय में चेतना के बल पर हिंसा के बजाय अहिंसा की मान्यता अधिक प्रभावी होती गयी। उस अवस्था में मनुष्य का जीवन धर्म प्रधान था। मनुष्य के जीवन की हर गतिविधि में धर्म व धार्मिक मान्यताओं का वर्चस्व था। सभी लोगों को धार्मिक मान्यताओं में गहरी निष्ठा व आस्था थी। जीने की चाह ने अहिंसा की राह दिखायी। लोगों की अहिंसा में मान्यता व विश्वास बनाये रखने के लिए अहिंसा को धर्मसे जोड़ा गया। विश्व के सभी धर्मों ने अन्य शिक्षाओं के साथ अहिंसा की भी शिक्षा दी व अहिंसा को धर्मसम्मतशास्त्र सम्मत, विवेकपूर्ण, उपयोगी, लाभदायक कल्याणकारी व विकासोन्मुख माना गया व समाज के लगभग सभी लोगों ने इस पर विश्वास भी किया।

विश्व के सभी धर्मो ने किसी को कष्ट न पहुंँचाने की नीति पर चलना आरम्भ किया जिसे अहिंसा कहा गया, जो हिंसा के निषेध की जगह विकसित हुयी। इसे स्थाई व शाश्वत बनाने के लिए, अहिंसा को रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार, वेश-भूषा, बोल-चाल, धर्म-

अधर्म, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, लौकिक अलौकिक आदि से जोड कर संस्कृति का स्वरूप दिया गया। अहिंसा को सीमित व संकीर्ण विचार से निकालकर व्यापक अवधारणा के रूप में विकसित करने से यह अपने आप में एक अलग संस्कृतिबन गयी तथा वर्तमान में इसे अहिंसा की संस्कृति के रूप में मान्यता मिल गयी है।

अहिंसा की संस्कृति के विकास ने एक लम्बी यात्रा तैय की है।अहिंसा की संस्कृति के विकास में यहूदी, ईसाई, मुस्लिम, हिन्दू जैन व बौद्ध आदि धर्मो ने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। यहूदी धर्म के दस धर्म उपदेशों में अन्तिम पांच की समानता जैन व्रतों यथा अहिंसा,बहह्मचर्य, अस्तेय, सत्य और अपरिग्रह से देखी जा सकता है। ईसाई धर्म की नैतिकता के केन्द्र में प्रेम है जो अहिंसा की ही सकारात्मक अभिव्यक्ति है। वे दस धर्मादेशों के साथ यह भी मानते है कि मानव जाति के प्रति प्रेम के कारण ही ईश्वर ने अपने पुत्र ईसा को धरती पर भेजा,जिसने सबके प्रति प्रेम के कारण सूली पर चढ़ने की सजा को स्वीकार किया। ईसाई मत के अनुसार ईश्वर स्वयं प्रेम है। इसमें मित्र के साथ शत्रु से भी प्रेम करने को कहा गया है। अहिंसा में अपनी निष्ठा के कारण ही ईसाईयों ने रोमन सेना में शामिल होने से इनकार किया था व न्यायपूर्ण युद्ध की अवधारणा का विकास किया था। टॉलस्टॉय ने अपनी पुस्तकलॉ ऑफ लव एंड लॉ ऑफ वायलेंस में देश भक्तिवाद के नाम पर युद्ध में शामिल होने को अनुचित बताया था जो अहिंसा की सर्वोच्चता की ही स्वीकारोक्ति है। ईसा मसीह ने कहा था कि यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड मारता है तो बांया गाल भी उसके आगे कर दो। सूली पर चढ़ाये जाने पर भी उन्होंने कहा था कि उन्हें क्षमा कर दो पिता,वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे है। इन कथनों में ईसा ने क्षमा को अहिंसा का ही रूप माना है। इस्लाम शब्द का अर्थ ही शान्ति है, जिसका मतलब अहिंसा है। कुरान के उपदेश बुनियादी तौर पर अहिंसा के पक्ष में है। कुरान में अहिंसा को हिंसा से बेहतर बताया गया है। इस्लाम में जिहाद का तात्पर्य धार्मिक युद्ध व हिंसा न होकर अपने अन्दर की बुरी प्रवतियों और बाहरीसामाजिक अन्याय के विरूद्ध संघर्ष है। हजरत मोहम्मद की शिक्षाओं में रहम (दया) अदल (न्याय) और सब्र (धैर्य) प्रमुख है जो सकारात्मक रूप प्रेम (इश्क) को केन्द्रीय महत्व दिया देते है। चीन का माओवाद व कन्फ्यूशियस धर्म अहिंसा की नैसर्गिक व्यवस्था में विश्वास करता है। उनके द्वारा विनम्रता, सन्तोष, धैर्य व अपरिग्रह पर अधिक बल दिया गया है जो अहिंसा की प्राप्ति में सहायक है। चीन के धर्म हिंसात्मक क्रान्ति के बजाय सुधारात्मक प्रक्रिया को अधिक महत्व देते है। कनफ्यूशियस विनयशीलता. सद्व्यवहार व औचित्य तथा विवेक पर बार-बार आग्रह करते हुऐ अहिंसा की स्थापना में ही सहायक है। चीनी संस्कृति को तरह ग्रीक व रोमन संस्कृति में भी अहिंसा उनके धर्म व दर्शन का केन्द्र बिन्द तो नहीं है परन्तु अहिंसा पर उन्होंने हमेशा जोर दिया हे। सुकरात, प्लेटो व अरस्तु ने सद्गुण पर जोर देकर अहिंसा को ही स्थापित करने का प्रयास किया है। सिनिकवाद,स्टोइकवाद व एपीक्यूरियनवाद अहिंसा का

ही समर्थन कर रहे थे। विश्व के सभी धर्मो ने अहिंसा संस्कृति का सृजन किया है। हर समय अहिंसा की अवधारणा में कुछ ना कुछ जुड़ता रहाहै अहिंसा की संस्कृति अपने आप में एक व्यापक अवधारणा बनी हुयी है।

भारत में भी अहिंसा की संस्कृति की एक लम्बी प्रक्रिया है। वैदिक धर्म व दर्शन में अहिंसा की केन्द्रीय मूल्य के रूप में स्थापना हुयी है। ऋग्वेद में दया को प्रमुख कर्तव्यों में माना गया है व पापकर्म को अनिष्ट से जोडा गया है। ऋग्वेद में सम्पूर्ण सहजीवन की कल्पना मानव जाति के एकत्व के बोघ का संकेत करती है। सामवेद में हिंसा न करने का उल्लेख है। वैदिक युग में मानव हिसां पर पूर्णतः रोक थी परन्तु पशु हिंसा या पशु वध की अनुमति थी जिसे हिंसा माना जाता था। अथर्ववेद में सबके प्रति मैत्री भाव रखने व पशु पक्षियों के वध का निषेध करते हुए उनकी सेवा करने की बात कही है। उतरवैदिक काल में मानव व पशु दोनो की हिंसा निषेध थी व अहिंसा को धर्म व नैतिकता से जोड दिया। ब्राह्मण ग्रंथो में मनुष्यों और मनुष्येतर प्राणियों के प्रति कर्त्तव्यपालन का आग्रह करते हुए पंचऋण की अवधारणा में नऋण तथा भूत ऋण का भी उल्लेख किया गया है। उपनिषदीय दर्शन में तो स्पष्टतः सदाचार विश्लेषण में अहिंसा और दानशीलता को अत्यंत महत्व दिया गया है। तैत्तरीय उपनिषद में श्रद्धापूर्वक दान का निर्देश दिय गया है। अहिंसा को जीवन की एकता पर आधारित माना गया व बन्धुत्व पर जोर दिया गया।

पौराणिक साहित्य में अहिंसा को धर्म ही घोषित किया गया है। महाभारत में अहिंसा को कहीं परमधर्म तो कही सकल धर्म कहा है। सूक्ष्म स्तर पर अहिंसा और सत्य एक ही हो जाते है। दर्शन सम्प्रदायों की नैतिकता में भी अहिंसा को केन्द्रिय स्थान प्राप्त है। शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत अहिंसा का आग्रह करते हुए योग भाष्य में उसे योगी का मूल व्रत बताया है। जैन दर्शन के पंच व्रतों में न केवल अहिंसा की गणना की गयी हैबल्कि अहिंसा ही सभी व्रतों का मूल है। जैन आगम आचारांग सूत्र में अहिंसा को शुद्ध नित्य और शाश्वत धर्म बताते हुए जीवन मात्र की समता को स्थापित किया गया है तथा निर्देश दिया गया है कि किसी भी प्राणी, भूत, जीव व सत्व का हनन नहीं करना चाहिये उन पर शासन नहीं करना चाहिये, उन्हें दासनहीं बनाना चाहिये उन्हें कष्ट नहीं देना चाहिये व उनका प्राण हनन नहीं करना चाहिये। बौद्ध धर्म में जिस अष्टांग मार्ग का उपदेश गौतम बुद्ध ने दिया है उसमें वाक्कर्मात और आजीव का सीधा संबंध अहिंसक आचरण से है। बौद्ध नीति शास्त्र में बहा विहार की अवधारणा का बड़ा महत्व है जिसका तात्पर्य है मैत्री (सभी प्राणियों से प्रेम)करूणा (सबके प्रति निरपेक्ष दया), मुदिता (सबको हानि पहुंचाने वाले तक के प्रति प्रसन्नतापूर्वक सहानुभूति) तथा उपेक्षा (अपनी निन्दा-प्रशंसा के प्रति अवेहलना) भाव का विकास। मनोवैज्ञानिक स्तर पर ये सभी अहिंसा भाव की ही अभिव्यक्तियां है। मध्यकालीन संतो यथा

कबीर, नानक, चैतन्य, तुलसीदास, दादू, पीपा, आदि ने भी अहिंसा को धर्म का लक्षण बताया है। तुलसीदास कहते है "परहित सरस धरम नहीं भाईपरपीड़ा सम नहीं अधमाई।" नानक सिख धर्म के संस्थापक है। वह मजलूसों के प्रति अत्याचार का निषेध करते हुऐ पशु पक्षियों तक के प्रति हिंसा को भी उतना ही गलत मानते है जितना मनुष्य के प्रति हिंसा को। कबीर तो यहाँ तक कह देते है कि यदि जीव हत्या करने वाले लोग धार्मिक है तो पापी और कसाई कौन है। संत पीपा ने तो अहिंसा के आग्रह के कारण राज्य-त्याग तक कर दिया था

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा समस्याओं के समाधान के लिए सर्वाधिक उपयोगी साधन रहा है। अहिंसा को विभिन्न लोगो ने विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया है। जीवन के विभिन्न पक्षों के साथ अहिंसा को आत्मसात् करके इसे एक संस्कृति का रूप दे दिया। भारत और विश्व में अहिंसा की संस्कृति ने विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महात्मा गांँधी ने अहिंसा को एक व्यवस्थित सामाजिक सिद्धान्त के रूप में विकसित किया। अहिंसा की शुरूआत घर व परिवार से होती है। महात्मा गांँधी के समय सामाजिक और राजनीतिक जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याऐं विद्यमान थी। ये समस्याएँ व्यापक रूप धारण करती जा रही थी। महात्मा गांँधी ने इन समस्याओं का समाधान अहिंसा से किया। गांँधी ने अब तक अलग थलग रही अहिंसा को धार्मिक आध्यात्मिक और नैतिक आधार दिया। गांधी जी ने भारत में धार्मिक आध्यात्मिक व नैतिक अराजकता को समाप्त किया। गांधी जी अहिंसा के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त अराजकता को समाप्त नहीं करते तो भविष्य में राजनीतिक व आर्थिक अराजकता बढ़ती और भारतीय समाज पूर्ण अराजकता व अव्यवस्था में बदल जाता। गांँधीजी की अहिंसा सकारात्मक थी जिसमें प्रेम को सर्वोच्च प्राथमिकतादी गयी। गांँधी जी ने अहिंसा के माध्यम से समाज को तोड़ा नहीं गांँधीजी की अहिंसा भारत की संपूर्ण संस्कृति में व्याप्त हो गयी। इसने विभिन्न जोड़ा। 768 राष्ट्रों की संस्कृतियों में समन्वय स्थापित किया है। वैश्विक समाज में अहिंसा के माध्यम से एकता व सामंजस्य को बढ़ाया है व अलगाव तथा एकाकीपन को समाप्त किया है। गांधी की अहिंसा सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई के रूप में देखती है। मानव की गतिविधियों को अलग थलग नहीं मानती है। मानव व समाज की एकता में विश्वास किया जाता है। महात्मा गांधी ने अहिंसा की संस्कृति को स्वीकार करते हुए इसे ओर अधिक व्यापक उपयोगी व लाभदायक बनाया है। हिंसा से प्रति हिंसा होती है तथा यह बिना किसी रूकावट के अनन्त समय तक चलती रहती है। महात्मा गांँधी द्वारा अहिंसा की व्याख्या व उनके द्वारा अहिंसा के पालन के इस अध्ययन में यह स्पष्ट होता है वे एक बुद्धिमान चिकित्सक थे जिन्होंने अहिंसा को हिंसा व हिंसा को अहिंसा के माध्यम से संचालित किया। अहिंसा की संस्कृति को स्थापित करने में

महावीर स्वामी और जैन धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। जैन धर्म के अनुयायियों ने अहिंसा की संस्कृति को सदा प्रासंगिक बनाये रखा है। महात्मा गांॅधी जैन धर्म की अहिंसा से प्रभावित थे। अहिंसा को प्राथमिकता देने के कारण गांधीजी ने कहा था कि जैन धर्म विश्व धर्म बन सकता है समयान्तर में जैन धर्म में बुराईयों आने लगी। इन बुराईयों के समाधान के लिए, अहिंसा की नई व्याख्याएँ करनी पडी। महावीर स्वामी के बाद जैन धर्म में हिंसा होने लग गयी थी व जैन आचार्यों व साध्वियों की सुरक्षा खतरे में पडने लग गयी थी। आत्मा की शक्ति कमजोर पडने लग गय थी। गृहस्थियों के लिए अलग प्रकार की अहिंसा निर्धारित की गयी। जैन धर्म में अहिंसा को व्यक्तिगत जीवन तक सीमित माना जाता रहा है।उनकी अहिंसा अक्रियाशील व कार्य से अनुपस्थिति नहीं है। यह क्रियाशील व कार्यों में सक्रियतापूर्वक भाग लेने वाली नीति हैं। गांधीजी ने नकारात्मक व सकारात्मक अर्थ में अहिंसा को स्पष्ट किया है। मन, वचन व कर्म से किसी को नुकसान न पहुँचाना व नुकसान न पहुंॅचाने का विचार तक मन में न लाना, नकारात्मक अहिंसा है तथा व्यापक जन समुदाय से स्नेह व परोपकार सकारात्मक अहिंसा है। इसमें सत्य व निडरता हमेशा व्याप्त रहती है। सच्ची अहिंसा का पालन करने वाला किसी को मारने या नुकसान पहुँचाने की इच्छा के बिना सदैव मरने के लिए तत्पर रहे। यह जीवन के सन्दर्भ में प्रेम और मित्रता की नीति है। गांॅधीजी की नैतिकता में सकारात्मक नैतिकता पर जोर दिया गया है। अहिंसा आत्मबल या आत्मा की शक्ति है। अहिंसा शक्तिशाली का हथियार है। कायर को तो हिंसा ही अपनानी चाहिये। कायरता व अहिंसा एक दूसरे से विरोधाभासपूर्ण है। गांॅधीजी ने अहिंसा को भारतीय परम्परा में उच्च नैतिकता व सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाया। उन्होने केवल शिक्षाएँ ही नहीं दी, बल्कि उन शिक्षाओं को व्यावहारिक जीवन में अपनाया व क्रियाशील रहकर मानव जीवन के हर पक्ष में अहिंसा को अनुकरणीय बनाया। भारत में अहिंसा सत्तत् रूप से प्रचलित रही है व समय के साथ इसका दायरा व्यापक होता गया है। गांधीजी ने कहा कि अहिंसा सकारात्मक प्यार की स्थिति है परन्तु यह गलत कार्य से स्वयं को अलग करने की नीति भी है। यह मनुष्य के नैतिक व आध्यात्मिक सद्गुणों की उपस्थिति व उन्हें व्यवहार में लागू करने की नीति है। यह सत्य व प्यार (स्नेह) की खोज की नीति है। यह आध्यात्म और धर्म की नीति है। जो धर्म को राजनीति से अलग रखते है वे वास्तविक अर्थो में धर्म का अर्थ ही नहीं जानते। गांॅधीजी का अहिंसा का सिद्धान्त अद्वितीय है।गांॅधीजी ने अहिंसा का प्रयोग समाज के पुनः निर्माण के लिए करने

की शिक्षा दी। सत्य को ही अहिंसा माना । अहिंसा के बिना सत्य का कोई आधार नहीं है। वे मानते थे कि सत्य ही ईश्वर है। अहिंसा के सन्दर्भ में स्नेहउद्देश्य पूर्ति का एक साधन है। सामाजिक परिवर्तन के लिए सत्याग्रह एक प्राथमिक स्त्रोत है। सामाजिक पुनः निर्माण के लिए अहिंसा एक सार्वाधिक उपयुक्त साधन है। इससे सामाजिक समस्याओं का समाधान

होता है। गांधीजी पहले कर्मयोगी थे जिन्होंने सामाजिक बदलाव के लिए सर्वप्रथम अहिंसा का प्रयोग किया। स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान अहिंसा सबका साधन ही बना रहा। अहिंसा सभी सजीवों के लिए दूषित विचारों की अनुपस्थिति है। गांॅधीजी सर्वप्रथम एक नैतिक व्यक्तित्त्व थे। उनका जीवन सत्य के सर्वोच्च मूल्यों को जीवन के सभी पक्षों में लागू करने का सतत् प्रयास था। उनका दर्शन सैद्धान्तिक नहीं व्यावहारिक है। यह सर्वोच्च व्यवस्था का सुसंगत नैतिक कार्यरूप का दर्शन है। गांधीजी की अहिंसा में सिद्धान्त व व्यवहार में एकता है। अहिंसा की संस्कृति में गांधीजी से पहले सभी जगह व्यक्तिगत क्षेत्र पर ही जोर दिया जाता था। गांॅधीजी का अहिंसा की संस्कृति में सर्वोच्च योगदान यह है कि उन्होंने अहिंसा को व्यक्तिगत क्षेत्र से बाहर निकालकर सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक व राजनीतिक सभी क्षेत्रो में लागू कर दिया।

गांॅधीजी पहला व्यक्ति था जिसने अहिंसा की संस्कृति को स्थानीयता से जोडा। जहाँ व्यक्ति रह रहा है उस क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर अहिंसा की नीति को अपनाये। गांॅधीजी की अहिंसा, सभी लोगों को अपनी भाषा, अपनी जीवन प्रणाली व अपनी संस्कृति की अपील करती है।गांॅधीजी का सत्य, ईश्वर है। ईश्वर अलौकिक माना जाता है, परन्तु गांधीजी का ईश्वर लौकिक, मानववादी, आत्मा की पवित्रता से जुड़ा हुआ एक सर्वोच्च नैतिक आदेश है जो पूरी मानव जाति के लिए लाभप्रद है। गांॅधीजी की अहिंसा जब सत्य है तो यह ईश्वर भी है जो आत्मा से जुड़कर, समाज में सर्वोच्च नैतिक व्यवस्था को बनाने के लिए तत्पर है। यह अहिंसा मानव जीवन के मूल्यों से जुड़कर उदार, पवित्र व मानवतावादी व्यवस्था की स्थापना में सहायक है। इसमें अव्यवस्था व अराजकता की कोई संभावना नहीं है क्योंकि अहिंसा ईश्वर का आदेश है।

गांॅधीजी की अहिंसा आत्मा की आवाज व कर्तव्यों की पहचान है। अहिंसा आत्मा से स्वीकश्त है अतः इसमें कोई अन्याय भेदभाव व बुराई संभव नहीं है। यह सब के हितों व मानवता के कल्याण से जुड़ी हुयी है क्योंकि सच्ची अहिंसा की आवाज आत्मा से निकलती है। गांधीजी ने अहिंसा की संस्कृति में कर्त्तव्यों के पालन पर भी जोर दिया है। गांधीजी की अहिंसा समाज में संतुलन स्थापित करती है जो सभी व्यक्तियों द्वारा अपने कर्त्तव्यों के पालन से ही संभव है। यद्यपि गांधीजी कर्त्तव्यों के पालन को नैतिकता से ही जोडते है परन्तु गांधीजी की नैतिकता इतनी शक्तिशाली है कि राज्य की सम्प्रभुता भी उसके सामने कमजोर नजर आती है।

गांॅधीजी ने अहिंसा को पहली बार सम्पूर्ण जन समुदाय से जोड़ा,जो अहिंसा की संस्कृति में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। गांधीजी से पूर्व अहिंसा कुछ लोगों तक ही सीमित थी जिसका केवल सैद्धान्तिक विश्लेषण ही किया जाता था। गांॅधीजी ने अहिंसा को संकीर्णता के दायरे

से बाहर निकालकर सम्पूर्ण जन समुदाय को अहिंसा संभाला दी।मानव विकास के संबंध में महात्मा गांँधी के विचार अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के विकास के लिए प्रयोगों के साथ ही बीता। उनके जीवन काल में व वैश्विक स्थिति में बहुत से परिवर्तन आये। राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र पूर्णतया बदल गया। महात्मा गांँधी ने नैतिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक न्याय के जो मुद्दे उठाये! वे आज भी प्रासंगिक है। आर्थिक वश्द्धि, औद्योगिकरण, ऊर्जा की खपत व शहरीकरण आदि के आधार पर मानव विकास को मापना करोडो लोगों के साथ अन्याय करना है। गांँधीजी मानव विकास को भली भाँति जानते थे व इसके मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना चाहते थे। विज्ञान व तकनीक के अत्यधिक प्रयोग से, गरीबी, मानवाधिकारों की मनाही, शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा कमजोर राष्ट्रो पर आधिपत्य और निर्दोष लोगों को आतंकवाद का शिकार बनाना आदि ऐसे मुद्दे है जिनके कारण गांँधीजी के मानव विकास में इस बात पर जोर दिया गया है कि बाजार की ताकत या आर्थिक पक्ष जीवन में प्रभावी व निर्धारक नही हो,बल्कि मानवीय मूल्यों को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाय। मनुष्य की क्षमता के अनुसार नैतिक मूल्यों का पालन किया जाय। सत्य जीवन का सर्वोच्च मूल्य है। व्यक्ति जब अपने हितो,स्वार्थो, भावनाओं या सापेक्ष सत्य की जगह सार्वजनिक हितों, स्वार्थो, मुद्दो भावनाओं पर जोर देने लगता है तो उसमें संकीर्णता दूर होने लगती है व्यापकता आने लगती है,इससे निरपेक्ष सत्य विकसित होता है जो शाश्वत व सार्वभौमिक होता है। निरपेक्ष सत्य के पालन से मन निर्मल व पवित्र होता है। आत्मा की शुद्धि होती है व पवित्रता आती है। मन या आत्मा की शुद्धि से परहित व पर कल्याण की भावना विकसित होती है।गांँधीजी राज्य व राजनीतिक व्यवस्था को अनावश्यक मानते थे, क्योंकि राज्य तो व्यक्ति के जीवन पर भौतिक बल की विजय है। राज्य आत्मा का हनन कर, दमन व उत्पीडन को बढ़ाता है। नैतिक मूल्यों का दमन व हास होता है। फिर भी यदि राज्य को स्वीकार करना पड़े तो राज्य मानव विकास के लिए समानता के सिद्धान्त को विकसित करेगा व स्वतन्त्रता को विकसित करेगा। स्वतन्त्रता व समानता के वातावरण में ही मानव हित के लिए लोकतन्त्र विकसित होगा। लोकतन्त्र में 'मानव अधिकारों पर बल देने से मानव विकास की पृष्ठभूमि तैयार होगी। विकेन्द्रीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाय, इससे जनता का शासन स्थापित होगा। गांँधीजी की आदर्श व्यवस्था राम राज्य है जो दशरथ के पुत्र राम का राज्य नहीं होकर विकेन्द्रित,सुशासित व आत्मा से संचालित व्यवस्था है। स्थानीय स्तर पर गांँवो के लोग शासन स्वयं ही संचालित करे व प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधि चुनकर प्रत्यक्ष लोकतन्त्र को साकार करे।

गांँधीजी की सामाजिक, व्यवस्था संतुलन स्थापित करती है। वर्ण व आश्रम व्यवस्था उनके सम्पूर्ण विचारों का एक मार्ग है। अतः मानव के संतुलित विकास के लिए कर्म पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था को अपनाया जाय। जाति व अस्पृश्यता समाप्त हो सफाई करने वाला

ईश्वर का सबसे प्रिय व्यक्ति है जिसे गांधीजी ने उस हरिजन नाम दिया। स्त्रियों को सम्पत्ति के अधिकार सहित सभी जगहों पर समानता दी जाय। बाल विवाहबहु विवाह को प्रोत्साहन दिया जाय। हरिजनों को मंदिर प्रवेश व कुओं पर पानी भरने जैसे अधिकार देने से ही मानव विकास हो सकेगा।

गांँधीजी ने आत्म निर्भर आर्थिक जीवन पर बल दिया। औद्योगिकरण व बड़े यन्त्रों का प्रयोग सीमित रूप में ही होने से भारत का परम्परागत आर्थिक जीवन चलता रहेगा।महात्मा गांँधी ने मानव विकास के लिए सर्वोदय को सर्वश्रेष्ठ अहिंसक तरीका माना। सर्वोदय का अर्थ है सभी जीवित प्राणियों का विकास व सभी का जन जनकल्याण। सर्वोदय में कोई भेदभाव नहीं होता तथा सभी का भौतिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास होता है। इसमें दया, सहिष्णुता, देवत्व, परोपकार व समानता का भाव निहित है। सर्वोदय सभी के अस्तित्व व विकास में विश्वास करता है। यह सभी के जनकल्याण का सिद्धान्त है। सर्वोदय,समाज में सबसे अन्तिम स्थान पर खडे सबसे निर्धन व्यक्ति का उदय है। उस निर्धन व्यक्ति को सभीप्रकार की सहायता देकर अन्यों के रामान, उसका विकास करना है। सर्वोदय, स्वेच्छा से अपनाया जाने वाला कार्यक्रम है। इसमें समाज के सबसे निम्नतम व्यक्ति का विकास शामिल है। जब सर्वोदय में सबसे निर्धन, गरीब, पिछडे, वंचित व उपेक्षित का विकास हो जायेगा, तो सारे समाज का विकास हो जायेगा। सर्वोदय समाज में कोई वंचित, उपेक्षित, दरिद्र, पिछडा व गरीब नहीं रहेगा व सम्पूर्ण मानव जाति का विकास संभव हो सकेगा।

अहिंसा की परम्परा सदा से चली आ रही है महात्मा गांधी ने इसे स्थायित्व प्रदान किया। उन्होने अहिंसा को व्यवहारिक बनाया अहिंसा को नकारात्मक से सकारात्मकता में परिवर्तित किया। गांँधीजी के व्यापक विचारों से अहिंसा का आयाम विस्तृत हो गया और इसने एक व्यापक संस्कृति का रूप धारण किया। महात्मा गांधी के बाद भी अहिंसा की संस्कृति जारी ही नहीं रही बल्कि इसमें और अधिक विस्तार हुआ। भारत में और भारत के बाहर अहिंसा की संस्कृति के माध्यम से मानव विकास का रास्ता ढूंँढा गया।

भारत में महात्मा गांधी के बाद बहुत से विद्वानों, मनीषियों व कर्म योगियों ने अहिंसा की उपयोगिता व सार्थकता सिद्ध की। विनोबा भावे गांधीजी के अनुयायी और अहिंसा के उपासक थे। मानव विकास के लिए उन्होने सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान दस्यु उन्मलन आदि कार्यक्रम चलाये lग्राम के लोग स्वतंत्र से ग्रामदान को अपनाते है तो वहाँ पूरा गांँव मिलकर ग्राम की व्यवस्था संभालेगा। चम्बल के बीहडों में दस्यु हिंसा का सहारा लेकर लूट पाट करते थे। विनोबा ने उनको समझा कर बड़े पैमाने पर आत्म समर्पण करवाया व उन्होने हिंसा की जगह स्वेच्छा से अहिंसा को अपनाया। जयप्रकाश नारायण ने विनोबा जी का पूरा साथ दिया तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक शैक्षिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में

परिवर्तन करने की पहल की, ताकि सम्पूर्ण वातावरण में सुधार लाया जा सके। इसे उन्होने सम्पूर्ण क्रांति का नाम दिया। जवाहरलाल नेहरू गांँधीजी की अहिंसा के पूर्ण अनुयायी थे। गांँधीजी के बाद भी उन्होने अहिंसा के नियमों का पूर्णतः पालन कर मानव जीवन को सरल सुलभ और आसान बनाया। उनकी शान्तिपूर्ण सह अस्तित्त्व की नीति अहिंसा का ही परिणाम थी। वे जीओ और जीने दो में विश्वास करते थे। पंचशील व गुट निरपेक्षता की नीतियां अहिंसा को ही आधार मानकर अपनायी गयी। परमाणु शक्ति से भारत को दूर रखने का कारण भी अहिंसा में ही पूर्ण विश्वास रखना थ। आचार्य रजनीश व्यावहारिक दार्शनिक थे। अहिंसा को उन्होने मानव प्रेम माना। एक दूसरे के प्रति प्रेम ही सत्य और ईश्वर है तथा यही सच्चा मानव विकास है। जैन दार्शनिक, मुनि व आचार्य तुलसी व युवाचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा की वैज्ञानिक व्याख्या की है। महाप्रज्ञ जी की मान्यता है कि तनाव से हिंसा होती है अतः तनाव को दूर करके अहिंसा की प्राप्ति की जा सकती है। मांसपेशियों का तनाव, मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करता है। झूठे दंभ, भौतिक साधनों के प्राप्ति की भूख व क्रोध से भी तनाव बढ़ता है। तनाव को केवल मेडिटेशन से ही दूर किया जा सकता है।ग्राम के लोग स्वतंत्र से ग्रामदान को अपनाते है तो वहाँ पूरा गांँव मिलकर ग्राम की व्यवस्था संभालेगा। चम्बल के बीहडों में दस्यु हिंसा का सहारा लेकर लूट पाट करते थे। विनोबा ने उनको समझा कर बड़े पैमाने पर आत्म समर्पण करवाया व उन्होने हिंसा की जगह स्वेच्छा से अहिंसा को अपनाया। जयप्रकाश नारायण ने विनोबा जी का पूरा साथ दिया तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक शैक्षिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन करने की पहल की, ताकि सम्पूर्ण वातावरण में सुधार लाया जा सके। इसे उन्होने सम्पूर्ण क्रांति का नाम दिया। जवाहरलाल नेहरू गांँधीजी की अहिंसा के पूर्ण अनुयायी थे। गांँधीजी के बाद भी उन्होने अहिंसा के नियमों का पूर्णतः पालन कर मानव जीवन को सरल सुलभ और आसान बनाया। उनकी शान्तिपूर्ण सह अस्तित्त्व की नीति अहिंसा का ही परिणाम थी। वे जीओ और जीने दो में विश्वास करते थे। पंचशील व गुट निरपेक्षता की नीतियां अहिंसा को ही आधार मानकर अपनायी गयी। परमाणु शक्ति से भारत को दूर रखने का कारण भी अहिंसा में ही पूर्ण विश्वास रखना थ। आचार्य रजनीश व्यावहारिक दार्शनिक थे। अहिंसा को उन्होने मानव प्रेम माना। एक दूसरे के प्रति प्रेम ही सत्य और ईश्वर है तथा यही सच्चा मानव विकास है। जैन दार्शनिक, मुनि व आचार्य तुलसी व युवाचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा की वैज्ञानिक व्याख्या की है। महाप्रज्ञ जी की मान्यता है कि तनाव से हिंसा होती है अतः तनाव को दूर करके अहिंसा की प्राप्ति की जा सकती है। मांसपेशियों का तनाव, मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करता है। झूठे दंभ, भौतिक साधनों के प्राप्ति की भूख व क्रोध से भी तनाव बढ़ता है। तनाव को केवल मेडिटेशन से ही दूर किया जा सकता है।विश्व में अहिंसा की संस्कृति की एक व्यापक परम्परा रही है। प्राचीन काल से वर्तमान समय तक बड़े बदलाव तात्कालीक उपाय है। अहिंसा को

आदर्शात्मक, नैतिक, अव्यावहारिक व उपदेशात्मक माना जाता रहा है। सभी तरह की समस्याएँ आती रही, उनके उपाय भी खोजे जाते रहे परन्तु अहिंसा को कभी भी मुख्य धारा में शामिल नहीं किया गया। समसामयिक विश्व में समस्याएँ अनियन्त्रित ढंग से बढ़ रही है। समस्याओं को उत्पन्न करने वाला भी उनके जाल में स्वयं फसता जा रहा है। हथियारों की दौड़ परमाणु शक्ति का भय, विभिन्न राज्यों का बदलता हुआ व्यवहार, मनुष्यों की आवश्यकताओं में परिवर्तन, उच्च तकनीक का विकास व सृष्टि को जीवित रखने की इच्छा ने अहिंसा की संस्कभति को महत्वपूर्ण बना दिया है। आज अहिंसा की संस्कृति अधिक आवश्यक हो गयी है। अब अहिंसा की संस्कृति उपदेशात्मक,आदर्शात्मक व नैतिक न होकर अनिवार्य, आवश्यक, व्यावहारिक तथा समाधानात्मक हो गयी है। सृष्टि को जीवित रखने के लिए अहिंसा को मुख्य धारा में लाना होगा तथा समसामयिक विश्व अहिंसा की संस्कृति को अपना कर ही अपना भविष्य सुरक्षित रख सकता है।अहिंसा की संस्कृति को समसामयिक वैश्विक परिदृश्य के सन्दर्भ में भी देखना आवश्यक है। वैश्विक परिदृश्य में हिंसा की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। विश्व के लगभग सभी देशों ने 1990 के बाद उदारीकरण, निजीकरण व वैश्विकरण को अपनाया है। सोवितय संघ के विखण्डन व साम्यवादी गुट के विघटन के बाद विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका का ही वर्चस्व रह गया है। विश्व द्विध्रुवीय से एक ध्रुवीय बन गया है अमेरिका के एकाधिकार ने विश्व में आर्थिक व्यवस्था पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर लिया है। डब्ल्यू.टी.ओ. के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कंपन्नियों को आर्थिक शोषण की खुली छूट मिल गयी है।समसामयिक वैश्विक परिदृश्य भयावह और खतरनाक स्थिति में पहुँच गया है। चारों तरफ हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा हैं संगठित हिंसा राज्यों को चुनौती पेश कर रही हैं राजनीतिक व्यवस्थाएँ अपने अस्तित्व को बचाने में लगी हुयी है। सीमा, विवाद नदी जल बंटवारा विवाद आदि उभर रहे है। राष्ट्र राज्य की अवधारणाएँ कमजोर पडने लगी है। केन्द्रीयकरण बढ़ रहा है। इससे समस्याएँ कम होने की जगह बढ़ रही है। अहिंसा में मानव समाज का अधिक महत्व है। समाज एक प्रयोगशाला है। जीवन का वास्तविक प्रशिक्षण समाज से ही मिलता है। समाज में बहुलता व विविधता होने से एक सामान्य नियम नहीं बन सकता है। अहिंसा को अपना कर मानव समुदाय का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। आत्मा को शुद्ध किया जा सकता है इससे सामाजिक जीवन में सुधार हो सकेगा। मनुष्य में सहयोग, सहिष्णुता, प्रेम, मित्रता, परोपकारिता आदि गुण विकसित होंगे इन गुणों से मानव नये जीवन का सृजन कर सकेगा व मानव विकास का रास्ता प्रशस्त होगा। धर्म, आध्यात्म व नैतिकता से मानव समुदाय में पवित्रता आती है। मानव इन गुणों से हिंसा से दूर हो जाता है व अहिंसा के नजदीक आता है। उदारवादी व्यवस्था में औद्योगीकरण व बड़े उद्योगों से असमानता, शोषण अन्याय व अत्याचार बढ़ने से मानवता शर्मसार होती है अतः अहिंसक अर्थव्यवस्था अपना कर स्वायतता आत्मनिर्भरता,

विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी लघु उद्योगों से उत्पादन आदि को बढावा देकर मानव विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियां तैयार की जा सकती है। पर्यावरण असंतुलन से घातक बीमारियों बढ रही है और परमाणुबम की धमकी देकर आवश्यक दबाव बनाया जा रहा है। इन सब बुराईयों पर नियन्त्रण पाने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा को अपनाना ही श्रेष्ठ उपाय है। अहिंसा की संस्कृति नये तरीके से जीवन जीने की कला सिखाती है जिसे सीख कर अहिंसात्मक तरीके से मानव विकास किया जा सकता है यही अन्तिम उपाय है।

मानव विकास व मानव कल्याण पर विश्व में बहुत सारे चिन्तकों, मनीषियों, विद्वानों व कर्मयोगियों ने चिन्तन, मनन व कर्म करके बदलाव लाने का प्रयास किया है। मानव विकास को केन्द्र बनाकर बहुत सारी विचारधाराओं ने सैद्धान्तिक चिन्तन के साथ व्यावहारिक समाधान ढूंढ़ने का भी प्रयास किया है। भौतिक विकास करने के बाद नैतिक, आध्यात्मिक व धार्मिक विकास की तरफ ध्यान दिया जाता है। विश्व में कुछ देशों ने तो अत्यधिक भौतिक विकास कर लिया व कुछ देशों ने अभी भौतिक विकास के क्षेत्र में अभी एक-दो कदम ही रखे हैं, ऐसी स्थिति में सबको समान नहीं माना जा सकता तथा न ही सबके लिए एकसा मानव विकास निर्धारित किया जा सकता।

समय व देश के अनुरूप मानव विकास की अवधारणा में बदलाव आते रहते हैं इन बदलावों को साथ रखते हुए, मानव विकास में नवीन आयाम स्थापित करना वास्तविक प्रयास कहा जा सकता है। गांधीजी ने जीवन के प्रत्येक पक्ष को पुनः निर्धारित व परिभाषित करने का कार्य किया है। उन्होंने बदलाव या परिवर्तन को तो आवश्यक माना है लेकिन इसे सत्य, अहिंसा व ईश्वर के साथ जोड़ा है। ऐसा करके उन्होंने विचारों में परिपूर्णता लाने का कार्य किया है। नैतिकता का उन्होंने पूरजोर तरीके से स्थापित करने का प्रयास किया है। मानव कल्याण के लिए शासक, शाषित के हाथ में पूर्ण स्वतंत्रता छोड़कर, स्वयं को भी नियंत्रण से दूर रहना चाहिए। इससे उत्तरदायित्व का विकास होता है।

मानव विकास तो अभी भी पूर्ण पहचान पाने के संघर्ष में ही चल रहा है परंतु गांधी का चिन्तन एक संश्लिष्ट भौतिक और महत्वपूर्ण चिन्तन है जिसे वैश्विक समाज सर्वकालिक सार्वभौमिक और अन्तर्राष्ट्रीय मानता है। वर्तमान में मानवता व मानव विकास खतरे में जिसे बचाने की सख्त जरूरत है। विश्व के सभी लोगों के लिए माना विकास महत्व रखता है अतः इसमें सभी लोग अपनी हैसियत के अनुस अपना योगदान कर मानव मानवता व मानव विकास के लिए सकारात्म कार्य करे, जिससे कार्य के प्रति लगाव उत्पन्न हो व समाज के सभी लो कर्म करने की तरफ प्रेरित हो सकारात्मक कार्य करें ।

भाषा-शैली :

1. सरल एवं सहज भाषा

गांधीजी की विचारधारा सीधी, सरल और जनमानस को समझ में आने वाली थी, इसलिए लेखन भी अत्यंत सरल और स्पष्ट होना चाहिए।

जटिल शब्दों और भारी-भरकम वाक्यों से बचना चाहिए।

उदाहरण : "गांधीजी का मानना था कि सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के दुख को अपना माने।"

2. प्रेरणादायक एवं भावात्मक शैली

गांँधीजी का जीवन और उनके सिद्धांत पाठकों में संवेदना, करुणा और प्रेरणा जगाने वाले होने चाहिए।

भाषा में मानवीय संवेदनाओं को छूने की शक्ति होनी चाहिए।

उदाहरण:

"गांधीजी का हर कदम हमें यह सिखाता है कि सेवा, करुणा और सच्चाई से ही मानवता को बचाया जा सकता है।"

3. नैतिकतापूर्ण एवं आदर्शवादी भाषा

गांँधीजी के जीवन में नैतिक मूल्यों को बहुत महत्व दिया गया है, इसलिए लेखन में आदर्शवादी स्वरूप झलकना चाहिए।

सत्य, अहिंसा, सेवा जैसे शब्दों का उचित प्रयोग होना चाहिए।

उदाहरण:

"गांधीजी के लिए सत्य केवल शब्द नहीं था, वह जीवन जीने की संपूर्ण राह थी।"

Sunitha

4. सुसंगठित एवं तर्कयुक्त भाषा

विचारों को क्रमबद्ध और तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मानवीय उदाहरणों का भी प्रयोग होना चाहिए।

उदाहरण:

"गांधीजी के आंदोलन न केवल राजनीतिक परिवर्तन के लिए थे बल्कि उन्होंने समाज में मानवता के बीज भी बोए।"

5. विनम्र एवं सकारात्मक शैली

गांँधीजी की शैली हमेशा विनम्र और सौम्य थी इसलिए लेखन में भी कटुता या आक्रोश से बचना चाहिए।

भाषा में आशा, शांति और सकारात्मक ऊर्जा होनी चाहिए।

उदाहरण:

"गांँधीजी ने हिंसा के समय भी प्रेम और क्षमा का पाठ पढ़ाया।"

स्वयं का दृष्टिकोण :

महात्मा गांँधी का जीवन और उनके सिद्धांत मेरे दृष्टिकोण से केवल भारत की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं हैं। वे संपूर्ण मानवता के प्रतीक हैं। गांँधीजी ने अपने विचारों और कर्मों से यह स्पष्ट कर दिया कि किसी भी समाज, देश या युग में, मानवता ही सर्वोच्च मूल्य है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि मनुष्य के लिए सबसे बड़ी सेवा, मानव सेवा है।

गांँधीजी के प्रति मेरी भावनाएँ :

गांँधीजी का व्यक्तित्व मेरे मन में विशेष स्थान रखता है। जब मैं उनके जीवन की घटनाएँ पढ़ता हूँ, तो मुझे यह प्रतीत होता है कि वे केवल एक राजनेता नहीं थे बल्कि एक आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक थे। उन्होंने सत्य, अहिंसा, करुणा, और सहिष्णुता जैसे गुणों को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया था। उनके लिए धर्म का अर्थ पूजा-पाठ नहीं बल्कि सभी जीवों में ईश्वर के दर्शन करना था।

Sunitha

मेरे अनुसार, गांँधीजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल बोलते नहीं थे बल्कि अपने विचारों को आचरण में भी लाते थे। उनके लिए 'अहिंसा परमो धर्मः' कोई नारा नहीं था, वह उनका जीने का तरीका था। यही मानवता की सच्ची मिसाल है।

आज के युग में गांँधीजी का महत्व :

मुझे ऐसा लगता है कि आज की दुनिया में गांँधीजी के विचार और अधिक जरूरी हो गए हैं। जब चारों ओर हिंसा, आतंकवाद, भेदभाव और स्वार्थ की दीवारें खड़ी हो रही हैं गांँधीजी के सिद्धांत मानवता के लिए प्रकाशपुंज हैं। आज के समय में लोग दूसरों को दबाने में, जीतने में और दिखावा करने में व्यस्त हैं। ऐसे में गांधीजी का 'सादा जीवन, उच्च विचार' का सिद्धांत हमें आत्मविश्लेषण करने को प्रेरित करता है।

मेरे नज़रिए में, यदि हम गांँधीजी के विचारों को अपने जीवन में अपनाये, तो समाज में सहिष्णुता बढ़ेगी, आपसी भाईचारा मजबूत होगा और हर व्यक्ति में संवेदनशीलता का विकास होगा। गांँधीजी ने जो मानवता का संदेश दिया, वह सीमाओं में बंधा नहीं था, वह संपूर्ण विश्व के लिए था।

गांँधीजी से मेरी प्रेरणा :

गांँधीजी के जीवन से मुझे यह प्रेरणा मिलती है कि छोटे-छोटे कार्यों से भी समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत व्यवहार से यह सिद्ध किया कि यदि हम ईमानदारी, अहिंसा और सच्चाई के साथ आगे बढ़ें तो बड़ी से बड़ी ताकत को भी झुका सकते हैं।

गांँधीजी ने हमें सिखाया कि सेवा, परोपकार, और प्रेम से ही सच्चा सुख प्राप्त होता है। वे 'सर्वोदय' में विश्वास रखते थे – अर्थात् सबका विकास, सबका कल्याण। मैं भी यह मानता हूँ कि यदि समाज के अंतिम व्यक्ति का कल्याण नहीं होता तो किसी भी राष्ट्र का विकास अधूरा l

मेरे अनुसार, महात्मा गांँधी और मानवता एक-दूसरे के पर्याय हैं। गांँधीजी का हर आंदोलन, हर विचार और हर संघर्ष केवल स्वतंत्रता के लिए नहीं था, वह मानवता की रक्षा के लिए था। गाँधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे।

उन्होंने हमें यह सिखाया कि सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के दुख को समझे और उनके लिए कुछ करने का प्रयास करें।

मुझे विश्वास है कि यदि हम गांधीजी के दिखाए मार्ग पर चलें तो न केवल भारतबल्कि पूरी दुनिया में शांति, प्रेम और मानवता का दीपक फिर से प्रज्वलित हो सकता है। गांधीजी के सिद्धांत आज भी मेरे लिए प्रेरणा स्रोत हैं और जीवन भर रहेंगे।

हे महात्मा....

जब भी मैं सोचता हूँ गांँधी का नाम,

दिल में उठता है एक अनोखा सा जज्बात।

ना वो केवल नेता थे, ना सिर्फ़ एक विचार,

वो मेरे भीतर बसी एक सच्ची पुकार।

मेरा अहसास कहता है – वो अब भी यहीं हैं,

हर सच्चे कदम में, हर कोमल दिल में वहीं हैं।

उनकी चप्पलों की आवाज़, अब भी सुनाई देती है,

उनकी सादगी, आज भी राह दिखाती रहती है।

जब मैं किसी के लिए माफी चाहता हूँ

जब किसी दुखियारे को अपनाता हूँ

जब मैं झूठ से लड़कर सत्य के संग चलता हूँ

तो लगता है महात्मा मेरे साथ चलता है।

मेरा अहसास, उनसे जुड़ा एक विश्वास है,

कि सच्चाई का रास्ता आज भी खास है।

गांँधी मेरे लिए किताब नहीं, तस्वीर नहीं,

वो मेरे भीतर बसी हुई एक जीवित सांँस हैं।

मेरा अहसास, महात्मा का ही परिचय है,

Sunitha

क्योंकि वो हर दिल में बसने वाला सहज न्याय है।

सत्य, अहिंसा और मानवता का संग,

महात्मा मेरे भीतर एक अमर रंग।

शोध सार:

महात्मा गांँधी का जीवन, केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नहीं है बल्कि यह मानवता के आदर्श मूल्यों का प्रत्यक्ष उदाहरण है। गांँधी जी ने अपने विचारों,आचरण और आंदोलनों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि मनुष्य जाति के कल्याण का मार्ग केवल सत्य, अहिंसा और प्रेम है। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा।

गांँधी जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे अस्पृश्यता, जातिवाद, धार्मिक भेदभाव, महिला शोषण और अशिक्षा के विरुद्ध कठोर संघर्ष किया। उन्होंने'हरिजन' शब्द के माध्यम से अछूतों को सम्मान दिलाया और सभी के लिए समान अधिकारों की बात की। उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं था। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका दिलाई और उन्हें शिक्षा तथा आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित किया।

गांँधी जी का विश्वास था कि मानवता की सच्ची सेवा तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं को शुद्ध करे और सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चले। उन्होंने अफ्रीका में भी रंगभेद के खिलाफ

मानवता के लिए संघर्ष किया और उनके विचारों ने मार्टिन लूथर किंग,नेल्सन मंडेला जैसे विश्व नेताओं को प्रभावित किया।

आधुनिक युग में जब दुनिया हिंसा, आतंकवाद, सामाजिक असमानता और पर्यावरण संकट का सामना कर रही है, तब गांँधी जी के विचार अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनसर्वधर्म समभाव और समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण की भावना आज भी वैश्विक मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

यह शोध गांँधी जी के जीवन, उनके विचारों, उनके मानवीय दृष्टिकोण और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांँधी जी का संदेश आज भी यही है – "मानवता को बचाने का मार्ग अहिंसा और सत्य है।"

हे महत्मा गाँधी जी....

सत्य की मशाल थी, हाथों में जिनके,

अहिंसा थी शक्ति, दिल में बसे जिनके।

मानवता का दीपक वो हर दिल में जलाते,

गांँधी थे वो, जो सबको गले लगाते।

जाति-पांति का बंधन, उन्होंने तोड़ दिया,

हरिजन को भी मानव का अधिकार दिया।

छूने से न हो कोई अपवित्र यहाँ,

ऐसा विचार, उन्होंने समाज को दिया।

नारी को दी इज़्जत, शिक्षा का उपहार,

महिला-पुरुष में ना कोई दीवार।

कहते थे गांधी - नारी है शक्ति स्वरूपा,

उसके बिना अधूरी है जीवन की भूमिका।

सत्य के राही, अहिंसा के पथिक,

मानवता के पुजारी, प्रेम के संगीत।

उनके कदम जहाँ पड़े, वहाँ शांति खिली,

उनकी मुस्कान में ही, करुणा थी बसी।

आज भी जो हिंसा की आग जलती है,

गांँधी की राह, वहाँ रोशनी करती है।

मानवता का दीप, फिर से जलायें,

गांँधी के विचार, फिर से अपनायें।

चलो बनें हम भी, सच्चे मानवता के राही,

सत्य, अहिंसा से ही, होगी सच्ची बढ़त की चाही।

Sunitha

संधर्भ सूची : (Bibliography) – व्याख्या सहित :

1. गांँधी, महात्मा। सत्य के प्रयोग (My Experiments with Truth)

यह महात्मा गांँधी की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने अपने जीवन के सत्य, संघर्ष और आत्मशोधन की यात्रा को स्वयं वर्णित किया है। इस पुस्तक से गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को प्रत्यक्ष समझा जा सकता है।

2. Louis Fischer – The Life of Mahatma Gandhi

 यह गांधी जी की विश्व स्तर पर प्रसिद्ध जीवनी है। इसमें गांधी जी के जीवन की घटनाओं और उनके आंदोलनों का विस्तार से वर्णन किया गया है। लेखक ने गांधी जी के विचारों और उनके प्रभाव को गहराई से समझाया है।

3.गांँधीय चिन्तन में मानव विकास, डॉक्टर गुरुदत्त स्वामी

1. गाबा, ओ.पी. "विवेचनात्मक राजनीति विज्ञान कोष मयूर पेपर बैक्स, नोएडा 2012 पृ. 94

2. पॉलस्टीटोन, "बेसिक ड्रामन नीड इन दा डिवलपिंग कन्ट्रीज" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1981 पृ. 17विस्तृत चर्चा हेतु देखे पटनायक प्रभात अमर्त्य सैन एण्ड थ्योरी ऑफ पब्लिक एक्सन इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली वॉल्यूमXXIII नं. 45, नवम्बर 7-13, 1998 पृ.9

3. ह्यूमन डिवलपमेन्ट रिपोर्ट 2003 पृ. 127

4. हरिजन, 26 दिसंबर 1948, पृष्ठ 68

5. आचार्य नन्द किशोर, "अहिंसा विश्वकोष" प्राकश्त भारती अकादमी जयपुर 2010 पृ. 529

6. श्रीनिवास एम.एन, "आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन", राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2007 पृ., 50

7. कोठारी रजनी, "भारत में राजनीति" ओरियंट ब्लैक स्वॉन नई दिल्ली2013 पृ. viii

8. पाण्डेयर प्रदीप कुमार, "गांधी का आर्थिक व सामाजिक चिन्तन" हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2011 पृष्ठ 1

9. वर्मा वी.पी.,. "दि पोलिटिकल फिलोसफी ऑफ महात्मा गांधी एण्ड सर्वोदय"लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा 1972 पृ. 36-37

10. धवन गोपीनाथ, " दि पोलिटिकल फिलोसफी ऑफ महात्मा गांँधी दी गांधी पीस फाउंडेशन, नई दिल्ली, 1990 पृ. 31

11. वर्मा वी.पी., "दि पोलिटिकल फिलासफी ऑफ महात्मा गांँधी एण्ड सर्वोदय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा 1972, पृष्ठ 58

12. हंट जेम्स जे. "गांँधी इन साऊथ अफ्रीका" प्रमिला एण्ड कम्पनी नई दिल्ली,1986, पृष्ठ 33

13. विस्तृत चर्चा हेतु देखे, एकिहिको किमीजिमा औरा प्रो. विद्या जैन द्वारा सम्पादित पुस्तक, "न्यू पेरेडाइम्स ऑफ पीस रिसर्च" रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 53

14. रामरतन, "गांधीजी कांसैप्ट ऑफ पोलिटिकल ओब्लिगेशन" मिनर्वा एसोसिएट्स, कलकत्ता, 1972 पृष्ठ 5

15. रामरतन, "महात्मा गांँधीज पोलिटिकल फिलासफी" सिद्धार्थ पब्लिकेशन नई दिल्ली 1990 पृष्ठ 6

16. यंग इण्डिया, 6-8-1931, अहमदाबाद, पृष्ठ 205

17. रामरतन, "महात्मा गांधीज पोलिटिकल फिलासफी" सिद्धार्थ पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ 11

18. मैनहोम, "मैन एण्ड सोसायटी, केगन पाल, लन्दन, 1946, पृष्ठ 15

19. यंग इण्डिया, 12 मई 1920 पृष्ठ 78

Sunitha

20. जे.बी. कश्पलानी "दि लेटेस्टर फंड" नवजीवन प्रकाशन,अहमदाबाद 1946, पृष्ठ 101

21. हरिजन, 22 जून 1935, पृष्ठ 148

22. गांॅधी एम.के., "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" पृष्ठ4

23. थक्कड़ उषा, "गांधीयन परसपैक्टिव ऑफ डिवलपमेंट" गांधी संग्रहालय,मुंबई 2016 पृष्ठ 1

24. सुजाता, "महात्मा का अध्यात्म', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2013, पृष्ठ 159

25. हरिजन, 11-3-1939, पृष्ठ 113-14

26. कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांॅधी, खण्ड 54 पृष्ठ 25

27. हरिजन, 28 सित. 1934, पृष्ठ 268

28. कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांॅधी, खण्ड -26, पृष्ठ 508

29. यंग इण्डिया, 19 सित. 1922, पृष्ठ 129

30. 'कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांॅधी, खण्ड 76 पृष्ठ 437 हिन्दू अप्रैल 1931. पृष्ट 5

Sunitha

परिचय विवरण

नाम : सुनीता प्रयाकर राव

उपनाम : सुनीता प्रयाकर राव वासुनि

माता का नाम : श्रीमती सत्यम्मा प्रयाकर राव

पिता का नाम : श्री रमणय्या प्रयाकर राव

महिला / पुरुष : महिला

जन्म तिथि : 01अगस्त 1980

जन्म स्थान :

गाँव -करीमनगर

मंडल :करीमनगर

जिला :करीमनगर पिनकोड-505001 राज्य :तेलंगाना,

देश : भारत

शिक्षा : यम. ए. हिंदी

पेशा : सरकारी शिक्षिका

शोध का नाम :

महत्मा गाँधी जी एवं मानवता पर शोध। डॉ. नानकदास जी महाराज एवं डॉ. अभिषेक कुमार जी के मार्गदर्शन में।

संस्था : DPKHRC

"DIVYA PRERAK KAHANIYA HUMANITY RESERCH CENTRE"
Thekma, Azamgarh, Utter Pradesh, India, Pincode-276303

बेवसाइट : www.dpkavishek.in

रुचि : साहित्य, संगीत, कला,नृत्य

अनुभव : लेखन, गायन एवं शिक्षण के रूप में।

वर्तमान में कार्य :सरकारी शिक्षिका हिन्दी प्रचार के लिए उल्लेखनीय योगदान

समय-समय पर काव्य गोष्ठी एवं सोशल मीडिया पर लाइव शो करके समूह के साथ हिन्दी लेखन पर तार्किक विश्लेषण करना ।

लेखन विधा : गीत,निबंध, बालगीत , कहानी, लेख इत्यादि ।

Sunitha

प्रकाशित कृतियाँ :

i. साहित्य विमर्श साझा संकलन
ii. भारत की आजादी का अमृत महोत्सव साझा संकलन
iii. स्वतंत्र भारत का स्वतंत्र साहित्य साझा संकलन
iv. साहित्य मंथन साझा संकलन
v. कथा सरोवर साझा संकलन
vi. साहित्य तरंग साझा संकलन
vii. हिंदी साहित्य के विविध रूपसाझा संकलन
viii. साहित्य में राष्ट्रीय चेतना साझा संकलन
ix. दलित चेतना के स्वर
x. दलित साहित्य वैचारिक चेतना साझा संकलन
xi. अयोध्या की महिमा साझा संकलन
xii. बालगीत -सीखो मीत बालगीत संग्रह
xiii. मेरी कलम साझा संकलन
xiv. उड़ान मेरी कलम साझा संकलन
xv. भारतीय स्वतंत्र सेनानी
xvi. काव्य धारा साझा संकलन
xvii. बालगीत संग्रह साझा संकलन
xviii. महक शब्दों की
xix. 21वीं आधुनिक साहित्य कवि रत्न साझा संकलन
xx. कवणामुर्तुलू साझा संकलन
xxi. पेद्दपल्ली जिला समग्र स्वरुप साझा संकलन
xxii. बालगेयलु साझा संकलन
xxiii. पद्य कथा सौरभम साझा संकलन
xxiv. देश भक्ति गेयलु साझा संकलन
xxv. विकास के दामन में वेदनाएंँ साझा संकलन
xxvi. वृक्षोरोपण एक संकल्प साझा संकलन
xxvii. पंचशत कविताएँ साझा संकलन
xxviii. भारत समाज सुधारक शास्त्र साझा संकलन
xxix. कान्हा की लीलाएँ साझा संकलन
xxx. कवन कलश साझा संकलन
xxxi. यह मेरे हम सफ़र साझा संकलन

Sunitha

xxxii. वसंतोस्तव काव्य संग्रह साझा संकलन
xxxiii. चमकते आसमान के सितारें साझा संकलन
xxxiv. शब्दों की माला काव्य संग्रह
xxxv. साहित्य मंच
xxxvi. नारी शक्ति को नमन
xxxvii. स्वर्णिम दर्पण
xxxviii. सबसे प्यारी मेरी माँ साझा काव्य संकलन
xxxix. पिता मेरे अस्तित्व साझा काव्य संकलन
xl. घर -घर में श्रीराम साझा काव्य संकलन
xli. दिल के बिखरे अल्फाज़ आँखों की दहलीज पे साझा काव्य संग्रह
xlii. महाकुंभ में अमृत स्नान का महत्व साझा संकलन
xliii. सबसे प्यारी मेरी हिंदी साझा संकलन
xliv. साहित्यिक परिचय डायरेक्टरी आसमान के चमकते सितारें साझा संकलन

संग्रह

i. बलगीत - सीखो मीत
ii. ख़्वाब बने हक़ीक़त
iii. महक शब्दों की

सम्मान व पुरस्कार :

i. स्वर्ण पदक नृत्य में
ii. दो बार मंडल उत्तर अध्यापिका
iii. उत्तम अध्यापिका लायंस क्लब से
iv. जिला उत्तम अध्यापिका पेद्दपल्ली
v. मदर एक्सीलेंस अवार्ड प्रेमा चैरिटेबल ट्रस्ट से नेशनल लेवल में
vi. मदर इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड नेशनल लेवल में
vii. सर्विस स्टार अवॉर्ड परफेक्ट एजुकेशनल सोसायटी से नेशनल लेवल
viii. इंटरनेशनल आईफै अवार्ड इंटरनेशनल हाई फाई इनस्टूशन से इंटरनेशनल
ix. लेवल में

Sunitha

x. काकतीय नंदी, सेवा पुरस्कार
xi. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर सम्मान
xii. जातीय शतादिक कवि सम्मलेन स्वर्ण कंकण
xiii. ओजस्वी नारी सम्मान
xiv. कबीर कोहिनूर सम्मान
xv. भारत भाग्य विधाता 15.स्मारिका सम्मान -2024
xvi. तेलंगाना पदंडला पांडुगा 17.साहित्य पुरस्कार -2024
xvii. स्वर्णिम मेरी माँ मेरा अभिमान सम्मान -2024
xviii. साहित्य दर्पण सम्मान -2025
xix. THE IDEAL INDIAN BOOK OF RECORD RAJASTHAN -2025
xx. साहित्य संगम सम्मान -2025
xxi. विश्व शब्द प्रतिभा अंतराष्ट्रीय सम्मान नेपाल -2025
xxii. स्वर्णिम साहित्य गौरव सनातन सम्मान -2025
xxiii. राष्ट्रकवि मुंशी प्रेमचंद सम्मान 2024

Sunitha

10. पूरा पता :

सुनीता प्रयाकर राव,

पिता का नाम : रमणयया

ग्रुप नंबर : 8-3-144/5

श्री सनातना रेसीडेंसी,

फ्लैट नंबर 302,

भगत नगर,

करीमनगर -505001.

तेलंगाना l

दूर भाषा :9553599001

ईमेल : Suni953559900@gmail.com

Sunitha